विद्या भारती प्रदीपिका

p= l Hkknin] foØeh lor 2077] ;xkCn 5122

vily l flrEcj 2020 o"k 40 vd 3&4 l;Drkd eY;% ₹35@&

भारति, जय विजय करे !

भारति, जय विजय करे !
कनक–शस्य–कमलधरे !

लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर–जल,
धोता शुचि चरण युगल,
स्तव कर बहु–अर्थ–भरे !

तरु–तृण–वन–लता वसन,
अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल–कण,
धवल धार हार गले !

मुकुट शुभ्र हिम–तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख–शतरव–मुखरे !

– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

विद्या, शिक्षा एवं ज्ञान : अर्थ, स्वरुप व संकल्पना | वेदों में जल विषयक चिंतन | अध्ययन और आनंद | राष्ट्रीय एकात्मता की ओर एक कदम

COLLECTIVE FIGHT AGAINST CORONA | DISCIPLINE

सरस्वती शिशु मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गोरखपुर में गंणतंत्र दिवस समारोह में मंचासीन प० पू० सरसंघचालक जी

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की प्रचार विभाग की बैठक लखनऊ में मंचासीन अधिकारी वृन्द

सर्वहितकारी शिक्षा समिति द्वारा प्रवासी भारतीय सम्मेलन में प्लास्टिक के बदले में कपड़े के थैले का प्रयोग हेतु आग्रह

विद्या भारती प्रदीपिका

¼fo|k Hkkjrh vf[ky Hkkjrh; f'k{kk lLFkku dh =ekfld if=dk½

अप्रैल से सितम्बर २०२०   संयुक्तांक   मूल्य ३५/-रु.   चैत्र से भाद्रपद, विक्रम संवत् -२०७७, युगाब्द - ५१२२

मार्गदर्शक
डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा
श्री डी.रामकृष्ण राव
श्री दिलीप बेतकेकर
डॉ. रमा मिश्रा
डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे

सम्पादक
डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी

सम्पादक मण्डल
श्री राजेन्द्र सिंह बघेल
डॉ. अरुण मिश्र
श्री वासुदेव प्रजापति
डॉ. पवन शर्मा

संपादन सहायक
कौशलेश कुमार उपाध्याय

आवरण सज्जा
मारिय्याप्पा मार्टिन

प्रकाशन कार्यालय
प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे.सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गांधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली -110065
फोन नं. 011-29840126,29840013
ईमेल-vbpradeepika@gmail.com

सदस्यता शुल्क
वार्षिक शुल्क- 120/-रु.
दस वर्षीय शुल्क- 800/-रु.

शुल्क राशि 'विद्या भारती प्रदीपिका' के बचत खाता क्र. 1130307980 सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC-CBIN0283940 ब्रांच नेहरू नगर, नई दिल्ली में जमा कर, पत्र द्वारा कार्यालय को सूचित करें।

मुद्रण- जेनिसिस प्रिंटर, सी 74, ओखला डस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020

vuØef.kdk

सम्पादकीय	डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी	4
विद्या, शिक्षा एवं ज्ञान : अर्थ, स्वरूप व संकल्पना	डॉ. शिव कुमार शर्मा	5
पंचदीप शिक्षण	डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे	8
वेदों में जल विषयक चिंतन	डॉ. उमेश चन्द वर्मा	10
अध्ययन और आनंद	श्री दिलीप बेतकेकर	14
नई पीढ़ी : स्वाध्याय वृत्ति	डॉ. विकास दवे	16
नागरिकता कानून के विरोध का सच	श्री श्रीनिवास	18
जम्मू-कश्मीर : बदलाव के पल	श्री आलोक गोस्वामी	21
प्रवासी भारतीयों के संबल महात्मा गांधी	डॉ. वेदमित्र शुक्ल	25
श्री कंदुकूरी वीरेशलिंगम युगीन तेलगू साहित्यः नाटक में नारी समस्याओं का चित्रण तथा नारी जागरण	डॉ. सीताराम मूर्ति	29
राष्ट्रीय एकात्मता की ओर एक कदम	श्री आशुतोष भटनागर	31
उसकी माँ (कहानी)	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'	34
मनुष्यता की केन्द्रीय धुरी हैं गुरु नानक के विचार	डॉ. हरीश अरोड़ा	40
प्रतियोगिता परीक्षा में बढ़ता तनावः समस्या व निदान	डॉ. अजय	44
Modi-Triumph & Trumph	Ms. Ankush Mahajan	48
Sustainable Consumption is key to Sustainable development	Dr. Atul jain	50
'The RSS Roadmap for 21st century' a book review by	Mr. Shashank Tiwary	53
Educational Environment	Dr. N. Raj Laxmi	55
Reorientation in Education in India	Dr. D. B. Dhengari	58
National Education Policy	Prof. Milind S. Marathe	61
Collective Fight Against Corona	Mananiya Dattatrey Hosbole	66
COVID-19, A Pandemic Contagious Disease	Dr. Rajendra Kumar Avasthi	69
Discipline	Mr. Narsingh Saharawat	71
Tibbat: A View	Mr. Rajendra Kumar Shastri	73

प्रदीपिका में प्रकाशित विचार रचनाकारों के हैं, पत्रिका की सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

कोविड -19, करोना वाइरस, करोना गत चार माह में सर्वाधिक बोले गए शब्द हैं। 'प्रिंट मीडिया' हो या 'इलेक्ट्रानिक मीडिया' सभी पर ये छाए हुए हैं। आगामी न जाने कितने समय तक ये ही चर्चा का विषय बने रहेंगे। एक अनाम, अरूप, अदृश्य वाइरस अपनी सांक्रमणिक मारक क्षमता से सहसा इतना विकराल हो उठा कि लगभग सम्पूर्ण विश्व भयभीत होकर अपने घर में जा छिपा। एक भारहीन वाइरस सब पर भारी पड़ गया। एक आकारहीन लेकिन लोगों को साकार लगने वाला, गोले पर सब तरफ से उगे हुए काँटे जैसे रेशे सरीखे इसने ऐसा विराट् रूप धारण कर लिया कि बड़े-बड़े दिग्गज चिकित्सकीय वैज्ञानिक विचिकित्साग्रस्त हो इसके सामने बौने नज़र आने लगे। चीन के वुहान नामक स्थान से जन्म लेकर सम्पूर्ण चराचर जगत् में फैल कर इसने परेशान कर दिया यानि व्याप्तं येन चराचरम्।

आश्चर्य है कि शिक्षा, अनुसंधान व चिकित्सा की दृष्टि से अत्यधिक उन्नत देशों इटली, स्पेन, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड सहित पूरा यूरोप व अमेरिका फिर ईरान, रूस, भारत आदि लगभग दो सौ देशों को इसने रौंद डाला। 'रक्तबीज' की पौराणिक अवधारणा आँखों के सामने साकार हो उठा। अबतक लाखों-लाख लोग इससे संक्रमित हुए हैं और लाखों लोग कालकवलित हो चुके हैं। भारत में भी यह संख्या क्रमशः बढ़ती जा रही है।

सभी देशों की चिकित्सकीय व्यवस्थाएँ लगभग पूरी तरह से ध्वस्त होती दिखाई दे रही हैं। मीडिया पर इस दुर्घटना के चित्र व आँकड़ों का विवरण वास्तव में हृदय विदारक हैं। इसकी कोई ज्ञात चिकित्सा नहीं हैं। कुछ अनुमानित उपायों में हाइड्रोक्सीक्लारोक्विन आदि चार पाँच दवाएँ और कतिपय प्रकार के आयुर्वेदिक काढ़े व एक-आध होम्योपैथिक दवाएँ। परन्तु मानक पद्धतियों से मान्यता प्राप्त और परीक्षित दवाएँ कोई नहीं हैं। होतीं भी कैसे, बीमारी जो नई-नवेली है। लॉक डाउन के दिनों, सप्ताहों की बढ़ती संख्या, संगरोध, मास्क, साबुन से निरंतर हस्त-प्रक्षालन या फिर सेनेटाइजर के प्रयोग से सुरक्षा का भरोसा।

एक बात और अपनी इम्युनिटी यानि रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने की बात सर्वत्र की गई। ध्यान में आता है कि भारतीय साधना पद्धति योग, जीवन दर्शन, संस्कृति, इसी प्रतिरोध शक्ति को बढ़ाने की बात ही तो करते रहे हैं। प्रतिरोध शक्ति शरीर की, मन की, बुद्धि की, आत्मा की। इसी का आश्रय लेकर तो भारत वास्तव में भारत बना रह सका। इसी के सहारे तो मूल को अक्षुण्ण रखते हुए विकल्पों की खोज, नवाचारों, नए प्रयोगों को कर सका। इसी का आधार ले भारतीय एक समाज के रूप में उठ खड़ा हुआ। व्यक्ति, संगठन, सामाजिक (संघ, सेवा भारती, विद्या भारती आदि।), धार्मिक (गुरुद्वारे, मंदिर) संस्थाएँ सक्रिय हुईं। पक्का भोजन, कच्चा राशन जिसको जैसी आवश्यकता रही, उसे सम्मान पूर्वक मिलने के लिए ऐसी व्यवस्था करने के लिए हजारों हाथ सेवा के लिए उठ खड़े हुए। कोई वंचित, कोई पीड़ित न रहे भूख से, कोई दुखी न हो, यह मंत्र लेकर अपनी सामर्थ्य से इस कार्य में लगे। समाजबोध के अन्यतम उदाहरण का दिग्दर्शन पूरे भारत में हुआ। चिकित्सालयों में डॉक्टरों के साथ स्वास्थ्य कर्मियों ने दिनोदिन घर न जाकर अहर्निश सेवामहे का मंत्र सार्थक किया। भारतीय पुलिसकर्मियों ने देश भर में जिस संवेदनशीलता से काम किया वह अनुपम है। सुव्यवस्था बनी रहे व जनसामान्य के आवश्यकता की वस्तुएँ उपलब्ध हों, इसके लिए वह सबकुछ किया गया जो सम्भव हो सकता है। सफाई कर्मचारियों ने अपने कर्तव्य का जिस निष्ठा से पालन किया, सारा देश उनकी सेवा के आगे नतमस्तक हो गया।

अपने यहाँ मास्क, सेनेटाइजर व पी.पी.ई.किट उतनी मात्रा में नहीं बनती थीं जितनी इस कोरेना काल में आवश्यक थीं, उक्त वस्तुओं की उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई। इसे एक अवसर मानकर देश की सेवा हेतु कम से कम समय में अधिक से अधिक बनाया गया। यही तो राष्ट्रबोध और मानवताबोध है। कोरेना काल में सम्भवतः इस काल खण्ड को यही नाम दिया जाए, भारत ने अपने पुरुषार्थ को पहचाना व उसे अभिव्यक्ति दी। भारतीय स्वाभिमान, भारतीय समाजबोध, देशबोध, राष्ट्रबोध का तेजोमय दर्शन हम कर रहे हैं, यह हमारा सौभाग्य ही तो है। विद्या भारती के आचार्य, छात्र (भैया-बहिन), पूर्व छात्र, अभिभावक अर्थात् पूरा विद्या भारती परिवार इस संकट काल में यथासंभव अपना योगदान कर रहा है।

x - x - x - x - x

विशेष परिस्थितियों के कारण पत्रिका का प्रकाशन व वितरण इससे पूर्व संभव नहीं था। इस बीच देश के शिक्षा व समाज-जगत् में बहुत कुछ घटित हुआ है। विश्वास है आगामी अंक समय से आपके पास पहुँचेगा।

- डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी

विद्या, शिक्षा एवं ज्ञान : अर्थ, स्वरूप व संकल्पना

शिक्षा-दर्शन

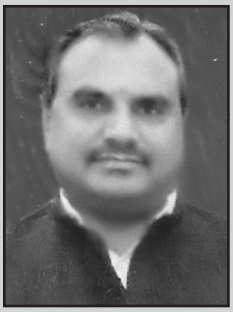

डॉ. शिवकुमार शर्मा
अखिल भारतीय मंत्री,
विद्या भारती
भारतीय दर्शन, समाज,
संस्कृति का गहन
अध्ययन व चिंतन।
अनेक शोध लेख,
विश्वविद्यालयों में
सारगर्भित वक्तव्य

संपर्क
मो. 9415024034

विद्या, शिक्षा एवं ज्ञान का अर्थ क्या है? इसकी संकल्पना क्या है? इन प्रश्नों के उत्तर हमें इन शब्दों के भाषिक संस्कार व उनकी व्युत्पत्ति की ओर ले जाती है। विद्या, शिक्षा तथा ज्ञान इन तीन शब्दों की व्युत्पत्ति की चर्चा से पूरे संदर्भ को समझना कुछ सरल हो सकता है। पाणिनि अष्टाध्यायी के धातुपाठ में शिक्षा सम्बन्धी तीन महत्त्वपूर्ण धातुओं को उद्धृत किया गया है। प्रथम धातु शिक्ष् के सन्दर्भ में 'शिक्ष् विद्योपादने' (भ्वादिगण, धातु 605 पणशीकर, 1985, पृष्ठ 731) उद्धृत है। ये धातु विद्या के आदान-प्रदान करने सम्बन्धी प्रक्रिया तथा क्रिया बोधक पद के निर्माण हेतु प्रयुक्त होती है। इस प्रकार शिक्षा शब्द का अर्थ हुआ वैसी प्रक्रिया जिसके माध्यम से किसी विद्या का आदान-प्रदान होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि ''विद्या क्या है?'' इससे सम्बन्धित धातु 'विद्' के संदर्भ में 'विद्-ज्ञाने' (अदादिगण, धातु संख्या 1064, पणशीकर, 1985, पृष्ठ 734) उद्धृत है। यह धातु ज्ञान प्रदान करने वाले विषयवस्तु व तत्सम्बन्धी क्रिया बोधक पद के निर्माण हेतु प्रयुक्त होता है। अतः विद्या का अर्थ ऐसा विषयवस्तु है जिससे ज्ञान होता है तथा जो शिक्षा के माध्यम से दी जाती है। अब पूरी चर्चा ज्ञान पर आकर टिकती है क्योंकि विद्या विषयवस्तु के अर्थ का द्योतक है, शिक्षा उस विषयवस्तु के आदान-प्रदान की प्रक्रिया है। परन्तु विद्या तथा शिक्षा का लक्ष्य, उसका परिणाम ही वास्तव में ज्ञान है; अर्थात विद्या तथा शिक्षा साधन है और ज्ञान साध्य है। अब हम 'ज्ञान' शब्द के विषय में देखें तो इससे सम्बन्धित धातु 'ज्ञा' के संदर्भ 'ज्ञा अवबोधने' (क्रियादिगण, धातु संख्या 1508, पणशीकर, 1985 पृष्ठ 737) उद्धृत है। यह धातु अवबोध के अर्थ में संज्ञार्थक पद व अवबोध सम्बन्धी क्रिया पद के निर्माण हेतु प्रयुक्त होती है। अतः ज्ञान का अर्थ हुआ वह अवबोध व अनुभूति जो किसी विद्या की शिक्षा के उपरान्त हमारे पास शेष बचती है। अर्थात ज्ञान परिणाम है, साध्य है, लक्ष्य है व सामर्थ्य है।

इसे समझने हेतु एक उदाहरण पर ध्यान देते हैं एक शिक्षक किसी छात्र को व्याकरण के नियम बताता है। छात्र व्याकरण के नियमों को याद कर लेता है। तो प्रश्न उठता है कि छात्र के पास ज्ञान है? चलिए इसी बात को आगे बढ़ाते हैं। वह छात्र उन नियमों के प्रयोग का सामर्थ्य अर्जित करता है और उसे प्रयोग में ला रहा है। अब क्या उसके पास ज्ञान है? थोड़ा और आगे बढ़े तो छात्र उन नियमों की वांछनीयता पर प्रश्न खड़ा करता है और नए नियम की रचना करता है, तो क्या अब उसके पास ज्ञान है?; आखिर में यह ज्ञान है क्या?, किस स्तर पर या स्तरों पर उस विद्यार्थी को ज्ञानी कहा जाए। ज्ञान क्या केवल सूचनाओं का संग्रहण है या उसकी समझ या उसकी प्रक्रिया व प्रयोग का बोध है या उसके बोध के विश्लेषण का बोध है या कुछ और या फिर सब है या फिर इनमें से कुछ भी नहीं। ये सारे प्रश्न तो सीखने की प्रक्रिया विषयक ज्ञान के संदर्भ में है। लेकिन क्या ज्ञान सिर्फ सीखने की प्रक्रिया का ही परिणाम है?, क्या जो सीखा नहीं गया वह ज्ञान नहीं हो सकता? यदि हम ऐसा मान लें तो फिर नवीन आविष्कारों, खोजों व शोधों के विषय में हम क्या कहेंगे? क्या ये ज्ञान नहीं?, क्योंकि ये सीखे जाने के बजाए स्वतःस्फूर्त हैं, स्वयं की अनुभूति व स्वयं

द्वारा तलाशे जाने या प्रेक्षण किए जाने के दौरान घटित एक घटना है। हम सीखने को ही लें या फिर अनुभव को, दोनों इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्षण व बुद्धि द्वारा विवेचना का ही परिणाम है। परन्तु क्या कुछ ऐसा भी है जो इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्षण व बुद्धि से विवेचना, इन दोनों से परे (अतीन्द्रिय प्रत्यक्षण) होकर भी नवीन ज्ञान को प्रकट करता है? ये सारी बातें कही ना कहीं हमें ज्ञान रूपी परिणाम के विविध स्तरों, रूपों तथा उसके अन्य कारणों की ओर ले जाती है।

उपर्युक्त चर्चा से एक बात तो स्पष्ट हुई कि किसी विद्या के ज्ञान हेतु अपनाई जानेवाली प्रक्रिया ही वस्तुतः शिक्षा है। परन्तु क्या यह शिक्षा की प्रक्रिया निरपेक्ष है? या फिर इसकी सीमा को तय करने का कार्य परिणाम के रूप में किसी विशेष प्रकार के ज्ञान हेतु विकसित विद्या (विषयवस्तु) करती है? निश्चय ही आपका उत्तर होगा कि शिक्षा निरपेक्ष नहीं है। अर्थात शिक्षा की चर्चा संदर्भ के साथ ही होनी चाहिए। अतः स्वाभाविक रूप से विभिन्न विद्याओं की शिक्षा देने के संदर्भ में चर्चा करते हुए ये प्रश्न आते हैं कि 'शिक्षा क्यों दी जाए?, किसे शिक्षा दी जाए?, शिक्षा कब दी जाए?, किस विधि से, किन साधनों की सहायता से शिक्षा दी जाए?, शिक्षा का अंतिम उद्देश्य क्या है?, इन्हीं प्रश्नों के सन्दर्भ में शिक्षा के उद्देश्य, प्रकृति व मूल्य आदि निर्मित होते हैं। शिक्षा के इस क्यों, क्या, कैसे, कब आदि प्रश्नों का उत्तर देश, काल व परिस्थिति के अनुरूप निर्धारित होती है। प्रत्येक युग, क्षेत्र व समुदाय ने भिन्न-भिन्न ढंग से इन प्रश्नों पर विचार किया, उत्तर दिया व तदनुरूप व्यवहार किया। विभिन्न दार्शनिक चिन्तन धाराओं ने इसके भिन्न-भिन्न उत्तर तलाशे। भारतीय चिंतन धारा ने इस पर विस्तार से प्रकाश डाला है। आइए इसकी पड़ताल की जाए।

प्राचीन भारत में विद्या के प्रमुख उद्देश्यों के संदर्भ में निम्नलिखित उक्तियों को देखा जा सकता है -

'अंधंतमः प्रविशन्ति ये विद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमोऽविद्यायां रताः ।।

विद्याम् चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ।।'

(ईशावास्योपनिषद्, श्लोक संख्या ९ एवं ११)

(जो केवल अविद्या की उपासना करते हैं वे गहरे अंधकार में गिरते हैं परन्तु जो केवल विद्या में ही रत रहते हैं वे उससे भी गहरे अंधकार में गिरते हैं। जो विद्या तथा अविद्या दोनों को एक साथ जानता है वह अविद्या से मृत्यु को पार करता है अर्थात् जीवन पूर्ण करता है तथा विद्या से अमृत को प्राप्त करता है अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करता है।)

तत्कर्म यन्न बन्धाय
सा विद्या या विमुक्तये।
आयासायापरं कर्मविद्यऽन्या
शिल्पनैपुणम् ।।

(श्री विष्णु पुराण, प्रथम स्कंध, अध्याय १९, श्लोक संख्या ४१)

कर्म वह है जो बंधन के लिए न हो, विद्या वह है जो मुक्ति प्रदान करे; शेष कर्म केवल अनायास है तथा शेष विद्या कौशल व शिल्प मात्र है।

'विद्या ददाति विनयम्
विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति
धनाद्धर्मः ततः सुखम्।।'

(हितोपदेशः प्रथम चरण, मित्रलाभः श्लोक संख्या ६)

विद्या विनम्रता को देती है, विनम्रता से पात्रता मिलती है, पात्रता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।

उपर्युक्त उक्तियों में पहली उक्ति उत्तर वैदिक काल की है जो शेष से प्राचीन है। यह उक्ति सीधे तौर पर मृत्युपर्यंत जीवन जीने के लिए अविद्या (सांसारिक ज्ञान-विज्ञान) को अत्यंत आवश्यक बताती है तथा उसके बिना विद्या (पारलौकिक ज्ञान) को अधूरा और अपर्याप्त घोषित करती है। इससे यह आशय निकलता है कि शिक्षा का उद्देश्य अविद्या व विद्या दोनों को प्रदान करना है, जिससे जीवन भी अच्छा हो और जीवन के बाद अमृत तत्त्व अर्थात मोक्ष भी प्राप्त हो। यह उक्ति सांसारिक व पारलौकिक दोनों ज्ञान को बराबर का महत्त्व देती है। दूसरी उक्ति पुराणों के रचनाकाल की है जो यद्यपि कौशल, शिल्प व अन्य ज्ञान की चर्चा तो करती है परन्तु उसे हेय मानते हुए यह घोषित करती है कि शिक्षा का लक्ष्य मुक्ति प्रदान करना है। तीसरी उक्ति लौकिक साहित्य की है जिसमें शिक्षा का लक्ष्य विनयशीलता, पात्रता,धन तथा धर्म इन सभी के माध्यम से सुख की प्राप्ति बताया गया है। इस उक्ति के केन्द्र में मानवीय व्यवहार का शोधन व समाज के अनुरूप समुचित व्यवहार के माध्यम से सुख की प्राप्ति होती है। इस उक्ति में सीधे तौर पर मुक्ति की चर्चा नहीं की गई है। उपर्युक्त तीनों उक्तियों को एक साथ देखें तो हितोपदेश जहाँ समाज को केन्द्र में रखकर सुख प्राप्ति को लक्ष्य बताता है वही श्रीविष्णु पुराण मुक्ति को लक्ष्य बताता है तथा ईशावाश्योपनिषद् इन दोनों उद्देश्यों का समन्वय करता है। चूँकि उपनिषद् प्रस्थानत्रयी के रूप में भारतीय परम्परा में अति महत्त्वूपूर्ण स्थान रखता है अतः इसकी उक्ति को प्राचीन भारतीय

समाज द्वारा स्वीकार किए गए शिक्षा के उद्देश्य के रूप में माना जा सकता है।

भारतीय संस्कृति और विरासत ने न केवल भारतीयों के जीवन को प्रभावित किया है बल्कि उसकी छाप वैश्विक स्तर पर तैयार होने वाले विभिन्न प्रकार के दस्तावेजों पर भी स्पष्ट रूप से दिखती है। यथा जब हम सीखने के उद्देश्यों व लक्ष्यों की चर्चा करते हैं तो यूनेस्को द्वारा सहस्राब्दी की शिक्षा के लक्ष्य को निर्धारित करने हेतु गठित डेलर्स आयोग की रिपोर्ट ''द फोर पिलर्स ऑफ एज्यूकेशन, लर्निंगः द ट्रेजर विद इन (१९९६)'' का अवलोकन करते हैं तो इसमें हमें ज्ञात होता है कि वह ''सहनाववतु । सहनौभुनक्तु। सहवीर्यंकरवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।।'' (कठोपनिषद् द्वितीय अध्याय में तृतीय वल्ली १९) के विचार पर ही आधारित है। इस रिपोर्ट में शिक्षा के निम्नलिखित चार लक्ष्यों के रूप में बताया गया है :-

1. जानने के लिए सीखना : संज्ञात्मक विकास (लर्निंग टू नो)।
2. कार्य करने के लिए सीखना : कौशलात्मक विकास (लर्निंग टू डू)।
3. साथ रहने की कला सहजीविता के लिए सीखना : भावात्मक विकास (लर्निंग टू लिव टुगेदर) आत्मिक विकास
4. होने या आत्मबोध के लिए सीखना : आत्मिक विकास (लर्निंग टू वी)

इसे भारतीय परम्परा में ज्ञानयोग, कर्मयोग, सहजयोग तथा आत्मयोग के रूप में समझा जा सकता है। उपर्युक्त सीखने का लक्ष्य आधुनिक युग में विद्या के क्षेत्र विस्तार को स्पष्ट करते हैं। विद्या का क्षेत्र व्यष्टि से समष्टि, समष्टि से सृष्टि और सृष्टि से परमेष्टि तक विस्तारित है।

ज्ञान प्राप्ति का सजीव माध्यम है आत्मीयता

जीवन में शिक्षा के साथ एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है आत्मीयता। आत्मीयता, प्यार, स्नेह व ममता। आत्मीयता के द्वारा ही आत्मविश्वास भरे शब्दों में निश्चय गुंजा देता कि 'नान्या पंथ विद्यते अयनाय।' उसके लिए वही एकमेव रास्ता है। अन्य कोई नहीं।

इसलिए आचार्य (शिक्षक) को केवल ज्ञान का निर्जीव भंडार नहीं अपितु जिज्ञासु के लिए आत्मीयता पूर्ण सजीव द्रष्टा होना चाहिए। शिष्य तब ही कुछ ग्रहण करेगा जब उसे स्नेह व ममता का अनुभव हो। वह ललचायी नजरों से खोजता है कि क्या कोई है? जो करुणाकलित होकर जिज्ञासु के प्रति द्रवित हो, उसे बुला रहा हो कि 'आओ वत्स मैं तुम्हारी पीड़ा पी जाऊँगा।' वह कह रहा हो कि 'मैं तुम्हारा ही चिंतन कर रहा था। तुम ही मेरे भगवान हो। आओ मेरी सेवा स्वीकार करो।' यह आत्मीयतापूर्ण वह स्थिति है जो गुरु में गुरुत्व प्रदान करती है। माँ, भाई, पिता, पड़ोसी, मित्र ही नहीं, पर्यावरण तक सभी में जिज्ञासु के प्रति यह तड़पन हो सकती है। एक रूप में वे सब गुरु हैं फिर उस आत्मा का भला क्या कहना कि जो 'गुरु' पद से विभूषित है। गुरु का तो रोम-रोम अपने शिष्य की हितकामना में अहर्निश लगा रहता है। इसलिए इस ''मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्'' वाली गुरुत्व की तड़पन कोई गुरु ही समझ सकता है। इतने द्रवित और करुणापूरित अन्तःकरण से जब ऐसा कल्याणकारी उद्घोष हो कि ''मेरे पास आओ'', जिज्ञासु स्वयं को उन चरणों में समर्पित कर देता है, इससे श्रद्धा का उदय होता है। ज्ञान की रश्मियाँ विकीर्ण होने लगती हैं, आन्तरिक आत्मीय अनुभूतियों का यह आदान-प्रदान ही ज्ञान प्राप्ति का यह पवित्रतम यज्ञ है।

-श्री रामशंकर अग्निहोत्री

पंचदीप शिक्षण

चिंतन

प्रो. रवीन्द्र कान्हेरे
समकुलपति
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय
मुक्त विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली
उपाध्यक्ष-विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

संपर्क
मो. 9406632151

प्रत्येक व्यक्ति में सफलता प्राप्त करने की क्षमता होती है, केवल आवश्यकता है कि वह अपनी इस क्षमता को खोजे एवं मनुष्य उस क्षमता का उपयोग कर उच्च सफलता प्राप्त करें। इसलिए आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यार्थी को इस प्रकार दिशा दर्शन व अध्ययन अध्यापन कराया जाए कि वह अपनी क्षमता को पूर्ण विकसित करे, इसे ही व्यक्तित्व विकास भी कहा जाता है।

विश्व के समस्त देशों में अध्ययन अध्यापन की अपनी प्रणालियाँ हैं। विद्या भारती की शैक्षणिक प्रणाली भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित है।

उपनिषद् में आत्म एवं अनात्म तत्वों का निरूपण किया गया है। उपनिषद् इस विद्या का अध्येता है। तथा इस विद्या के अभ्यास से अविद्या नष्ट हो जाती है। अतः उपनिषद् को ऐसा ग्रंथ माना गया है कि जिसके अध्ययन से मनुष्य का परमात्मा से साक्षात्कार होता है। उपनिषद् 108 है। तृतीय उपनिषद् में पांच कोशों का वर्णन किया गया हैः

1. अन्नमय कोश
2. प्राणमय कोश
3. मनोमय कोश
4. विज्ञानमय कोश
5. आनंदमय कोश

प्रत्येक जीव का जन्म होता है तथा क्रमशः शरीर की वृद्धि होती है व अंततः शरीर नष्ट होता है, शरीर में स्वयं आत्म ज्ञान नहीं है, जीवन व मृत्यु ही 'अन्नमय कोश' का धर्म है। शरीर को सतत भोजन व पानी की आवश्यकता है, भोजन से पौष्टिक पदार्थ प्राप्त होते हैं व शरीर स्वस्थ बना रहता है। मनुष्य के अतिरिक्त अन्य प्राणियों में कई जन्मजात क्षमताएँ होती है किंतु मानव शिशु जन्म के समय केवल रोना या चूसने की क्रिया स्वाभाविक रूप से कर पाता है।

अन्नमय कोश- शिक्षा का प्रथम सोपान है। इसके अंतर्गत उसके शरीर के अंगों की क्रियाशीलता बढ़ाना, भोजन संबंधी जानकारी प्रदान करना, व्यायाम व अन्य स्वास्थ्यवर्धक बातों की जानकारी प्रदान करना सम्मिलित है। शरीर के बाह्य व आंतरिक अंगों की जानकारी ज्ञानेंद्रिय व कर्मेंद्रिय की जानकारी, विकास व नियंत्रण का क्रमिक रूप से अध्ययन कराया जाता है। शरीर की देखभाल, स्वच्छता, स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक, अनुशासन, संवाद, समूह में कार्य करने की क्षमता विकसित करना, बालक की शरीर वृद्धि एवं विकास के साथ संयोजित किए जाते हैं।

प्राणमय कोश- प्रत्येक प्राणी के जीवित रहने हेतु श्वसन आवश्यक है। श्वास के द्वारा शरीर में वायु का प्रवेश और ऊर्जा का उत्पादन 'प्राणमय कोश' का आधार है। हृदय, धमनियाँ तथा शिराओं में रक्त-संचार द्वारा प्रत्येक अंग को ऊर्जा प्रदान करती हैं। 'प्राणमय कोश' हेतु दीर्घ श्वसन, आसन एवं प्राणायाम का अभ्यास अति आवश्यक है। ओंकार का जप, मौन एवं ध्यान का जीवन में स्थान, विभिन्न योगासनों का अभ्यास, आसन की उपयोगिता, आसन हेतु योग्य समय, वेश एवं वातावरण की जानकारी प्रदान करते हुए क्रमशः सरल

से जटिल यौगिक संकल्पना का ज्ञान प्रदान करना शिक्षा का द्वितीय सोपान है। योग विषयक ग्रंथों का परिचय, योगमय जीवन पद्धति का विकास भी 'प्राणमय कोश' की शिक्षा में समाहित है।

मनोमय कोश - मस्तिष्क शरीर के अन्य सभी अंगों पर नियंत्रण रखता है, समस्त ज्ञानेंद्रियों से संवेदना मस्तिष्क तक पहुँचती है व मस्तिष्क के निर्देशानुसार कर्मेंद्रियाँ कार्य करती हैं। मस्तिष्क की क्षमता विकसित करने हेतु ही यम, नियम व संस्कार निर्वाचित हैं। मन की चंचलता पर नियंत्रण हेतु मौन-एकाग्रता का अभ्यास, शिष्टाचार, सदगुण, सदाचार, समरसता देशभक्ति, श्रमनिष्ठा, स्वदेशी भाव, मनन चिंतन, कल्पना, प्रकृति प्रेम, अधिकार, कर्तव्य, साहित्य के प्रति लगाव, समानता, सद्भावना आदि का ज्ञान विद्यार्थियों को कराना ही 'मनोमय कोश' के अंतर्गत समाहित है।

विज्ञानमय कोश - विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता में उम्र के साथ निरंतर विकास होता है। प्रत्येक विद्यार्थी को स्वदेश, विदेश के इतिहास, अर्थशास्त्र, खगोल, गणित, पदार्थ विज्ञान की जानकारी होना आवश्यक है। भारतीय शास्त्र परंपरा, निर्माण कला, संगीत वाद्यरूप आदि की जानकारी जीवन में उपयोगी है। क्रमशः विभिन्न विषय सामग्री की जटिलता बढ़ती जाती है अतः विद्यार्थी को उसकी बौद्धिक क्षमता अनुसार ज्ञान विज्ञान का अध्ययन कराना 'विज्ञानमय कोश' के अन्तर्गत किया जाता है।

प्राप्त शिक्षा के आधार पर व्यक्ति संस्कारवान, विचारवान, कर्मठ, कार्यदक्ष व विवेकशील हो जाता है तथा उसे प्रत्येक कर्तव्य निभाने में आनन्द की अनुभूति होती है। ऐसा व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है।

यही पंचपदी शिक्षण पद्धति है जिसे विद्याभारती द्वारा अपनाया गया है।

पंचमुखी शिक्षा व पंचपदी शिक्षण पद्धति

श्रद्धेय लज्जाराम तोमर जी के द्वारा विद्वत् परिषद् में विचार कर भारतीय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पंचमुखी शिक्षा व पंचपदी शिक्षण पद्धति सरस्वती शिशु व विद्या मंदिरों में शिक्षण हेतु अपनाया गया।

पंचमुखी शिक्षा अर्थात् शारीरिक, मानसिक, व्यावसायिक, नैतिक एवं अध्यात्मिक शिक्षा प्रचलित की गई।

छात्रों को विषयों का पूर्ण बोध हो एवं ज्ञान प्राप्त हो सके, एतदर्थ समिति ने स्वतंत्र एवं मौलिक चिन्तन करके पंचपदी शिक्षण पद्धति अपनाई जिसके पाँच पद हैं -अध्यापन कार्य, कक्षाकक्ष कार्य, गृहकार्य, स्वाध्याय तथा सहपाठ्य क्रिया-कलाप।

शिक्षा संस्कार की ऋषि-मुनि पद्धति से प्रेरित अद्भुत केन्द्र का आविर्भाव

किसी उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति के प्रयास में मन लीन होने से शरीर निश्चल होता है तथा मन में संयम का भाव रहता है। इस तथ्य के आधार पर अपने श्रेष्ठ ऋषि मुनियों ने चित्त वृत्ति संयम करने और जीवन को समुन्नत करने का सफल राजमार्ग हमारे लिए प्रशस्त किए। अपने शरीर को किसी पवित्र स्थान पर निश्चित समय पर प्रतिदिन नियमित बैठ कर किसी श्रेष्ठ तत्त्व पर विचार हेतु मन को लगाने का प्रयास करते रहने से धीरे-धीरे मन शांत, संयत और एकाग्र होता है। जीवन स्तर भी ऊँचा उठता है। क्षुद्र व्यक्तिगत अहंकार का लोप हो जाता है। शिक्षा संस्कार की यह अभिनव ऋषि-मुनि प्रणीत पद्धति को स्वीकार कर उसका २० वीं सदी में संघ शाखा के माध्यम से सफलतापूर्वक उपयोग किया परम पूज्य डॉ केशव राव बलिराम हेडगेवार जी ने ।

-श्री मा.ना. उपाख्य बापूराव जी

वेदों में जल विषयक चिंतन

प्रज्ञा प्रवाह

डॉ. उमेश चन्द वर्मा
पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर
दिल्ली विश्वविद्यालय
शिक्षाविद्, विचारक
शैक्षिक, सांस्कृतिक विषयों पर
लेखन, सामाजिक कार्यकर्ता

संपर्क
मो. 9013319761

वैदिक ऋषियों का जीवन एक प्रयोगशाला था। उन्होंने जीवन के विभिन्न पक्षों एवं तत्त्वों के विषय में गहन एवं विशद चिंतन किया तथा उस चिंतन, मनन और निदिध्यासन से जो उपलब्ध हुआ, उसे जन-सामान्य के कल्याण हेतु समर्पित कर दिया। उन्होंने सृष्टि की रचना, आत्मा, जगत, प्रकृति, मानवीय जीवन सम्बन्धी अपने अनुभवों को वेदों की ऋचाओं में व्यक्त किया।

मानव शरीर के विषय में चिंतन करके उन्होंने पाया कि मानव शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, अन्तरिक्ष तथा वायु इन पंचतत्वों से निर्मित है।

पंचस्वन्तु पुरुष आविवेशतान्यन्तः पुरुषे अर्पितानि।

इसी आधार पर ऋषि इन पाँचों तत्वों को नमन करता है।

नमो स्तुतये पंच तन्मात्राये पंच महाभूतये,
पृथ्वी जल तेज वायु आकाश सूक्ष्म देवते।।

तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा है-

क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच तत्त्व रचि अधम सरीरा।।

यद्यपि प्रत्येक तत्त्व का मानव अस्तित्व के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है परन्तु मानव जीवन रक्षा के लिए वायु के पश्चात् सबसे अधिक आवश्यकता जल की पड़ती है। अतः वेदों में विशद रूप से जल की महिमा का गान किया गया है। जल को संस्कृत में 'आपः' कहा जाता है। 'आपः' की प्रार्थना करते हुए मनीषी कहते हैं-

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः।

दैवी गुणों से युक्त आपः(जल) हमारे लिए हर प्रकार से कल्याणकारी और प्रसन्नतादायक हो। वह आकांक्षाओं की पूर्ति करके आरोग्य प्रदान करे।

जहाँ भी जल का अस्तित्व है उसे मंगलकारी, कल्याणकारी, जीवनदायी कहा गया है। वह चाहे जलद हो, कूप या तड़ाग का जल हो अथवा नदियों का जल हो वास्तव में वेद में मानव जीवन को 'कृषक-जीवन' कहा गया है। इस हेतु जल के स्रोतों से हमारा रागात्मक सम्बन्ध रहा है। नदियों को हमने देवी-स्वरूपा, माता की संज्ञा से अभिहित किया है। ऋग्वेद में 'सरस्वती' नदी की महिमा इस प्रकार गाई गई है -

''अम्बतिमे नदीतमे देवितमे सरस्वति।
अप्रशस्ताइव स्मस्पिर्शतिंबनस्कृधि ।।''

हे सर्वोत्तम माते सरस्वती! सर्वोत्तम नदी के समान है। जिन नदियों का प्रवाह प्रकट है, वे गंगा-यमुना जैसी श्रेष्ठ नदियाँ हैं, परन्तु तेरा प्रवाह गुप्त है, इसलिए तू श्रेष्ठ है। तू सभी देवाताओं में श्रेष्ठ, आलोक प्रदाता है। हमारा जीवन अप्रशस्त जैसा बन गया है। हे माता! तू उसे प्रशस्त कर। हम उपेक्षित हैं, निन्दित हैं। हे माता! तू हमारा पथ प्रशस्त कर।

अथर्व वेद में जल स्रोतों से उचित मात्रा में जल का उपयोग करने से चारों पुरुषार्थों को प्राप्त करने की बात कही गई है।

''शं त आपो हैमवतीः शमुते सनव्स्याः। शं ते सनष्यिदा आपः शमु ते सन्तु वर्ष्याः।।''

मनुष्य को चाहिए कि वर्षा, कुओं, नदी और सागर के जल को, अपने खान-पान, खेती और शिल्प-कला आदि के लिए उपयोग करे एवं अपने जीवन को सम्पूर्ण बनाए और चारों पुरुषार्थों को प्राप्त करे। यही नहीं बृहदारण्यकोपनिषद् में तो जल को सृजन का हेतु स्वीकार किया गया है। कहा गया है कि पंचभूतों का रस पृथ्वी है, पृथ्वी का रस जल है, जल का रस औषधियाँ हैं, औषधियों का रस पुष्प हैं। पुष्पों का रस फल है, फल का रस पुरुष है तथा पुरुष का रस वीर्य है जो सृजन का हेतु है।

जल में अखण्ड प्रवाह के साथ दया, करुणा, उदारता, परोपकार और शीतलता ये सभी गुण विद्यमान रहते हैं। मनुष्य कितना भी दुखी क्यों न हो, ठंढे जल से स्नान करते ही वह शांति को प्राप्त करता है।

भारतीय संस्कृति पूजा प्रधान है। यहाँ किसी भी कार्य का प्रारम्भ पूजा से होता है और प्रत्येक कार्य का विसर्जन भी पूजा से ही होता है। पूजा हेतु सर्वप्रथम पवित्रीकरण की आवश्यकता होती है और पवित्रीकरण के लिए जल की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार पूजा का विसर्जन शान्तिपाठ से होता है शान्तिपाठ में जब मंत्रों का उच्चारण किया जाता है तो पवित्र जल से ही अभिसिंचन किया जाता है। जल के बिना किसी भी तरह की पूजा सम्भव नहीं है। वेदों में जल के महत्व को सर्वात्मना स्वीकार किया गया है। जल की गरिमा व महिमा का बखान श्रुतियों में सर्वत्र किया गया है।

वैदिक वाङ्मय में जल के अनेक पर्यायवाची शब्द उपलब्ध हैं। भाषा का यह गुण है कि वह एक ही भाव व्यक्त करने वाले समानार्थी शब्दों के अनुचित प्रयोग का बोझ वहन नहीं करती। अतः जिस शब्द की जितनी अधिक पर्यायवाची अर्थ छायाएँ होंगी उस भाषा-भाषी की दृष्टि में उस शब्द प्रतीकों (बिम्बों) का उतना ही अधिक महत्त्व होगा। क्योंकि ये शब्द प्रतीक वस्तु/व्यक्ति के गुणों के आधार पर ही अस्तित्व में आते हैं। विष्णुसहस्रनाम इसका एक सुन्दर उदाहरण है। भारतीय हिन्दू संस्कृति में गुणों के आधार पर जल को भी अनेक अभिधाएँ प्रदान की गई हैं :-

◇◇◇

भारतीय संस्कृति पूजा प्रधान है। यहाँ किसी भी कार्य का प्रारम्भ पूजा से होता है और प्रत्येक कार्य का विसर्जन भी पूजा से ही होता है। पूजा हेतु सर्वप्रथम पवित्रीकरण की आवश्यकता होती है और पवित्रीकरण के लिए जल की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार पूजा का विसर्जन शान्तिपाठ से होता है और शान्तिपाठ में जब मंत्रों का उच्चारण किया जाता है तो पवित्र जल से ही अभिसिंचन किया जाता है।

◇

पानीयं सलिलं नीरं कीलालं जलाम्बुज।
आपो वारिवारि कं तोयं पयः
पाथोस्तथोदकम्।।

जीवनं वनमम्भोऽर्णवोमृतम् घनरसौ ऽपिच। पानीयं, सलिलं, नीरं, कीलाल, जल, अम्बु, आप, वारि, कं, तोय, उदक, जीवन, वन, अम्भः अर्णः।

निघंटुकोश में जल के अर्णः, क्षोदः, नभः, अंभः, सलिलम्, आपः, अमृतम्, इन्दुः, अंब, तोयम् वारि इदम् आदि १०१ नाम गिनाए गए हैं। अमरकोश में पानी के २७ नाम आए हैं, जिनमें से १७ नाम निघंटु में वर्णित हैं। अर्थववेद के 'आपोदेवता' वाले सूक्त में भी जल के कुछ नामों के निर्वचन उपलब्ध हैं। जल के अनेक अभिधानों के सम्बन्ध में यह भी अभिमत है कि वैदिक काल में जल का नामकरण उसके गुणों के आधार पर किया गया है। जल विषयक गम्भीर चिंतन मनन का ही परिणाम है कि वैदिक ऋषियों ने जल के गुणों का भी इतना विशद वर्णन किया है जिससे मानव जीवन के लिए इसकी महत्ता, अनिवार्यता स्वतः सिद्ध हो जाती है। जल के गुणों का उल्लेख करते हुए ऋषि ने कहा है कि

पानीयं श्रमनाशनं क्लमहरं
मूर्छापिपासपहम् ।
तंद्रा छर्दिविबन्धहृदवलकरं
निद्राहरं तर्पणम्।।

हृदयं गुप्तरसं अजीर्णशमकं
नित्यंहितं शीतलम्।
लध्वच्छं रसकारणं
निगदितं पीयूषवज्जीवनम् ।।

जल श्रम को दूर करने वाला, क्लान्तिनाशक, मूर्छा, प्यास को नष्ट करने वाला,तन्द्रा, वमन और विवन्ध को हटाने वाला, बलकारक, निद्रा को दूर करने वाला, तृप्तिदायक, हृदय के लिए हितकर, अव्यक्त रस वाला, अजीर्ण का शमन करने वाला, सदा हितकारक, शीतल, लघु, स्वच्छ, सम्पूर्ण मधुरादि रसों का कारण एवं अमृत के समान है।

वैशेषिक दर्शन के अनुसार जल तत्त्व में रूप, रस और स्पर्श इन तीनों गुणों का समावेश है। जल स्निग्ध होने के साथ-साथ प्रवाहित भी होता है। प्रगट स्वरूप होने के कारण जल रूपवान है। जल को मुख में डालने पर शीतल, गर्म, खारा एवं मधुर आदि का रसास्वादन होने से यह रस है। जल का स्पर्श करने पर उसके शीत और उष्ण होने का पता चलता है। इसलिए जल स्पर्श के गुण से सम्पन्न है।

गरुड़ पुराण के अनुसार 'जल' में निम्नलिखित गुण/दोष पाए जाते हैं। वर्षा का जल तीनों दोषों (वात, पित्त व कफ) का नाशक, लघु, स्वादिष्ट और विषहारक होता है।

नदी का जल वातवर्धक, रूक्ष, सरस, मधुर और लघु होता है। अन्य स्थानों पर उपलब्ध जल जैसे वापी, झरना, कुँआ, उद्भिज आदि के जल के विशिष्ट गुणों का उल्लेख किया गया है। इसी प्रकार गरम जल ज्वर, मेदा-दोष तथा वात और कफ इन तीनों दोषों का विनाश करता है। किन्तु बासी हो जाने पर वहीं जल दोषयुक्त हो जाता है। उक्त विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि वैदिक ऋषि जल के औषधीय गुणों से परिचित थे। जल का उपयोग चिकित्सा के लिए भी किया जाता रहा है। जैसा कि ''यजुर्वेद'' में कहा गया है -

युष्मा ऽइन्द्रो ऽवृणीत वृतर्तूर्ये
यूमंनिदर्मवृणीध्वं।
वृतर्तूर्ये परोक्षतिसथ। अग्नये
त्वाजुष्टंपरोक्षामि।
दैवयाय कर्मेण शुन्धध्वं देवयज्यायै
यद्वो ऽशुद्धाः।
पराजघ्नुर्दिं वसतच्छु नधामि।।

मनुष्य को चाहिए कि जो सब सुखों को देने वाला, प्राणों को धारण करने वाला तथा माता के समान, पालन-पोषण करने वाला जो जल है, उससे शुचिता प्राप्त कर जल का शोधन करने के पश्चात् ही उसका उपयोग करना चाहिए। जिससे देह को सुन्दर वर्ण, रोग मुक्त देह प्राप्त कर अनवरत उपक्रम सहित धार्मिक अनुष्ठान करते हुए, अपने पुरुषार्थ से आनन्द की प्राप्ति कर सके।

अथर्ववेद में जल की महता के सम्बन्ध में अनेक मंत्रों में कहा गया है कि जल निश्चय ही भेषज रूप है। जल रोगों को दूर करने वाला है, जल सब प्राणियों का भेषजभूत है। अतः जल से रोगों को भगाया जाए।

◇◇◇

मनुष्य को चाहिए कि जो सब सुखों को देने वाला, प्राणों को धारण करने वाला तथा माता के समान, पालन-पोषण करने वाला जो जल है, उससे शुचिता प्राप्त कर जल, जल का शोधन करने के पश्चात् ही, उसका उपयोग करना चाहिए। जिससे देह को सुन्दर वर्ण, रोग मुक्त देह प्राप्त कर अनवरत उपक्रम सहित धार्मिक अनुष्ठान करते हुए, अपने पुरुषार्थ से आनन्द की प्राप्ति कर सके।

◇

जल को वैद्यों का वैद्य कहा गया है। जिस प्रकार माता शिशु का और बहनें अपने भाई का हित करती हैं, उसी प्रकार ये जल सभी प्राणियों का हितैषी है। जहाँ ऋग्वेद का ऋषि जल को माताओं से भी सर्वोत्तम माता कहता है वही यजुर्वेद का ऋषि मातृ रूपी जल की शुद्धि की कामना करता है। आपः शान्तिः कह कर वेद में इन जलों को शुद्ध करने की प्रेरणा दी गई है। ये हमें तभी शान्ति प्रदान करेंगे, जब हम इन्हें शुद्ध रखेंगे। जल को प्रदूषित न करने का यजुर्वेद में स्पष्ट निर्देश दिया गया है। वैदिक ऋषि ने जल को 'शिवतम रस' की संज्ञा दी थी। ऋग्वेद का ऋषि प्रार्थना करता है कि

आपः प्रणीत भेषजं वरुथं तन्वेमं।
ज्योकृचसूर्यं दृशे ।। ३।।

दीर्घकाल तक मैं सूर्य को देखूँ। अर्थात् जीवन प्राप्त करूँ। हे आपः! शरीर को आरोग्यवर्धक दिव्य औषधियाँ प्रदान करो।

जल-चिकित्सा पद्धति : जल से चिकित्सा की पद्धति भी बहुत ही प्रभावी पद्धति है। इसे 'उषःपान' पद्धति भी कहा जाता है। भारत में ऊषापान के नाम से उपचार विद्वानों से लेकर ग्रामीणों तक में प्रचलित रहा है। स्वस्थ शरीर वालों के लिए इसका नियमित प्रयोग आरोग्यवर्धक (रोगों की प्रतिरोधात्मक क्षमता बढ़ाने वाला) तथा स्फूर्तिदायक सिद्ध होता है। इस प्रयोग की नियमितता से प्रयोगकर्ताओं को तमाम रोगों से छुटकारा मिलता देखा गया है। जल के उक्त सभी भौतकीय तथा भेषजीय गुण उस स्थिति में रह सकते हैं जब तक कि उसकी शुद्धता तथा पवित्रता अक्षुण्ण रहती है। अन्यथा जिस प्रकार वर्तमान में औद्योगिक विकास के नाम पर जल को निर्ममता से प्रदूषित किया जा रहा है, उस स्थिति में जल अमृत न होकर विष का प्रभाव ही देगा। अतः जलादि पंचतत्वों का शुद्ध, स्वच्छ एवं संतुलित रहना मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। पाश्चात्य सभ्यता को यह तथ्य बीसवीं शती के उतरार्द्ध में समझ

में आया है। जबकि भारतीय मनीषा ने इसे वैदिक काल में ही अनुभूत कर लिया था। इसलिए सभी तत्वों से शांत रहने की प्रार्थना की गई है।

ओइम् द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षः शान्तिः पृथ्वी शान्तिः आपः शान्तिः औषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिः, विश्वेदेवाः शान्तिः, शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्व शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिः रेधि। ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

अतः स्पष्ट है कि यजुर्वेद का ऋषि सर्वत्र शान्ति की प्रार्थना करते हुए मानव जीवन तथा प्राकृतिक जीवन में अनुस्यूत एकता का दर्शन बहुत पहले से कर चुका था।

शुद्ध जल एवं स्वच्छ परिवेश किसी भी सामाजिक वातावरण के पल्लवन एवं विकसन की अपरिहार्य आवश्यकता है। अथर्ववेद में पृथ्वी पर शुद्ध पेय जल के सर्वदा उपलब्ध रहने की ईश्वर से कामना की गयी है -

शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु यो नः सेदुप्रिये तं नि दध्मः पवित्रेण पृथिविमोत् पुनामि।।

अन्तोगत्वा हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि वेद केवल धर्म एवं आस्था का विषय न होकर विज्ञान भी है। इसमें पृथ्वी एवं अन्तरिक्ष के कण-कण की पूजा जहाँ एक ओर परमात्मा की सर्वव्यापकता के दृष्टांत को प्रतिपादित करती है, वही दूसरी ओर शुद्ध जल, स्वच्छ वायु की कल्पना को भी मूर्त रूप देती है। ईशावस्योपनिषद् के निम्न श्लोक द्वारा हमें समझना होगा कि इस जगत् में व्याप्त समस्त वस्तुएँ ईश्वर के द्वारा ही प्रदत हैं। इस धरा पर जीवित रहने के लिए इनमें संतुलन होना आवश्यक है। अतः हम उतना ही उपयोग करें जितना हमें आवश्यकता है।

ईशावास्यमिदं सर्वयत्किंच जगत्यां जगत्।
तेनत्यक्तेन भूंजीथा मा गृधः
कस्य स्विद्धनम्।।

यद्यपि अनवरत स्रोत के रूप में जल प्राप्त होता रहता है परन्तु प्राकृतिक असंतुलन, वैश्विक उष्मीकरण तथा अन्य मानव निर्मित कारणों से ध्रुवीय बर्फ तथा पहाड़ों पर जमी बर्फ का स्खलन होना यह संकेत दे रहा है कि जल स्रोतों का अनुचित शोषण हो रहा है। जिसके कारण विश्व वर्तमान में गम्भीर रूप से जल की समस्या से सामना कर रहा है। मानव को जल की प्रत्येक बूंद प्राणदायी अमृत है, उस अमृत की सुरक्षा करना मानव का प्रथम कर्तव्य है।

गंगा नदी : विदेशियों की दृष्टि में

सिकन्दर के समय तक गंगा की प्रसिद्धि काफी बढ़ गई थी। इसी कारण गंगा तक पहुँचना सिकन्दर का लक्ष्य था। इसका उल्लेख सिकन्दर की जीवनी के लेखकों की रचनाओं में मिलता है। सिकन्दर के भाषणों के संग्रहों में भी यह संदर्भ मिलता है। सिकन्दर ने अपने थके हुए सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा था-''यदि कोई मेरा इस युद्ध का अंत सुनना चाहता है, तो उसे यह जानना चाहिए कि इसका अन्त तभी है जब कि गंगा तक पहुँचे''।

सिकन्दर के उपरांत पश्चिम की रुचि भारत में और भी बढ़ी। सेल्यूकस का राजदूत मेगेस्थनीज कई वर्षों तक चन्द्रगुप्त मौर्य की राजधानी में रहा। मेगेस्थनीज द्वारा लिए गए तथ्य आज भी प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण हैं। मेगेस्थनीज ने उल्लेख किया है कि गंगा पृथ्वी की महानतम नदी है। मेगेस्थनीज एवं समकालीन मध्ययुगीन लेखन में गंगा को स्वर्ग की नदी के रूप में सम्मानपूर्ण स्थान दिया गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रथम शताब्दी तक गंगा एशिया, अफ्रीका, यूरोप महाद्वीप की सर्वाधिक ज्ञात नदी है। तीसरी शताब्दी में ईसाई लेखकों ने गंगा को स्वर्ग की नदी के रूप लिखना प्रारम्भ किया। नवी एवं दसवीं शताब्दी आते-आते यह विचार सार्वभौम रूप में प्रयुक्त होने लगा। मध्ययुगीन विचारकों द्वारा इस प्रवृत्ति को अपनाया गया। मध्ययुगीन भूगोलविदों ने भारत और गंगा के प्रति आस्था व्यक्त की है। भारत में बांग्ला भाषा के लेखन में गंगा को एक पवित्र एवं धार्मिक मंदिर के रूप में चित्रित किया गया है।

- डॉ. स्टेवेन जी दरिअन (अमेरिकी भाषा वैज्ञानिक)

अध्ययन और आनंद

दृष्टि

श्री दिलीप बसंत बेतकेकर
अंग्रेजी, इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र से एम.ए.
शिक्षा शास्त्री, शैक्षिक चिंतक
अनेक सेमिनारों व अधिवेशनों में भाषण व पेपर प्रस्तुति
500 से अधिक लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित,
उपाध्यक्ष, विद्या भारती अखिल भारती शिक्षा संस्थान

संपर्क
मो. 9425911210

अध्ययन और आनंद एक साथ!

'अध्ययन' और 'आनंद' इन दोनों की आपस में क्या दोस्ती हो सकती है?, अध्ययन क्या कोई आनन्दपूर्वक कर सकता है?, अध्ययन से क्या आनन्द की प्राप्ति हो सकती है? ये सब प्रश्न मन में उत्पन्न होते ही होंगे। ऐसे प्रश्न, शंकाएँ मन में आती रहेंगी, अध्ययन करना चाहिए, यह सही है। अध्ययन के सिवा कोई विकल्प नहीं है, यह भी सच है। परन्तु यह मजबूरी है, आनन्द नहीं। अध्ययन न करने पर परीक्षा में और फिर जीवन भर पीछे ही रह जायेंगे, नौकरी भी नहीं मिलेगी और ऐसा न हो, इसलिए अध्ययन करना है। अतः जबरन खींच-तान कर अध्ययन और आनन्द को सहयोगी बनाना बेमतलब ही है। ये और ऐसे ही अनेक विचार मन में आना स्वाभाविक है। फिर अब हम क्या करें? अध्ययन की ओर हम दो प्रकार के नजरिए से देख सकते हैं :-

(1) आलस, चिड़चिड़ाहट, झंझट, अनावश्यक।

(2) आनंद, अवसर, खुशी, आवश्यक।

अब बताएँ कैसे स्वीकारें, रोते हुए अथवा गाते हुए? अर्थात् अध्ययन कैसे, किस प्रकार अध्ययन करें। चिड़चिडेपन से अथवा खुशी से, आनंद से अथवा हँसते-खेलते। अध्ययन से आनंद प्राप्ति और आनन्द से अच्छा अध्ययन होता है। अर्थात् जब हम आनन्द, प्रसन्नता से अध्ययन करते हैं तो वह अधिक प्रभावी रहता है, अधिक समय तक हम अध्ययनरत रह सकते हैं। अतः अध्ययन और आनंद यह एक दूसरे के पूरक हैं, परस्परावलम्बी है। अर्थात् अध्ययन से अधिक आनन्द प्राप्ति और आनन्द से अधिक ज्ञान प्राप्ति एक ऐसा सुन्दर चक्र है।

'The reward of good work is more work.', ऐसा कहा जाता है कि अभ्यास को यदि एक कार्य की दृष्टि से देखें तो आनन्द दूर हटता है और आनन्द न होने पर अभ्यास रूठ जाता है। मार्सियर के अनुसार What we learn through pleasure, we never forge.

थामस ओडिसन के मूल्यवान शब्द कहते हैं – 'I never did a days work in my lifetime. It was all fun.' ओडिसन ने कभी भी कोई कार्य माथे पर शिकन लेकर नहीं किया। सदैव प्रसन्नता पूर्वक किया। उनके सुयश का राज यही है। चीनी तत्त्वज्ञ कन्फ्यूसियश भी यही कहते हैं कि Choose a job you love, and you will never have to work a day in your life. मराठी भाषा में एक शब्द है, 'ढोर मेहनत'। अध्ययन में केवल ढोर मेहनत करना अर्थात् बिना सोचे केवल परिश्रम करना, यह नहीं चाहिए। जैसे एक तेल निकालने की घानी में (जुटे) लगे हुए बैल जैसा काम नहीं चाहिए। अध्ययन के साथ प्रेम और आनन्द मिलाया जाए तो अध्ययन आसान और सहज हो जाता है।

अध्ययन का मतलब एक कठिन कार्य, झंझट ऐसी दृष्टि न रखते हुए अध्ययन के साथ आनंद, मजा, ऐसी दृष्टि रखें तो सभी कार्य सुसम्पन्न होंगे। दृष्टि बदलते ही अध्ययन की सृष्टि भी अपने आप बदलती है। कुछ अन्य करना आवश्यक नहीं है।

अध्ययन, अभ्यास केवल परीक्षा के लिए नहीं, परीक्षाकेन्द्रित किया जाए तो स्वाभावतः

◇◇◇

हम उत्सव-पर्व में आनन्द का अनुभव करते हैं, नए वस्त्र धारण करते हैं नए जूते, मोबाईल, साईकिल, आदि नई वस्तुएँ क्रय कर आनन्द का अनुभव करते हैं। किन्तु ध्यान रहे कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी देखने पर ये आनन्द तात्कालिक होते, अल्पकालिक होते हैं। अध्ययन और भक्ति का आनन्द अधिक समय टिकने वाला होता है।

◇

आनन्द प्रवाह क्षीण होगा और इस कारण गुणवत्ता विलोपित होगी।

कबीरदास द्वारा बुने हुए वस्त्र तुरंत बिक जाते थे, कारण कि उनकी गुणवत्ता अच्छी होती थी। अन्य बुनकरों को आश्चर्य होता और कुछ जलन भी। किसी ने इस सम्बन्ध में पूछा भी तो कबीर का उत्तर था ''मैं ये वस्त्र बेचने के लिए नहीं बुनता, मैं तो बुनता हूँ अपने भगवान के लिए।'' कबीरदास की यही दृष्टि उनकी कृति को श्रेष्ठ बनाती है। भक्ति से कार्य श्रेष्ठ बनता है। विद्यार्थी, पालक, शिक्षक अथवा अन्य किसी ने भी ऐसी दृष्टि को स्वीकारा तो अपनाये गये कार्य में आनंद, प्रसन्नता, समाधान, संतुष्टि प्राप्त होकर गुणवत्ता प्राप्त होगी। अध्ययन में एक बार आनंद आने लगे तो इस अनुभव के लिए और अधिक अध्ययन करने की इच्छा जाग्रत होगी। महात्मा गाँधी कहते थे कि Live is if you were to die tomorrow. Learn as if you were to live forever.

वास्तव में देखा जाए तो सृष्टि की प्रत्येक वस्तु ही आनन्द का स्रोत है। एक तत्त्वज्ञानी के अनुसार There is not a blade of glass, there is no colour of this world that is not intended to make us rejoice. जब प्रत्येक से आनन्दप्राप्ति हो सकती है तो फिर अध्ययन से क्यों नहीं।

मुझे अभ्यास-अध्ययन पसंद नहीं। अध्ययन में आलस्य आता है। अध्ययन कठिन लगता है, ऐसा जो लोग अनुभव करते हैं तब आनन्द हमारे आसपास नहीं आता। ऐसी सोच मन से दूर करनी चाहिए।

'अध्ययन अर्थात् आनन्द' मुझे अध्ययन करना पसंद है, ऐसा मन में बारबार सोचने पर चमत्कार देखिए ।

सीमेन बेल ने अध्ययन में आनन्द की तुलना दौड़ते समय उठने वाली साँस से की है। साँस के बगैर दौड़ना असम्भव है। उसी प्रकार आनंद के बिना पढ़ना असम्भव है।

आनन्द संसर्गजन्य होता है। इसलिए हमारे आसपास का मित्रमंडल कैसा है, यह परखना आवश्यक है। जिन्हें अध्ययन पसंद है, जो उत्साहपूर्वक अभ्यास करते हैं ऐसे लोगों से मित्रता करनी चाहिए।

हम उत्सव-पर्व में आनन्द का अनुभव करते हैं, नए वस्त्र धारण करते हैं, नए जूते, मोबाईल, साईकिल, आदि नई वस्तुएँ क्रय कर आनन्द का अनुभव करते हैं किन्तु ध्यान रहे कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी देखने पर ये आनन्द तात्कालिक होते, अल्पकालिक होते हैं। अध्ययन और भक्ति का आनन्द अधिक समय टिकने वाला होता है।

इसलिए कहा गया है कि प्रसन्नता से, आनन्द से अध्ययन करें, अध्ययन में आनन्द लें।

परीक्षा में सफलता मिले या न मिले, पर अपने स्वास्थ्य को न बिगाड़ना। मैं चाहता हूँ कि तुम हृष्टपुष्ट, तेजस्वी, चुस्त और मजबूत बनो। यौवनावस्था का प्रथम प्रकाश तुम्हारे लिए उदित हो रहा है। इसी अवस्था में जीवन और शक्ति का प्रवाह होता है। इसलिए इस अवस्था को अधिक बिगड़ने मत देना। शरीर और मस्तिष्क की समान वृद्धि होनी चाहिए। तुम स्वयं डॉक्टर हो और मुझ जैसे अशास्त्र को तुम्हें अच्छा स्वास्थ्य रखने के लिए कहना कुछ असंगत-सा है। पर भैया, यौवन अन्धा होता है। हम प्रायः यौवन में प्रवाहित होने वाली जीवन-शक्ति तथा बढ़ने वाले शरीर की शक्ति को संग्रह करना भूल जाते हैं। हमें इस प्रकार से काम करना चाहिए कि वृद्धावस्था के शीतकाल में हम अपनी संग्रहीत शक्ति को उपयोग में ला सकें।

वीर सावरकर(पोर्ट ब्लेयर की जेल कोठरी से अनुज डॉ. नारायण सावरकर 'बाल' को 15 फरवरी 1914 को लिखा पत्र।)

नई पीढ़ी : स्वाध्याय वृत्ति

स्वाध्याय

डॉ. विकास दवे
सम्पादक 'देवपुत्र'
प्रख्यात बाल साहित्यकार
राष्ट्रवादी विचारक व चिंतक
भारतीय संस्कृति पर अनेक
मंचों से व्याख्यान
निदेशक :
साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश

संपर्क
मो. 9425912336

विगत दिनों अन्तरताने (इन्टरनेट) पर संयुक्त राष्ट्र संघ के एक वैश्विक सर्वेक्षण के निष्कर्ष को पढ़ रहा था । वह सर्वेक्षण बच्चों की पढ़ने और लिखने की आदतों को लेकर किया गया था। निष्कर्ष के शब्दों ने मुझे चौंका दिया ''आज विश्व के समक्ष आतंकवाद से बड़ी एक चुनौती आ खड़ी हो गई है। हमारी नई पीढ़ी अब केवल ''लिसनर और व्यूअर'' बनकर रह गई है। वह 'रीडर' ही नहीं बची तो राईटर होने का तो प्रश्न ही नहीं होता। यदि हमारी पीढ़ी समय रहते नहीं चेती तो परिणाम बहुत भयावह होंगे।"

हम समझ सकते हैं कि इस संकट को विश्व यदि आतंकवाद से बड़ा संकट मान रहा है तो निश्चय ही यह अत्यंत संवेदनशील विषय भी है और सार्वभौम भी। इस विषय पर एक अभिभावक के रूप में हम विचार करें तो सर्वप्रथम हमें अध्ययन करना होगा, इस रोग के कारण का। सबसे बड़ी विभीषिका तो यह है कि पुरुष क्या पढ़ेगा वह स्वयं तय करता है। मातृशक्ति क्या पढ़ेगी वह स्वयं तय करती हैं किन्तु बच्चा क्या पढ़ेगा यह वह स्वयं तय नहीं कर सकता। हम बड़े उस पर अपनी पसंद को थोपते हैं। मुझे प्रवास का एक दृश्य याद आ रहा है। ट्रेन स्टेशन पर रुकी और पिताजी दौड़कर बुक स्टॉल से 'चंपक' और 'लोटपोट' खरीद कर ले आए। उन्हें लगा बेटा प्रसन्न हो जाएगा किन्तु वह मुँह चिढ़ाकर बोला ''मैं क्या इतना छोटा हूँ जो 'चंपक' और 'लोटपोट' पढ़ूँगा? प्रश्न यह कि हम बाल साहित्य बाल-गोपाल हेतु आयु के अनुसार खरीद कर देते हैं क्या? यह विकल्प पत्रिकाओं और बाल साहित्य दोनों पर लागू होता है।

दूसरी बात पाठक को स्वयं अपना साहित्य क्रय करने का अधिकार दें। अर्थात् पुस्तक क्रय हेतु राशि उनके हाथों में दें। इन दिनों हम देखते हैं कि विज्ञापन में बच्चे दिखाई देने लगे हैं। कारण केवल इतना है कि प्रत्येक उत्पादक चाहता है कि घर के बच्चे हमारा उत्पाद क्रय करने का आग्रह करें। जब हम बड़े उनसे फ्रिज, कूलर, मिक्सर पर उनकी राय का महत्त्व समझते हैं तो साहित्य पर क्यों नहीं?

स्वाध्याय वृत्ति कम होने के बड़े कारणों में हम टेलीविजन, कम्प्यूटर और मोबाईल को मानते हैं। क्या हम बच्चों से चर्चाकर उन्हें स्नेह पूर्वक यह समझा सकते हैं कि जितना समय इन साधनों के साथ गुजारते हो उसका एक चौथाई समय आवश्यक रूप से पढ़ने में भी गुजारें? यह ध्यान रहे कि पढ़ने की परिभाषा में पाठ्यपुस्तकें ही नहीं अपितु अन्य साहित्य भी आएगा। अपने घर में हम बच्चों को उनका स्वयं का पुस्तक संग्रह तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करें।

कैसा हो यह घरेलू बाल पुस्तकालय?

इसमें बच्चों के लिए छोटी-छोटी पुस्तकें हों। पुस्तक की भाषा सरल हो। पुस्तकों के विषय सरल हों। सामाजिक या पारिवारिक समस्याएँ दर्शाने वाला साहित्य न रखें, यदि हो तो समाधान कारक भी हो। केवल आध्यात्मिक पुस्तकों का बाहुल्य न हो अपितु उसमें विज्ञान, सिनेमा और कम्प्यूटर की दुनिया के रोचक साहित्य को भी प्रवेश दें। पत्रिकाओं को माह के क्रम से जमाकर संग्रह करने एवं उसमें से उपयोगी सामग्री निकालने का अभ्यास बच्चों को करवाएँ। पुस्तकों पर क्रमांक डालकर एक

रजिस्टर में उनका अंकन करने को कहें। किसी को पढ़ने के लिए पुस्तक बगैर अंकित किए न देने का अभ्यास भी बनाएँ।

मेरे एक मित्र ने बहुत गम्भीर होकर मुझसे शिकायत की उनकी बेटी पुस्तकें बिलकुल नहीं पढ़ती। मैंने पूछा-''आप पढ़ते हैं क्या?'' तो वे अचकचा कर बोले ''मैं सी.ए.हूँ दिनभर तो किताबों में ही डूबा रहता हूँ। और कितना पढ़ूँ?''। मैंने कहा-''बेटी भी तो दिनभर किताबों में डूबी रहती है पर आप कोर्स की पढ़ाई को पढ़ना कहाँ मानते हैं? ठीक वैसे ही आप अन्य साहित्य को पढ़ने का थोड़ा सा समय निकालिए, बच्चे भी पढ़ने लगेंगे।''

कुल मिलाकर हम स्वाध्याय करें। बच्चों को उनकी रुचि की सामग्री चिह्नित कर पढ़ने के लिए दें। बाद में उस पर चर्चा करें। बच्चे स्वतः रुचि लेने लगेंगे।

बढ़ती उम्र के साथ बच्चों को क्रमशः

◇◇◇

सकारात्मक चिंतन देने वाला साहित्य और पारिवारिक जीवन मूल्यों तथा रिश्तों की संवेदनशीलता प्रदर्शित करने वाले साहित्य को उसी रुचि से बच्चों तक पहुँचाएँ जिस रुचि से माँ बच्चों की थाली तक सुस्वादु भोजन पहुँचाती है।

◇

उनकी रुचि विकसित और परिष्कृत करने वाली पुस्तकें देना प्रारभ्भ करें। विज्ञान, इतिहास, रहस्य रोमांच, शिकार कथाएँ आदि बढ़ती उम्र के बच्चे पसंद करते हैं। बच्चे अपनी उम्र से आगे का साहित्य एवं अन्य सामग्री अन्य माध्यमों से भी प्राप्त न करें। इस का ध्यान रखें।

बड़ों की पत्रिकाएँ लाते समय यह सतर्कता और बढ़ा दें। प्रतिदिन रात्रि भोजन के पश्चात् पूरे परिवार के साथ बैठकर बच्चों द्वारा पढ़े गए साहित्य पर रुचिपूर्वक चर्चा करें। यह बात सदैव स्मरण रहे कि 'बाल साहित्य' बचकाना साहित्य नहीं होता।

सकारात्मक चिंतन देने वाला साहित्य और पारिवारिक जीवन मूल्यों तथा रिश्तों की संवेदनशीलता प्रदर्शित करने वाले साहित्य को उसी रुचि से बच्चों तक पहुँचाएँ जिस रुचि से माँ बच्चों की थाली तक सुस्वादु भोजन पहुँचाती है।

आजकल बच्चों के कुछ अखबार भी प्रकाशित होने लगे हैं। पता करके एकाध मंगवाना प्रारम्भ करें, भले ही मासिक या पाक्षिक हों। यह चिंता अवश्य करें कि बाल समाचारपत्र या पत्रिकाएँ बच्चों के नाम पर ही डाक से मँगाए, अपने नाम से नहीं। ये छोटी-छोटी बातें हैं जो स्वानुभूत नुस्खे भी हैं। इनका पालन परिवार करे तो बच्चे भी हमारी तरह ही स्वाध्यायी बनने लगेंगे।

माता-पिता प्रथम शिक्षक

हमारे जीवन में माता-पिता के अनंत उपकार होते हैं जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सदा हमारे साथ रहते हैं। हम कह सकते हैं कि माता-पिता की कृपा से ही हम अपने जीवन को खुशहाल राहों पर गतिमान रख सकते हैं। माता-पिता हमें जन्म देते हैं, सुरक्षित जीवन देते हैं और जीवन को आकर्षक बनाने हेतु अच्छे संस्कार देते हैं। माता-पिता के दिए हुए संस्कारों से ही हम जीवन जीने की कला सीख कर अपना उज्जवल भविष्य बना पाते हैं। उनके द्वारा दिए संस्कार ही हमें कई उलझनों एवं ठोकरों से बचाते हैं। संस्कारों के माध्यम से ही समाज में स्थान बना पाने में सफल हो पाते हैं।

माता-पिता से बढ़कर कोई दूसरा हमारा शुभचिंतक हो ही नहीं सकता है। हमें इस बात को हमें हमेशा याद रखना चाहिए। हमारे शुभचिंतक बहुत लोग हो सकते हैं। हमें उनको धन्यवाद करते रहना चाहिए, लेकिन यह भी नहीं भूलना चाहिए कि सर्वश्रेष्ठ शुभचिंतक माता-पिता ही होते हैं। माता पिता अपने पुत्र-पुत्रियों को कभी भी दुखी देखना नहीं चाहते हैं। वे चाहते हैं कि हमारे पुत्र-पुत्रियों के जीवन में सुख-समृद्धि, संस्कार बनें रहें। इसलिए माता-पिता की आत्मा को भूलकर भी नहीं दुखाना चाहिए। माता पिता की आत्मा तब दुखती है जब हम उनके बताए रास्ते पर नहीं चलते हैं और प्रतिकूलताओं से ग्रसित हो जाते हैं। याद रहे कि यदि आप अपने माता-पिता का सिर झुकने नहीं दिया तो समझ लेना कि आप सही दिशा की ओर बढ़ रहे हैं।

हमारे माता-पिता हमारी संगति को लेकर भी बहुत चिंतित रहते हैं। हमें अच्छे सभ्य, सुसंस्कृत मित्रों की संगति करना चाहिए। जो व्यक्ति हमारे अंदर की अच्छाइयों को उभार दें, हमें अच्छे, लोक कल्याणकारी कार्य करने के लिए प्रेरित करें, उसे बिना सोचे-समझे मित्र बना लेना चाहिए। इसके विपरीत जो व्यक्ति हमारी बुराइयों को सम्मान दे, उन्हें उजागर करे समाज में हमारे प्रति घृणाभाव जागृत करे ऐसे व्यक्ति से भूलकर भी मित्रता नहीं करना चाहिए।

माता पिता ही हैं जो हमें हमारी कथनी व करनी में समानता रखने की सलाह देते हैं। हमें निर्विकार रखने का प्रयास करते हैं। हमें विनम्रता, निश्छलता, व्यवहारिकता एवं ईमानदारी का पाठ पढ़ाते रहते हैं।

नागरिकता कानून के विरोध का सच

सामयिकी

श्री श्रीनिवास
राष्ट्रीय सहसंगठन मंत्री
अखिल भारतीय
विद्यार्थी परिषद्
सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता
शैक्षिक विषयों पर गहन चिंतन
पत्र-पत्रिकाओ में लेखन

संपर्क
मो. 9911202729

नागरिकता संशोधन कानून के विरोध में पूर्वोत्तर से प्रारम्भ हुए विरोध प्रदर्शन का पश्चिम बंगाल से होते हुए उत्तर प्रदेश और दिल्ली तक आ जाना इस बात की ओर ध्यान आकर्षित करता है कि राष्ट्र विरोधी शक्तियाँ देश व समाज को कैसे अशांत करने पर आमदा हैं। उत्तर प्रदेश की राजधानी में हसनपुर पुलिस चौकी में आग लगा दी गई। भीड़ में जितनी संख्या लोगों को थी उससे अधिक विद्यालयीन विद्यार्थी रूपी बच्चे दिखाई दिए। इतने कम उम्र में इन बच्चों के द्वारा हिंसा में शामिल होना इस बात की पहचान है कि उनके दिमाग में ज़हर भरा जा रहा है। कुछ लोग अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए उनके भोलेपन का गलत प्रयोग कर रहे हैं। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि स्थिति जब अराजकता कि हो तो विदेशी शक्तियाँ भी आग में घी डालने का कार्य करती हैं। बड़े स्तर पर इसके लिए फंडिंग भी विदेशों से होती है। राजनीतिक दल अपने निहित स्वार्थ के लिए किसी हद तक जा सकते हैं। यह अत्यंत ही दुखद और चिंताजनक है। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि इससे किसी भी मुस्लिम परिवार को डरने की जरूरत नहीं है। किसी भी तरीके से यह कानून उनके विरोध में नहीं है। यही बात गृहमंत्री ने भी दुहराई, इसके बाद भी हिंसा की घटनाएँ होती रहीं। वह भी कुछ चयनित स्थानों पर। मुस्लिम बहुतायत वाले स्थानों और इलाके इसके मुख्य केन्द्र में रहे। जामिया में जमकर उत्पात हुआ। वी.डी.ओ. फुटेज में पाया गया कि कैंपस के भीतर से असामाजिक तत्त्वों के द्वारा पुलिस पर पत्थर फेके गए और सरकारी सम्पत्ति की हानि हुई। इस विरोध का मुख्य केन्द्र विश्वविद्यालय कैम्पस बना।

सरकार के विपक्षी दलों के कुछ चयनित विधायकों के द्वारा हिंसा बढ़ाने की पहल हुई। समाचार पत्रों में अनेकों ऐसे आलेख लिए गए जो विद्रोह का खुलकर समर्थन कर रहे थे। अरुन्धती राय, आशुतोष वार्ष्णेय और अनेक अपने आप को उदारवादी विचार के मानने वालों ने देश के विरोध में आन्दोलन करने के लिए आम जन से अपील की। अलीगढ़ और जामिया में छात्रों ने जिस तरह से कानून व्यवस्था को अपने हाथों में लिया और सरकारी सम्पत्तियों को नुकसान पहुँचाया वह घोर अपराध है। सर्वोच्च न्यायालय ने भी विपक्ष की अपील को खारिज़ करते हुए हिंसा की कड़े शब्दों में आलोचना की है। यहाँ तक जामा-मस्जिद के इमाम ने भी मुस्लिम समुदाय को कहा कि यह कानून मुस्लिम के विरोध में नहीं है और ऐसे बहकाने वाले लोगों के भड़काऊ बातों में न आएँ। इसके बाद भी कानून को राजनीतिक रंग देने की कोशिश जारी है। क्या ऐसा करना उचित है? देश के मुसलमानों को गलत तथ्यों के द्वारा बहकाना एक अपराध है। भीड़ के द्वारा राष्ट्रीय सम्पत्ति को हानि पहुँचाना एक संगीन अपराध की श्रेणी में आता है। इन तमाम मसलों पर आम जनता को सोचना होगा कि कौन सी शक्तियाँ देश को स्थिर करना चाहती हैं। आखिर उनकी मंशा क्या है?

इस कानून के विरोध में सर्वप्रथम पूर्वोत्तर के लोगों को द्वारा बहकाया गया। श्रद्धेय पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के द्वारा असम गण

परिषद् के साथ असम में जो समझौता हुआ था उसके मुद्दे क्या थे?, जब वही बात इस सरकार ने सबके हित को ध्यान में रखते हुए एन.आर.सी. को लागू किया तब तो उसके विरोध को लेकर विपक्ष द्वारा बवाल मचाया गया। उसके बाद नागरिकता संशोधन विधेयक को रोकने का प्रयास किया गया। जब यह कानून बन गया तो उसके माध्यम से धार्मिक कट्टरता को विद्वेष के रूप में फैला कर विपक्षी राजनीतिक पार्टियाँ वोट बैंक की राजनीति कर रही हैं। यहाँ इस बात को समझना जरूरी है कि भारत के पड़ोसी देशों में अल्पसंख्यकों के साथ 70 सालों से घोर अत्याचार हो रहा है। देश के बँटवारे के समय पूर्वी बंगाल, जो 1971 तक पाकिस्तान का हिस्सा था। वहाँ पर हिन्दुओं का प्रतिशत 35 था जो 1971 में घटकर 21 प्रतिशत हो गया। वर्तमान में करीब-करीब 7 प्रतिशत शेष बचा है। दूसरा महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि उसमें से अधिकतर हिन्दू परिवार अत्याचार से तंग होकर वर्षों से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी आजीविका के लिए रह रहे हैं। नए सिरे से उनको बाहर से बुलाकर बैठाने की बात नहीं है। यदि है भी तो यह जानना जरूरी है कि पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान तीनों ही इस्लामिक देश हैं। वहाँ नागरिकता के प्रश्न पर सभी धर्मों को एक भाव से नहीं देखा जाता। इन देशों में धर्म परिवर्तन का प्रयास बल और धन के बूते पर किया जाता है। भारत के बँटवारे के से लेकर आज तक ऐसी बातें नहीं हुई हैं और नही संभव है। इसलिए तथाकथित बुद्धिजीवी और नेताओं के द्वारा यह अफवाह फैलाना कि मुस्लिम समुदाय को यह सरकार हाशिए पर धकेलना चाहती है, उनको दोयम दर्जे की

◇◇◇

इस तरह की अव्यवस्था फैलाकर देश व्यापी अराजकता की स्थिति को पैदा करने वाले और कोई नहीं बल्कि शहरी नक्सली ही हैं। कभी मॉबलिचिंग को लेकर तो कभी कैंपस में शुल्क वृद्धि को लेकर हंगामा करना उनकी आदत में है। जबकि बढ़ती महंगाई की दर की हिसाब से शुल्क वृद्धि सामान्य है। इस कुत्सित मानसिकता के पीछे वही शक्तियाँ है जो देश को अस्थिर करना चाहती हैं।

◇

नागरिकता देने का षड्यंत्र रच रही है। क्या ऐसा विचार समाज में फैलाना देशद्रोही कार्य नहीं है, तो क्या है?

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री जो एक नेत्री हैं खुद अगुआई कर रही हैं। वहाँ पर बड़े पैमाने पर हिंसा की खबरें मिली हैं। इससे असामाजिक तत्त्वों को बल मिल रहा है, वे देश की व्यवस्था को चुनौती देने लगे हैं। यही हालात दिल्ली के जामिया में हुआ। मुस्लिम बहुल एरिया में सार्वजनिक स्थानों को निशाना बनाया गया। उत्तर प्रदेश के मुस्लिम बहुल इलाकों में सामाजिक सौहार्द्र तोड़ने की कोशिश की जा रही है। आश्चर्यजनक संयोग और सौभाग्य है कि इस सरकार ने मुस्लिम समुदाय की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने और उनके आर्थिक उन्नति की तरफ ध्यान देकर उन्हें सुदृढ़ करने का कार्य कर रही है। परन्तु दुर्भाग्य है कि सरकार की कमियाँ और खामियाँ गिना कर मुस्लिम समुदाय में उनके दुर्गुणों को दूर करने की बजाय उन्हें और मजबूत करने हेतु विपक्षी पार्टियाँ सहायक बन रही हैं। सभी सत्ता विरोधी राजनीतिक पार्टियाँ जो उनके कुनबे के वोट बैंक के बल पर सत्ता में वापसी करना चाहती हैं, समरसता पूर्ण सामाजिक ताने बाने को तोड़कर देश को राजनीतिक रूप से अस्थिर करना चाहती हैं। लेकिन उनका कुत्सित प्रयास सफल नहीं होगा क्योंकि देश उनकी दोहरी राजनीति और मौकापरस्ती को समझ चुका है। देश की जनता सच और अफवाह को भी जानती है। यह केवल राष्ट्र विरोधी शक्तियों का जमघट है। जिनकी संख्या बहुत अधिक नही हैं।

यहाँ पर कुछ बातें स्पष्ट दिखाई दे रही है कि कैसे कैंपस की राजनीति में ज़हर घोला जा रहा है। विद्यार्थी देश का भावी कर्णधार है परन्तु पहले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में शुल्क वृद्धि का बहाना बनाकर कैंपस को हानि पहुँचाने का कुत्सित प्रयास किया गया उसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय को निशाना बनाया गया। विदेशों में भारतीय मूल के अल्पसंख्यकों के नागरिकता से संबंधित कानून को लेकर जामिया और अलीगढ़ में बवाल मचाने की कोशिश जारी है। इन सभी जगहों को एक कड़ी में जोड़ कर देश व्यापी आन्दोलन बनाने की साजिश रची जा रही है। इसमें कांग्रेस पार्टी जैसे कई अन्य पार्टियाँ भी सम्मिलित हैं जिनकी लूट-खसोट की दुकानें मुस्लिम वोट बैंक की राजनीति पर चलती हैं।

इस तरह की अव्यवस्था फैलाकर देश व्यापी अराजकता की स्थिति को पैदा करने वाले और कोई नहीं बल्कि शहरी नक्सली ही हैं। कभी मालिचिंग को लेकर तो कभी कैंपस में शुल्क वृद्धि को लेकर हंगामा करना उनकी आदत में है। जबकि बढ़ती

◇◇◇

विरोध की भी एक सीमारेखा और मर्यादा होती है अगर वह मर्यादा की सीमा टूटती है तो कानून का पालन करने वाली संस्थाओं को उन्हें दंडित करने के साधन भी सुनिश्चित करने होंगे।

◇

महंगाई की दर की हिसाब से शुल्क वृद्धि सामान्य है। इस कुत्सित मानसिकता के पीछे वही शक्तियाँ है जो देश को अस्थिर करना चाहती हैं। शहरी क्षेत्रों में भी नक्सली कार्य करना जिसका एक मात्र प्रयास है, कैंपस के छात्रों को उत्तेजित कर देश के बढ़ते विकास की गति को रास्ते से भटकाना और नीचे धकेलना। भारत विरोधी शक्तियों की एक मजबूर और देशद्रोही कड़ी बनती जा रही है। कैंपस से लेकर संसद तक इनके आका इनको भड़काने का कार्य कर रहे हैं। उदारवादी विचारधारा के नाम पर खुलापन का ढोंग कर देश की मजबूत राजनीतिक सौहार्द के ढाँचे को तोड़ना ही इनका एक मात्र कुटिल चाल है। जिस तरह से एनआरसी और नागरिकता संशोधन विधेयक पर कुछ दलों ने विरोध की राजनीति कर, अपने को उदारवादी विचारधारा वाली सोच को गलत तरीके से सही सिद्ध करने में लगे हैं, जो कि देश के समरस सामाजिक ताने-बाने को तोड़ने और कमजोर करने के लिए गठजोड़ बनाया है। संसद में राजनीतिक पार्टियाँ और विश्वविद्यालयों के कैंपस में उनके तथाकथित बुद्धिजीवी जो अपने, समाज का मसीहा मानते हैं। अपनी विद्वता को दुनिया में अनोखा समझकर देश विरोधी कार्य को पूरी दुनिया में फैलाकर समाज और भोली-भाली जनता में उन्माद फैलाकर सरकारी सम्पत्ति को जलाना जानते हैं। देश की जनता को अंधेरे में रखना पसंद करते हैं। जिनकी सोच कश्मीर को पाकिस्तान सौंपने की है, राष्ट्र को खंडित करने की है इस कुत्सित मंशा को बेनकाब करने के लिए समाज में जागृति लाने की आवश्यकता है।

शहरी नक्सलवाद पैदा कैसे होते हैं ? इस बात को समझना अब जनता के लिए कठिन नहीं है। देश के छात्रों की आड़ में राजनीति को मानवीय शक्ल देने का ढोंग उदारवादी बुद्धिजीवी के द्वारा किया जाता है। उनकी निगाह में राष्ट्र केवल एक बेमतलब की चीज है। देश के राष्ट्रीय खजाने से विदेशों में मौज-मस्ती करने वालों की यह जमात विदेशों में अपने ही देश को नीचा दिखाने का षड्यंत्र रचते हैं तथा विदेशी जमीन पर अपनी झूठी शान बघारते हैं। देश के नागरिक अब ऐसे लोगों को पहचान चुका है।

'लिबरल थॉट' के बुद्धिजीवियों की तदाद बहुत अधिक नहीं है पर 'थोड़ा चना बाजे घना' वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए उनका विस्तार जेएनयू और दिल्ली विश्वविद्यालय में जरूर है। इनकी ठेकेदारी अन्य संस्थाओं में भी चलती है। कुछ बुद्धि जीवी हैं जो अपने देश को कमजोर करने की साज़िश रच रहे हैं, निश्चित रूप से उनका प्रमुख अड्डा जेएनयू ही है।

विदेशी अल्पसंख्यकों को नागरिकता देने का कानून किसी भी तरह से धर्म से प्रेरित नहीं है और न ही किसी धार्मिक समुदाय के विरोध में हैं। इसलिए धर्म के नाम पर मचाया जा रहा बवाल भी राष्ट्र व देशविरोधी कार्य की श्रेणी में आता है। देश की वर्तमान व्यवस्था अपने सच और राष्ट्र हित के लिए कटिबद्ध है, उसका मकसद न केवल देश की प्रगति करना बल्कि ऐसे तत्त्वों की पहचान करना है जो देश व्यापी दंगा और लूट-पाट को अपना राजनीतिक विरोध का हथियार मानते हैं। विरोध की भी एक सीमारेखा और मर्यादा होती है। अगर वह मर्यादा की सीमा टूटती है तो कानून का पालन करने वाली संस्थाओं को उन्हें दंडित करने के साधन भी सुनिश्चित करने होंगे। आम जनता को देशहित की बातों को समझाते हुए ऐसे गुमराह होकर गलत रास्ते की ओर मुड़ने वाले लोगों को मुख्य रूप से विकास की धारा में जोड़ने हेतु देशभक्तों को सरकार की मदद करनी चाहिए। जन समुदाय भी अपनी जिम्मेवारियों से भाग नहीं सकता।

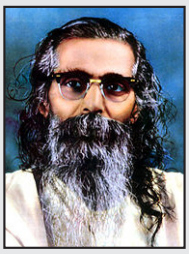

यह भूमि जिसकी पूजा हमारे संत महात्माओं ने मातृभूमि, धर्मभूमि, कर्मभूमि एवं पुण्यभूमि के रूप में की है और यही वास्तव में देवभूमि और कर्मभूमि है। यही अनन्त काल से पावन भारत माता है। जिसका नाम मात्र ही हमारे हृदयों को शुद्ध, सात्विक भक्ति की लहरों से आपूर्ण कर देता है। अहो! यही तो हम सब की माँ है -हमारी तेजस्विनी मातृभूमि।

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर
'श्रीगुरु जी'

जम्मू-कश्मीर : बदलाव के पल

सामयिकी

श्री आलोक गोस्वामी
सुप्रसिद्ध पत्रकार,
सामाजिक विषयों पर
चिंतन व लेखन

संपर्क
मो. 98100 40656

05 अगस्त 2019 को भारत सरकार ने संसद के दोनों सदनों में दो तिहाई बहुमत से जम्मू-कश्मीर में प्रभावी संविधान के अस्थाई अनुच्छेद 370 और 35ए को निरस्त करके असाधारण और अभूतपूर्व कदम उठाया था। वह कदम जिसकी शुरुआती सुगबुगाहट मात्र से कश्मीर घाटी में हुर्रियत अलगाववादियों, उनके पैसे पर पत्थर फेकूँ लफंगा मंडली को 'मॉबिलाइज' करने वालों और केन्द्र के पैकेजों का सालों से अपने निकम्मेपन के पोषण हेतु हेराफेरी करके अपनी जेब में उड़ेलती रही राज्य की नौकरशाही ने बुक्के फाड़ कर छातियाँ पीटनी शुरु कर दी थीं। उनसे भी बढ़कर 70 साल से भी ज्यादा सालों से कश्मीरी जनता के खून-पसीने को चूसकर, उनके खेत-खलिहानों को डकारकर, उनकी दस्तकारी कला को रौंदकर , उनके बच्चों को झूठे ख्वाब दिखाकर अपना घर भरते आ रहे घाटी के दो शाही खानदानों की तो सिट्टी-पिट्टी ही गुम हो गई। इतना ही नहीं मुफ्ती खानदान की मौजूदा सरपरस्त महबूबा ने ऐसे किसी भी कदम को 'बारूद के ढेर में चिंगारी भड़काने' के समान बताकर कश्मीर की अमनपसंद जनता को उकसाने की कोशिश की। राज्य की संवैधानिक पद पर रहीं मुख्यमंत्री महबूबा यह तक भूल गईं कि लोकतंत्र में एक जिम्मेदार पार्टी की नेता होने के नाते उनका यह बयान देश के खिलाफ और विदेशी शातिर पाकिस्तान के पाले में जाता है।

बहरहाल दृढ़ निश्चय वाली केन्द्र सरकार ने तमाम निहित स्वार्थों के राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय दबावों को सिरे से नकारते हुए देश और जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख के दूरगामी हितों को देखते हुए जम्मू-कश्मीर और लद्दाख दोनों को दो अलग-अलग संघ शासित क्षेत्रों में बाँटकर करोड़ों देशवासियों के दिल की तमन्ना पूरी की और जनसामान्य को दीवाली मनाने का अवसर दिया।

लेकिन जैसा अंदेशा था, नफरती जमात ने फिर से घाटी में उपद्रव मचाने की कोशिश की व सीमापार से भारत में आतंकियों को उकसा कर कश्मीर में उथल-पुथल मचाए रखने वाली पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइएसआई ने सोशल मीडिया पर फर्जी खबरों का सैलाब लाना शुरु कर दिया। देश की मुख्य धारा मीडिया में उनके इशारों पर खबरें गढ़ते आ रहे अखबारों और टी.वी. चैनलों ने उन फर्जी खबरों को और हवा देकर ऐसा मंजर खड़ा किया मानो कश्मीर का आम इंसान व्यथित है। वहाँ की जमातें और छात्र नाराज हैं। युवा आक्रोशित हैं, बाज़ार बंद है। सेब के व्यापारी बदहाल हैं, कर्फ्यू लगा है, सड़कों पर आवाजाही बंद है आदि-आदि। इस तरह के नेरेटिव में कितनी सच्चाई है, इसे परखने के लिए पीछे दो दिनों के लिए कश्मीर जाना हुआ। इस दौर में अनूठे, हैरान करने वाले अनुभव हुए तथा वे झूठे और प्रायोजित नेरेटिव भी एक-एक कर ढहते गए जिसे तथाकथित दिल्ली की राष्ट्रीय मीडिया अनदेखा करता रहा। अपने सेकुलर मुल्लमे को जमाए रखने के लिए।

जम्मू-कश्मीर से जुड़े दो समाचार 3 मार्च 2020 को पढ़ने में आए। पहला यह कि पब्लिक सिक्योरिटी एक्ट के तहत नजरबंद सूबे के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की रिहाई की अपील पर प्रशासन का यह बयान कि उन्हें

◇◇◇

भारत के किसी भी दूसरे शहर की तरह यहाँ श्रीनगर में भी औरतें स्कूटी और गाड़ी चलाती दिखीं। मोटरसाईकिलों पर लोग आते-जाते दिखे। एक फर्जी नेरेटिव खड़ा किया गया कि करफ्यू जैसे हालात हैं, वह भी तार-तार हुआ; क्योंकि ऐसे हालात में चार-छह की टोलियों में लोग चौराहों, गली के नुक्कड़ों पर अड्डे जमाते नहीं दिख सकते।

◇

छोड़ने से राज्य में कानून व्यवस्था के लिए मुश्किल हालात् हो सकती है। दूसरा घाटी के कई जिलों की लड़कियों की क्रिकेट टीमों में प्रतियोगिता चल रही है। क्रिकेट में लड़कियों का यूँ जोशखरोश के साथ भाग लेने का समाचार सुखद लगा। इस मायने में कि इससे वहाँ अलगाववादी कठमुल्लाओं के फतवे-फरमानों की बजाय अमन और तरक्की की राह के प्रति दिलचस्पी जगी है।

बदलते जम्मू-कश्मीर की झलक है यह। उस पूर्व प्रदेश और अब केन्द्र शासित क्षेत्र की जिसे पिछले 30 से ज्यादा साल से जिहादी आग में झुलसना पड़ा और जहाँ से पीढ़ियों से रहते आए पंडित समाज को बंदूक की नोंक पर पलायन करना पड़ा था। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 और 35 ए हटाकर उसे मुख्यधारा से जोड़ने के नरेन्द्र मोदी सरकार के फैसले के बाद से उत्तरोत्तर वहाँ क्या बदलाव आया है और किस प्रकार स्थानीय आवाम भारत का अंग बने रहने में अपना भविष्य देख रही है, इसका जायजा लेने के लिए एक पत्रकार के नाते कुछ समय पहले वहाँ की अपनी छोटी सी यात्रा अक्सर याद आ जाती है।

उस दिन सुबह करीब 7:30 बजे श्रीनगर के हवाई अड्डे के बाहर कदम रखते ही जो नजारा दिखा उसने पहला झूठा नेरेटिव तो यह ध्वस्त किया कि 'लोगों को घर से निकलना दूभर हो गया है, हवाई अड्डा सुनसान है, भारत सरकार के फैसले से सब चिढ़े हुए हैं आदि-आदि'। हवाई अड्डे से बाहर निकलने के गेट पर 250-300 की तादाद में वे लोग जो अपने रिश्तेदारों के लिवाने-छोड़ने आए थे; उन्हीं के बीच टैक्सी, आटो वाले भी थे। डिपार्चर टर्मिनल भी भीड़भाड़ से अटा था। यानि जाने वाली उड़ानें भी खाली नहीं जा रही थीं।

हवाई अड्डे से निकलकर शहर के बीच पहुँचने पर दूसरा फर्जी नेरेटिव यह ध्वस्त हुआ कि लोग आ-जा नहीं पा रहे हैं। दुकानें न खुलने से रोजमर्रा के समान की दिक्कतें झेल रहे हैं। कैसी दिक्कतें। क्योंकि शहर के मोहल्लों में बेकरी से लोग ब्रेड, बटर और अंडे खरीदते दिखे।

भारत के किसी भी दूसरे शहर की तरह यहाँ श्रीनगर में भी औरतें स्कूटी और गाड़ी चलाती दिखीं। मोटरसाईकिलों पर लोग आते-जाते दिखे। एक फर्जी नेरेटिव खड़ा किया गया कि करफ्यू जैसे हालात हैं, वह भी तार-तार हुआ; क्योंकि ऐसे हालात में चार-छह की टोलियों में लोग चौराहों, गली के नुक्कड़ों पर अड्डे जमाते नहीं दिख सकते। कुछ सड़कों पर जरूर कंटीले तारों से अस्थायी रोक लगी दिखी पर उसकी बजाय बगल की सड़क से गुजरने में सुरक्षा कर्मियों को कोई गुरेज नहीं हुआ। कई नाकों पर तो उन्होंने खुद हमारे ड्राइवर को समझाया कि 'यहाँ से फलां सड़क से होकर आप अपने ठिकाने पर जा सकते हो ।'

श्रीनगर के एक प्रसिद्ध प्राचीन धार्मिक स्थान शंकराचार्य पहाड़ी पर बने ज्येष्ठाधीश या शंकराचार्य मंदिर का अपना ही पौराणिक महत्त्व है। मंदिर के बारे में बहुत पढ़ा था सो वहाँ जाने के लालच को रोक नहीं पाया। डेरे पर तुरंत नहान-ध्यान करके पहाड़ी चढ़ लिए अपनी गाड़ी से। पहले लगा कि पता नहीं सेक्यूलर अखबारों के खबरनवीसों कि हिसाब से तो 'श्रीनगर में घूमना संभव नहीं है, तो क्या वहाँ तक जा भी पाएँगे कि नहीं।' सेकुलर मीडिया का वह भ्रामक दुष्प्रचार भी खंड-खंड हो गया जब हमारी गाड़ी शिलाखंडों के बढ़िया सपाट सड़क को फलांगती हुई ठीक नीचे बहती डल झील से तकरीबन 1000 फुट की ऊंचाई पर मंदिर की 243 सीढ़ियों की ठीक शुरुआत तक बेखटके जा पहुँची। 700 साल ईसवीं सन् से पहले के आसपास कश्मीर के राजा गोपादित्य और राजा ललितादित्य द्वारा बनवाए गए और 9वीं सदी में खुद शंकराचार्य के आगमन से पवित्र हुए उस मंदिर के पर कोटे पर पहुँच कर लगा कि जैसे बरसों की साध पूरी हो गई। लिंग रूप में भगवान भोले नाथ के दर्शन किए, जलाभिषेक किया, शिव स्तोत्र का पाठ किया। परिसर में ही उस गुफानुमा स्थान के दर्शन किए जहाँ आदिशंकर ने ध्यान लगाया था। छुट्टी के दिन यूँ भी शहर में आमतौर पर खास चहल-पहल नहीं होती, ऐसा वहाँ के कुछ स्थानीय लोगों ने ही बताया। लेकिन तो भी वहाँ दक्षिण भारत से आए दसेक लोगों की एक घुमक्कड़ मंडली मिली जो सालाना सैर में इस बार श्रीनगर घूमने आए थे। मंडली में कुछ महिलाएँ भी थीं जो मंदिर दर्शन करके

विशेष रूप से रोमांचित दिखीं।

नीचे शहर में माहौल अमूमन शांत ही लगा। सड़कों पर लोग यहाँ-वहाँ चहलकदमी करते नजर आए, कुछ डल झील में तसल्ली से मछली पकड़ने का कांटा डाले गुनगुनी धूप का आनंद ले रहे थे तो कुछ किशोर डल झील के गेट के पास मटरगश्ती करते दिखे। उस दिन सरकारी छुट्टी की वजह से निशातबाग बंद था, पर दूर तक जातीं उसकी फूलों की क्यारियाँ और चिनार के कतार बाहर सड़क से ही आनंद का अहसास करा रही थीं।

इस दौर में श्रीनगर के सामाजिक जीवन से जुड़े कई वर्गों के प्रतिनिधियों से मुलाकातों का क्रम चला। पंचायतों के प्रतिनिधि, सरपंच, सिख समुदाय के प्रतिनिधि, स्कूल-कॉलेजों की छात्र-छात्राएँ आदि। उनसे हुई बातचीत का सार यह रहा कि 370 हटने से अब उनकी उम्मीद पुख्ता हुई है कि अमन लौटेगा। पिछली सरकारों द्वारा वर्षों से जनता से की जा रही धोखाधड़ी को बंद कर, केन्द्र सरकार विकास की पटरी पर, केन्द्र शासित इस राज्य को दौड़ाएगी। उनके कारोबार-रोजगार के अच्छे इंतजाम होंगे। भ्रष्ट नौकरशाही को विकास के रास्ते पर लाया जाएगा। अलगाववादियों द्वारा रौबदारी से दबाई गई जमीनें और सम्पत्तियाँ उनके असल मालिकों को मिलेंगी। नए स्कूल, कॉलेज, इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेज खुलेंगे। आई. आई. टी. पार्क बनेंगे जिससे नई पढ़ी-लिखी पीढ़ी को कश्मीर में बसे अपने परिवारों से बिछड़कर नौकरी करने नोएडा, गुरुग्राम, बेंग्लूरू, चेन्नै या हैदराबाद न जाना पड़े। पलायन कर गए कश्मीरी पंडितों की वापसी होगी और वे सुकूनो-अमन की जिंदगी जिएँगें।

भग्नावशेष की सूरत में अनदिखे से रहे मंदिरों का जीर्णोद्धार होगा, सेब की फसल बेखटके बाजारों तक पहुँचेंगी, उसका अच्छा दाम मिलेंगा। वहाँ की हाशिए पर पहुँचाई जा रहीं 14 प्रतिशत शिया आबादी भी अपनी आवाज बुलंद करके अपना दर्द बताना चाहती हैं। वह ये चाहती है कि उनका सियासत, तिजारत और कश्मीरियत में जो हिस्सा रहा है वह बहाल हो।

ऐसा ही हो ये आम कश्मीरी मानस ही नहीं बल्कि सही सोच रखने वाला हर देशवासी चाहता है। लेकिन सेकुलर और भड़काऊ राजनीति भीतर ही भीतर जो आग लगाती आ रही है उसका कुछ असर सड़क पर अड्डेबाजी करते नौजवानों की बातों से झलका। उनके स्वर में हल्की सी हताशा थी, जब उन्होंने कहा कि 'केन्द्र सरकार बहुत कुछ करने की बात तो करती है, पर क्या ऐसा नहीं है कि हमारी जमीनों पर बाहरी लोग आकर बस जाएँगे, हम पर दिल्ली वाले राज चलाएँगे। कश्मीर का भला कोई नहीं चाहता।' डल झील के गेट पर मिले औवैस का दर्द कुछ गलतख्याली से पैदा हुआ है जो धारा 370 के हटने के फायदे के बारे में उचित जानकारी की कमी से उपजी है।

पहलगाम में सेब के बगीचे के मालिक परवेज मोहम्मद में उम्मीद ज्यादा झलकी, जिसका कहना था कि अबतक तो बाहर पहुँच न होने के कारण स्थानीय ठेकेदार इतनी कम कीमत पर सेब ले लेते थे कि लाभ नहीं होता था, और नहीं खर्चा ही निकलता था पर हम बेचने को मजबूर थे। अब 370 हटने के बाद हम खुद देश के दूसरे हिस्सों की मंडियों में जाकर मोल-भाव करेंगे। मोदी साहब हम कारोबारियों का जरूर ध्यान रखेंगे, अब ऐसा लगने लगा है।

◇◇◇

पहलगाम में सेब के बगीचे के मालिक परवेज मोहम्मद में उम्मीद ज्यादा झलकी, जिसका कहना था कि अबतक तो बाहर पहुँच न होने के कारण स्थानीय ठेकेदार इतनी कम कीमत पर सेब ले लेते थे कि लाभ नहीं होता था और नहीं खर्चा ही निकलता था पर हम बेचने को मजबूर थे। अब ३७० हटने के बाद हम खुद देश के दूसरे हिस्सों की मंडियों में जाकर मोल-भाव करेंगे। मोदी साहब हम कारोबारियों का जरूर ध्यान रखेंगे अब ऐसा लगने लगा है।

◇

श्रीनगर के डाउनटाउन का इलाका वहीं है जहाँ घनी बसाहट होने की वजह से पत्थरबाज सुरक्षाकर्मियों को निशाना बनाते रहे। उन इलाकों में जवानों की तैनाती के बीच जिंदगी नई उम्मीद के साथ पटरी पर सुरक्षित लौटने की कोशिश करती दिखती है। तो कुछ लोगों को भय था कि कहीं उन्हें हमसे बात करते देखकर अलगाववादी तत्त्व उन्हें या उनके घर वालों को सताएँ ना। लाल चौक पर जरूर कुछ बडी दुकानें जान-बूझकर बंद रखी गई हैं, लेकिन गाड़ियाँ बदस्तूर दौड़ रही हैं। वैसे ही ट्रैफिक अन्य शहरों जैसा ही दौड़ता-भागता दिखा करता है। लेकिन लाल चौक के क्लॉक टॉवर के ठीक बाजू में खड़ा दिखा एक आईसक्रीम वाला जानता था कि

ठंढी बयार में आइसक्रीम के मुरीदों को उसकी तलब होती है। क्लॉक टॉवर से ठीक 100 फर्लांग पर दिल्ली के जनपथ सरीखी सस्ते सामानों की पटरी मार्केट दिखी जहाँ कपड़े-लत्ते से लेकर दूध और अंडे तक तथा जूते-चप्पल, खेल-खिलौने आदि सब मिल रहे थे। लोगों की आवाजाही बढ़ते दिन के साथ ही परवान चढ़ने लगी थी।

अंततः पूरे सफर का निचोड़ यही रहा कि शंका और आशा के बीच कश्मीर घाटी के बाशिंदे कल को लेकर राह तक रहे हैं। राज्यपाल जी.सी.मुर्मू मंजे हुए प्रशासक हैं और केन्द्र ने ऐसे संवेदनशील हालात में उपराज्यपाल के नाते केन्द्र शासित जम्मू-कश्मीर का प्रशासन उनके हाथ सौंपा है तो इसके पीछे गहरी सोच है। मुर्मू की शुरुआती प्रयास काबिले तारीफ रही हैं। घाटी में जनजीवन सामान्य होता नजर आ रहा है। 29 जनवरी 2020 को कश्मीर में जहाँ तीन आतंकवादी पकड़े गए हैं वह पिछले काफी दिनों से वहाँ चली आ रही गहन छानबीन का नतीजा ही हैं। मुर्मू की कमान में सेना का संयुक्त अभियान रंग ला रहा है। 30 जनवरी को सात पूर्व आतंकवादियों ने सुरक्षाबलों के अधिकारियों के सामने बंदूक त्याग मुख्यधारा में शामिल होने की कसम खाई है।

उपराज्यपाल मूर्मू केन्द्र से तालमेल कर लोगों को सत्तर सालों से रहे इस दर्द से छुटकारा दिलाने की हर संभव कोशिश कर रहे हैं। सेबों की महक, चिनार की गंध से मिलकर डल से हब्बाकदल, पहलगाम से गुलमर्ग, त्राल से सोपोर और पुलवामा से अहगाम तक सुकून की बयार बहने को उत्साहित है।

कर्मयोगी शिक्षा साधक श्री श्याम लाल जी

आप का जन्म भारतीय स्वतंत्रता वाला वर्ष यानि 1947 ई. में ग्राम सैलई कासगंज जिला एटा में श्रीमती तुलसी देवी व श्री सोनपाल जी के घर हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम में ही हुई। कक्षा 6 ठी से 12 वीं तक की शिक्षा-दीक्षा कासगंज एवं अलीगढ़ में हुई।

आप अपने परिवार में तीन भाईयों में द्वितीय क्रम पर थे। इनके बड़े भाई श्री लेखराज जी ने अनेक वर्षों तक सरस्वती शिशु मंदिर में प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया। सबसे छोटे भाई का पूर्व में ही स्वर्गवास हो गया था। एम.एस.सी., बीएड. तक की शिक्षा अलीगढ़ में पूर्ण करने के बाद आप सन् 1971 में संघ के प्रचारक बने। आपात्काल में आप टिहरी गढ़वाल के जेल में रहे।

विद्या भारती के वर्तमान सरंक्षक माननीय ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी' ने श्रद्धेय भाऊराव देवरस जी (तत्कालीन संरक्षक, विद्या भारती) से आग्रह कर विद्या भारती के उत्तरप्रदेश के ग्रामीण व पर्वतीय अंचलों में कार्य हेतु तीन प्रचारक माँगे। जिनमें से एक थे, श्याम लाल जी।

श्रद्धेय श्यामलाल जी ने सन् 1990 में विद्या भारती मेरठ प्रांत के संगठन मंत्री का कार्यभार ग्रहण किया। उन दिनों उत्तराखंड भी मेरठ प्रांत में ही था। इस क्षेत्र में कार्य वृद्धि हेतु उन्होंने अथक परिश्रम किए। परिणाम स्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में विद्या भारती का कार्य सुदृढ़ हुआ। सन् 2000 में आपको विद्या भारती पश्चिम उत्तरप्रदेश क्षेत्र में संगठन मंत्री का दायित्व दिया गया। सम्पूर्ण क्षेत्र में सम्यक भ्रमण कर आपने विद्या भारती के कार्य विकास को गति प्रदान की । सम्पूर्ण क्षेत्र के सभी विद्यालयों में विद्या भारती व संघ का साहित्य पहुँचे इसके लिए व्यक्तिगत चिंता भी करते थे।

सन् 2013 में आपको विद्या भारती के अखिल भारतीय सेवा संयोजक का दायित्व मिला । जिसे आप उसी मनोयोग से करते रहे, और संघ कार्य में भी उसी ध्येय के साथ लगे रहे। सन् 2018 में आपका स्वस्थ ठीक न होने के कारण आप सभी दायित्वों से मुक्त होकर विद्या भारती पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के कार्यकारिणी सदस्य रहे।

आप अपने लौकिक जीवन की अंतिम साँस लेने तक विद्या भारती व संघ के कार्य की सुध लेते रहे। दिल्ली स्थित एम्स में आप 13 जनवरी 2020 को प्रातः गोलोकवास किए। अपने आत्मीयतापूर्ण व्यवहार से आप सदैव छोटे-छोटे कार्यकर्ता के परिवार की भी चिंता करते रहे, यही सबसे बड़ा उपहार है शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले कर्मयोगी साधकों के लिए। अनेक कार्यकर्ता आपके छोड़े गए कार्य को और आगे बढ़ाएँगे ही । श्रेष्ठ मौनसाधक कर्मयोगी की कृति सदैव अमर रहेगी।

विद्या भारती परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

प्रवासी भारतीयों के संबल महात्मा गांधी

गांधी-स्मृति

श्री वेदमित्र शुक्ल
भारतीय व विश्व-साहित्य के गहन अध्येता, सामाजिक व सांस्कृतिक विषयों में रुचि चिंतन व लेखन

संपर्क
मो. 9599798727

महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत 9 जनवरी सन् 1915 को वापस लौट आए थे। यह एक ऐतिहासिक घटना थी। इस दिन को भारत सरकार ने 2003 से प्रवासी भारतीय दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। यह दिवस विदेशों में बसे उन भारतीयों को समर्पित है जो भारत के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। निश्चित रूप से यह दिवस प्रवासी भारतीयों के लिए महत्त्वपूर्ण है। प्रारम्भ में प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय द्वारा मनाए जाने वाला यह कार्यक्रम अब विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित किया जाता है।

यह ध्यान देने योग्य है गाँधी जी से जुड़ी एक ऐतिहासिक घटना का स्मरणोत्सव । कैसे और किस सीमा तक वर्तमान भारतीय प्रवासियों से संबंधित विभिन्न विषयों को मान देने में और साथ ही, उन्हें संस्थागत करने में सफल हो सकता है? निःसंदेह शान्ति, समरसता, संघर्ष-समाधान, अन्तरराष्ट्रीय संबंधों आदि के क्षेत्र में महात्मा गांधी के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। इसके बावजूद जब इसी दशक में देश का जनमानस व सरकार गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के शताब्दी वर्ष 2015 में और अभी उनके जन्म की साध शिती वर्ष को 2019 में उत्साह पूर्वक मनाने में रत रही है। यह आवश्यक प्रतीत होता है कि प्रवासी भारतीयों के मामलों की दृष्टि से महात्मा गांधी के योगदान की पुनः चर्चा करते हुए कुछ नए आयामों को टटोला जाए। महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' को मुख्य रूप से केन्द्र में रखते हुए गांधी जी द्वारा 'भारतीय डायस्फोरा' के राजनैतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से पुनर्निर्माण एवं दिए गए योगदान को रेखांकित करने का प्रयास इस आलेख में किया गया है।

सन् 1893 में महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका जाने का कारण- भारतीय प्रवासी अध्ययन की दृष्टि से यह प्रश्न आवश्यक है कि मोहनदास करमचंद गांधी दक्षिण अफ्रीका क्यों गए? इस संबंध में उनकी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' एक प्रमुख दस्तावेज सिद्ध होता है। इसमें दक्षिण अफ्रीका जाने के पीछे के कारणों की स्वयं विवेचना करते हुए वे लिखते हैं कि स्वदेश छोड़ने से पहले उनको कुछ समय के लिए राजकोट और बम्बई के न्यायालयों में वकालत से जुड़े कार्य करने का अवसर मिला। इस दौरान घटित एक घटना के माध्यम से वे अपने देश और अपनी मानसिक स्थिति के बारे में बताते हैं। जहाँ साहब की मर्जी ही कानून है, वहाँ से मुक्ति के लिए वो आकुल थे। आगे वे एग्रीमेंट और दक्षिण अफ्रीका में स्थित हिन्दुस्तानी फर्म के विषय में लिखते हैं :-

''दादा अब्बदुला के साक्षी मरहूम सेठ अब्दुल करीम झवेरी से भाई ने मेरी मुलाकात करायी। सेठ ने कहा, 'हमारे यहाँ अंग्रेजी पत्र-व्यवहार बहुत होता है। आप उसमें मदद कर सकेंगे।' मैंने पूछा, 'आप मेरी सेवाएँ कितने समय के लिए चाहते हैं? आप मुझे वेतन क्या देंगे?' 'हमें एक साल से अधिक आपकी जरूरत नहीं रहेगी आपको पहले दर्जे का मार्ग व्यय देंगे और निवास तथा भोजन खर्च के अलावा 105 पौंड देंगे।' 'इसे वकालत नहीं कह सकते, यह नौकरी थी। पर मुझे तो जैसे भी हो हिन्दुस्तान छोड़ना था। नया देश

◇◇◇

यह दक्षिण अफ्रीका ही था जहाँ गांधी ने वर्ष १९०६ में सर्वप्रथम अहिंसात्मक आन्दोलन सत्याग्रह की शुरुआत की। ट्रांसवाल सरकार द्वारा भारतीय आबादी वाले बस्तियों को भेदभाव की नीति के अन्तर्गत दस्तावेजीकरण के लिए जारी किए गए निर्देश के विरोध में इस आन्दोलन को प्रारम्भ किया गया था। शांतिपूर्ण प्रतिरोध के लिए भारतीय प्रवासी महात्मा गांधी के साथ खड़े हुए। परिणामतः सात वर्षों तक चले आन्दोलन के बाद वहाँ की अंग्रेजी सरकार ने आंदोलनकारियों की बातें मानी।

◇

मुझे देखने को मिलेगा और अनुभव प्राप्त होगा, सो अलग। भाई को 105 पौंड भेजूँगा तो उन्हें घर का खर्च चलाने में कुछ मदद होगी। यह सोच कर मैंने वेतन के बारे में बिन कुछ झिक-झिक किए ही सेठ अब्दुल करीम का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और दक्षिण अफ्रीका जाने के लिए तैयार हो गया।' (पृष्ठ 87-88)

इसमें कोई संदेह नहीं कि महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका जाने के पीछे हिन्दुस्तानी फर्म के साथ एग्रीमेंट ही था । साथ में नया देश देखने और अनुभव प्राप्त करने सहित आर्थिक कारण भी थे। इस बात से मना नहीं किया जा सकता कि वे स्वदेश में व्याप्त अंग्रेजी अफसरशाही के साथ तालमेल बिठाने में असमर्थ थे।

इन कारणों के अतिरिक्त महात्मा गांधी स्वदेश छोड़ने का एक और रचनात्मक पक्ष इस पुस्तक में बताते हैं। यह भारतीय डायस्फोरा के आर्थिक और सामाजिक पक्ष के अतिरिक्त आध्यात्मिक पक्ष को उद्घाटित करने में सहायता प्रदान करता है। वे कहते हैं कि ''जिस प्रकार मैं हिन्दुस्तानी समाज की सेवा में लग गया, उसका कारण आत्म दर्शन की अभिलाषा थी। ईश्वर की पहचान सेवा से ही होगी। यह मानकर मैंने सेवा-धर्म स्वीकार किया था। मैं हिन्दुस्तान की सेवा करता था, क्योंकि वह सेवा मुझे अनायास प्राप्त हुई थी। मुझे उसमें रुचि थी, मुझे खोजने नहीं जाना पड़ा था। मैं तो यात्रा करने, काठियावाड़ के षड्यंत्रों से बचने और आजीविका खोजने के लिए दक्षिण अफ्रीका गया था। पर पड़ गया ईश्वर की खोज में, आत्म-दर्शन के प्रयत्न में।" (पृष्ठ 137)

गांधी द्वारा स्वदेश छोड़कर दक्षिण अफ्रीका जाने के पीछे इस आध्यात्मिक पक्ष का क्लाड मोर्कोविट्स ने अपनी पुस्तक 'द अनगांधियन गांधी' (2003) में गांधी जी में राजनैतिक आवश्यकताओं के साथ-साथ 'आध्यात्मिक परिपक्वता' के विकास की बात कहते हुए संकेत दिया है। भारतीय प्रवासी के रूप में वे भारत के सांस्कृतिक दूत बनकर दक्षिण भारत में उभर कर आए। इसके पीछे उनका दक्षिण भारत में सादगी भरा जीवन और ब्रह्मचर्य का पालन करना भी महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुआ। (पृष्ठ 80)

दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी (1893–1914) :

मोहनदास करमचंद गांधी 24 वर्ष की आयु में दक्षिण अफ्रीका पहुँचे जहाँ उन्होंने 21 वर्ष व्यतीत किए। निश्चित रूप से वे एक भारतीय फर्म से जुड़े मुकदमे के सिलसिले में एक एग्रीमेंट के तहत वहाँ गए थे। इसके बावजूद वहाँ की भारतीय आबादी की वृहद स्तर पर व्याप्त समस्याओं से उन्होंने खुद को जोड़ा। यही कारण था कि वे भारत की आधारभूत संस्कृति, सभ्यता और राष्ट्रीयता की गहरी समझ अपने भीतर विकसित करने में सक्षम हुए। 'हिंद स्वराज' जैसी महान् पुस्तक इसी समझ के परिणाम स्वरूप लिखी गई। उनके राजनीतिक-सामाजिक विचार और कार्यों को इस पुस्तक के परिप्रेक्ष्य में सरलता से जाना जा सकता है। यहाँ खासतौर से ध्यान देने योग्य है कि उन्होंने तत्कालीन भारत को दक्षिण अफ्रीका की अनेक समस्याओं का सामना कर रहे भारतीय प्रवासियों के माध्यम से समझा। नेटाल की धारा सभा के सदस्यों को चुनने के अधिकार को दक्षिण अफ्रीका में हिंदुस्तानियों से छीनने के प्रस्ताव का गांधी जी ने पुरजोर विरोध किया। सन् 1894 में उनके विशेष सहयोग से 'नेटाल इंडियन कांग्रेस' की स्थापना हुई। इसकी वजह से वहाँ बसे भारतीयों को राजनैतिक स्तर पर संगठित करने में विशेष सहायता प्राप्त हुई।

यह दक्षिण अफ्रीका ही था जहाँ गांधी ने वर्ष 1906 में सर्वप्रथम अहिंसात्मक आन्दोलन-'सत्याग्रह' की शुरुआत की। ट्रांसवाल सरकार द्वारा भारतीय आबादी वाले बस्तियों को भेदभाव की नीति के अन्तर्गत दस्तावेजीकरण के लिए जारी किए गए निर्देश के विरोध में इस आन्दोलन को प्रारम्भ किया गया था। शांतिपूर्ण प्रतिरोध के लिए भारतीय प्रवासी महात्मा गांधी के साथ खड़े हुए। परिणामतः सात वर्षों तक चले आन्दोलन के बाद वहाँ की अंग्रेजी सरकार ने आंदोलनकारियों की बातें मानी। दक्षिण

अफ्रीका में महात्मा गांधी द्वारा रंगभेद के खिलाफ शुरु किए गए ऐसे अनेक कार्यों की चर्चा की जा सकती है। इसमें दो राय नहीं कि इन सब के पीछे उनका आत्म सम्मान और स्वदेशप्रेम जैसे महत्त्वपूर्ण कारक रहे होंगे। इस संबंध में दक्षिण अफ्रीका आगमन के तुरंत बाद का प्रिटोरिया ट्रेन से जाते हुए उनका अनुभव उल्लेखनीय है। 'सत्य के प्रयोग' में वो लिखते हैं –''या तो मुझे अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए या लौट जाना चाहिए, नहीं तो जो अपमान हों, उन्हें सहकर प्रिटोरिया पहुँचना चाहिए। मुकदमा अधूरा छोड़कर भागना तो नामर्दी होगी। मुझे जो कष्ट सहना पड़ा हो सो तो ऊपरी कष्ट है। वह गहाराई तक पैठे हुए महारोग का लक्षण है। यह महारोग है रंग-द्वेष। यदि मुझमें इस गहरे रोग को मिटाने की शक्ति हो, तो उस शक्ति का उपयोग मुझे करना चाहिए। ऐसा करते हुए स्वयं जो कष्ट सहने पड़े सो सब सहने चाहिए और उनका विरोध रंग-द्वेष को मिटाने की दृष्टि से ही करना चाहिए। ''

यह कथन अपने आत्म सम्मान के साथ गिरमिटिया भारतीयों की स्थिति में सुधार के लिए गांधी जी की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। गांधी जी का दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों के प्रति उनके जुड़ाव और विशेष रूप से भारतीय डायस्फोरा के लिए उनकी मार्गदर्शक की भूमिका को एक और प्रकरण के माध्यम से जाना जा सकता है। जब वे भारत में ही थे, उनको पता चला कि अफ्रीका में कुछ प्रवासी भारतीय अपने विद्यार्थियों को फोर्टहेयर कॉलेज में इस कारण से भेजने को तैयार नहीं हैं कि वह शिक्षण संस्थान रंगभेद के शिकार अफ्रीका वासियों के लिए स्थापित किया गया था, जो अफ्रीका वासियों के लिए असम्मानजनक था। इस विषय पर गांधी जी ने त्वरित प्रतिक्रिया दी और यंग इंडिया के पाँच अप्रैल के अंक में लिखा :- अफ्रीकावासी अनेक मामलों में वहाँ बसे भारतीयों से स्वयं को अलग करने में उन भारतीयों की तरह ही सक्षम हैं। भारतीय प्रवासी बहुत लंबे समय तक उनकी सदाशयता और मित्रता के बिना वहाँ नहीं टिक सकते। गिरमिटिया भारतीयों के विरोध में यदि उनके द्वारा कोई आन्दोलन वहाँ शुरू होता है तो यह एक बड़ा दुखद विषय होगा।

यह प्रतिक्रिया इस बात का परिचायक है कि गांधी जी भारतीय प्रवासियों से जुड़े मामलों को लेकर कितना सजग रहते हैं। महात्मा गांधी का स्पष्ट रूप से यह मानना था कि उनकी राजनीतिक विचारधारा के विकास और स्वदेश के लिए प्रेम जाग्रत करने में दक्षिण अफ्रीका के भारतीय प्रवासियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। 11 अप्रैल 1947 को प्रवासियों के प्रमुख दायित्वधारकों वाई.एम.दादू और जी.एम.नायकर से बात करते हुए गांधी कहते हैं –

''सच कहा जाए तो मेरा निर्माण दक्षिण अफ्रीका में ही हुआ। इसलिए जितना हिन्दुस्तान के लिए मेरा प्रेम है, हिन्दुस्तान के प्रश्नों की मुझे चिंता होती है, उतनी ही चिंता मुझे दक्षिण अफ्रीका के भारतीय प्रवासियों की होती है। कारण सत्याग्रह का शस्त्र तो मेरे हाथ वहीं आया और अहिंसक सत्याग्रह में भी सफलता वहीं मिली। उसी के बल पर अपने विचारों में, अपनी श्रद्धा में दृढ़ होता गया।''
(सम्पूर्ण वाङ्मय खंड 87, 274)

भारतीय प्रवासी अध्ययन के दृष्टिकोण

◇◇◇

''सच कहा जाए तो मेरा निर्माण दक्षिण अफ्रीका में ही हुआ। इसलिए जितना हिन्दुस्तान के लिए मेरा प्रेम है, हिन्दुस्तान के प्रश्नों की मुझे चिंता होती है, उतनी ही चिंता मुझे दक्षिण अफ्रीका के भारतीय प्रवासियों की होती है। कारण सत्याग्रह का शस्त्र तो मेरे हाथ वहीं आया और अहिंसक सत्याग्रह में भी सफलता वहीं मिली। उसी के बल पर अपने विचारों में, अपनी श्रद्धा में दृढ़ होता गया।''

◇

से यह कहा जा सकता है कि भारतीय डायस्पोरा के निर्माण में महात्मा गांधी और इसी प्रकार गांधी के निर्माण में भारतीय डायस्पोरा का प्रमुख योगदान रहा। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि अहिंसक सत्याग्रह का दक्षिण अफ्रीका में सफल प्रयोग और साथ ही भारत में किए गए सत्याग्रह आन्दोलनों ने विश्व के अनेक देशों में स्थित भारतीय प्रवासियों को प्रेरणा और संबल प्रदान किया।

अन्य देशों के भारतीय प्रवासियों के लिए महात्मा गांधी जी के कार्य, दक्षिण अफ्रीका के अतिरिक्त दूसरे देशों में स्थित भारतीयों के लिए भी गांधी जी का विशद चिंतन रहा है। यह उनके लेख और भाषणों में कई स्थानों पर मुखरित होता है। सन् 1924 में गांधी जी ने अपने एक भाषण में मॉरिशस के गिरिमिटियों की दुर्दशा पर गहरी चिंता व्यक्त की। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने उन प्रवासियों के सशक्तीकरण के लिए

अनेक प्रयास किए। सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक स्तर पर उनकी समुन्नति के लिए उन्होनें मॉरिशस के बड़े नेताओं जैसे आर.के.बुधन, पी.लुच्माया, जे.एन .राय, बी.बिसुनदयाल आदि से भी मुलाकातें कीं। मॉरिशस में महात्मा गांधी का जन्म दिवस और उनसे जुड़ी अनेक यादें हैं । विशेष रूप से सन् 1902 में मॉरिशस में गांधी जी के आगमन का वर्ष को उत्साह पूर्वक वहाँ मनाया जाता है।

अपने समय में ही फीजी के गिरमिटिया प्रवासियों की दशा को लेकर भी गांधी जागरूक रहे। वहाँ के प्रवासियों के योगदान को उल्लेखित करते हुए मिल्टन और वागले द्वारा संपादित पुस्तक में के ए राय (1993) लिखते हैं कि फिजी में सन् 1834 से चल रहे गिरमिटिया भारतीयों की भर्ती और खराब दशा पर न तो हिन्दुस्तानी राजनीतिज्ञों का और न ही उपनिवेशवाद के समय की भारतीय सरकार का ध्यान गया। यह केवल गांधी ही थे जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर फीजी के मुद्दे पर सत्याग्रह आन्दोलन खड़ा करने की चुनौती दी और जिसके कारण सन् 1917 में गिरमिटियों की भर्तियाँ खत्म हुई और 1920 में गिरमिटिया प्रथा ही फीजी में पूर्णरूप से खत्म कर दी गई।

भारतीय प्रवासियों के लिए 09 जनवरी 1915 का महत्त्व

दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए महात्मा गांधी दो बार 1896 व 1901 में भारत आए थे। पहली बार छः माह के लिए स्वदेश लौटे और अपने दो पुत्रों को नेटाल ले गए। दूसरी बार सपरिवार भारत आए पर इस आश्वासन के साथ ही कि वे दक्षिण अफ्रीका वापिस लौट आएँगें और लौटे भी। तीसरी बार गांधी जी 9 जनवरी 1915 को सदैव के लिए हिन्दुस्तान आ गए। उसी दिन को याद करते हुए भारतीय प्रवासी दिवस मनाया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो वह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थी। जैसा कि हम जानते हैं कि गांधी उस समय गोपाल कृष्ण गोखले के अनुरोध पर भारत लौटे थे । इसमें कोई दो राय नहीं है कि उनका स्वदेश लौटना भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन सहित पूरे भारतीय राजनीति में निर्णायक मोड़ साबित हुआ।

जहाँ तक भारतीय प्रवासियों के लिए गांधी जी का भारत लौटने के विषय महत्व का है इस सम्बंध में हम पूर्व में चर्चा कर ही चुके हैं किस प्रकार उन्होंने गिरमिटिया भारतीयों का नेतृत्व किया। पिछले दशक की शुरुआत से भारत सरकार ने प्रवासियों के सशक्तीकरण के लिए गंभीरता पूर्वक विचार करना प्रारम्भ किया तो पाया कि महात्मा गांधी का बहुआयामी व्यक्तित्व न केवल आधुनिक भारत का बल्कि वर्तमान भारतीय प्रवासियों से जुड़े विभिन्न विषयों, मुद्दों और पक्षों का भी प्रतिनिधित्व कर सकता है। एल एम सिंघवी की अध्यक्षता में भारतीय प्रवासियों से जुड़े मामले के लिए गठित उच्चस्तरीय समिति ने वर्ष 2002 में संस्तुति दी, जिस पर तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने गाँधी जी से जुड़े 09 जनवरी को 'प्रवासी भारतीय दिवस' घोषित कर दिया। गांधी जी को एक महान भारतीय प्रवासी माना गया। वर्ष 2003 से लगातार जनवरी माह में भारत के विभिन्न स्थानों पर प्रवासी दिवस मनाया जाता है। निश्चित रूप से यह दिवस पूरे विश्व में फैले प्रवासी भारतीयों के ज्ञान, विशेषज्ञता और कौशल को एक ही मंच पर लाने के साथ-साथ उनको अपने देश भारत से जोड़ने में समर्थ सिद्ध हो रहा है।

''प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक अमर चिंगारी या रचनात्मक तत्त्व मौजूद हैं, अगर हम इसकी अनदेखी करें तो हम अपनी ही शिक्षा और मानवता के प्रति झूठे एवं बेवफा हो जाएँगे। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' जैसे मानवता के महान सूत्र की अनुभूति आध्यात्मिकता के आधार पर ही हो सकती है। आचार्यश्री के अनुसार आध्यात्मिकता वह तत्त्व है, जो मनुष्य के अंतःकरण में से भ्रष्ट आकांक्षाओं और ओछी मान्यताओं को हटाकर विशाल हृदय, उदार दृष्टिकोण एवं दूरदर्शिता का भावना क्षेत्र में प्रतिस्थापना करता है। यह प्रतिस्थापना ही मानवता का, महानता का, धार्मिकता का, प्रतिनिधित्व करती है। इसको अपनाकर मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य होता है और मनुष्य के आवश्यक सद्गुणों से सम्पन्न होता है।''

- डॉ.एस.राधाकृष्णन
आध्यात्मिक चिंतक व पूर्व राष्ट्रपति

श्री कंदुकूरी वीरेशलिंगम युगीन तेलगू साहित्य : नाटक में नारी समस्याओं का चित्रण तथा नारी जागरण

साहित्यिकी

डॉ. ओरुगंटि सीताराम मूर्ति

पूर्व प्रधानाचार्य,
रेडियो वार्ताकार
भारतीय विद्या केन्द्रम् व
विद्या भारती आंध्र के
कार्यसमिति सदस्य
विचारक व लेखक

संपर्क
मो. 8919360889

सभी साहित्यिक विधाओं में नाटक का स्थान महत्त्वूर्ण है, क्योंकि दृश्य श्रव्य होने के कारण इसका प्रभाव जन-मानस पर अधिक पड़ता है। नाट्यशास्त्र को 'पंचम वेद' कहा गया है। नाटक ऐसी प्रक्रिया है जो कि कम समय में जनजीवन को प्रभावित कर सकती है। इसलिए साहित्याकारों ने अपने भावनाओं को जनमानस में व्याप्त करने के लिए नाटक प्रक्रिया को एक साधन के रूप में मान लिया। तत्कालीन नाटकों का उद्देश्य प्रकट करते हुए प्रसिद्ध साहित्यकार पंडित अंबिकादत्त व्यास लिखते हैं ''ये किसी ऐसी लीला को देखना चाहते हैं जिसमें केवल मनोरंजन ही नहीं बल्कि देशोन्नति अथवा धर्मानंद विषयक कुछ उपदेश भी प्रकट हों।'

वीरेशलिंगम युग के तेलगू नाटककार क्रान्तिकारी विचारों के समाज सुधारक थे। वीरेशलिंगम ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक विषमताएँ जैसे नारी को भोग्य वस्तु के रूप में देखने की प्रवृत्ति, बालविवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह, कन्याशुल्क, वेश्याप्रथा आदि को अपने साहित्य के रूप में लिया। उन्होंने इन विषमताओं से मुक्त होने का संदेश भी अपने नाटकों के माध्यम से समाज के सम्मुख रखा। वे बालविवाह के विरोधी थे। वे स्वयं विधवाविवाह आन्दोलन के अग्रगामी थे। वे अपने तन, मन, धन इसी कार्य में अर्पण करके नारी जाति का उद्धार करना चाहते थे। वीरेशलिंगम ने अपने ''लोकोत्तर विवाहमु'', ''विनोद तरंगिणी'', ''हास्य संजीवनी'', ''उन्मुक्त प्रकापमु'' आदि प्रहसनों में बाल विवाह तथा वृद्ध विवाह से समाज में व्याप्त दोषों का वर्णन किया है।

''विनोद तरंगणी'' नाम प्रहसन में बाल्य विवाह तथा वृद्ध विवाह के कारण स्त्री किस प्रकार हिन्दु पतिव्रताओं के मार्ग से वंचित हो गई इसका विवरण है। वीरेशलिंगम युग में नारी की स्थिति के सुधार का आन्दोलन जोर पकड़ रहा था। तत्कालीन हिन्दु समाज के अग्र वर्ण माने जाने वाले लोगों ने नारी का शोषण धर्मग्रंथों की आड़ में इतना किया कि सभी साहित्यकारों को मुक्त कंठ से इसका विरोध करना पड़ा।

नारी जागरण : वीरेशलिंगम युग में कुछ ऐसे तेलगु नाटकार हुए हैं, जिन्होंने नारी समस्याओं के अतिरिक्त नारी जागरण पर प्रकार डाला है। उनमें से पानुगंटिलक्ष्मी नरसिंहराव का नाम सर्वोपरि है। उन्होंने अपने ''चूड़ामणि'' नाटक में भारतीय ललनाओं को वीर नारियों के रूप में प्रतिष्ठित किया। नारी केवल भोग्या और अबला नहीं है बल्कि वह सबला है। आवश्यकता पड़ने पर वह पुरुष से भी अधिक वीरता दिखा सकती है। नरसिंहराव जी ने अपने नाटक ''चूड़ामणि'', ''कोकिला'', ''पद्मिनी'' आदि नाटकों में नारी जागरण सम्बन्धी अपने विचार व्यक्त किया है। उन्होंने नारियों में अंतर्निहित क्षमता तथा कुशाग्र बुद्धि आदि पर बल देते हुए उन्हें शक्ति प्रदायिनों के रूप में चित्रित किया है। चूड़ामणि नाटक में

स्त्री राज्य की रानी ''पद्मावती'' है। उनके राज्य पर विनयादित्य नामक राजा आक्रमण कर देता है। युद्ध के समय पद्मावती युद्ध के सभी विधाओं में जैसे तलवार चलाने में, भाले चलाने में समान कुशलता दिखाती है। विनयादित्य को पद्मावती पर जीत प्राप्त करना असम्भव हो जाता है।पद्मावती का कथन है कि ''युवतियाँ प्रशांत बुद्धि और श्रद्धा के साथ सभी विधाएँ सीखकर देशभक्ति से परिप्लावित हो जाती हैं और दीन-हीनों की सेवा में प्रवृत्त हो सकती हैं। साहित्य क्षेत्र के साथ युद्ध क्षेत्र में, शासन करने में, सभाओं में भाग लेने में, देश शासन आदि की व्यूह रचना आदि में भी भाग लेकर विश्व में अपना आलोक फैला सकती हैं।

पानुगंटि ने अपने ''कोकिला'' नाटक में भारतीय नारी के पातिव्रत का चित्रण किया है। साथ ही साथ नारी की स्वतंत्रता पर भी बल दिया है। विवाह स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से आवश्यक है। इसलिए वर को चुनने के लिए वधू को भी स्वतंत्रता की आवश्यकता है। ''कोकिला'' नाटक में बुद्धिमती राजकुमार से स्पष्ट रूप से कहती है 'आप महाराजा है। सर्वगुण सम्पन्न हैं पर आप से प्यार नहीं कर सकती। मेरे प्रेमी दृष्ट न होने पर भी मेरे लिए प्रिय हैं। वे असुन्दर हो सकते हैं, लेकिन वही मेरे लिए कामदेव के समान है।' पानुगुंटि जी के पद्मिनी नाटक में नायिका पद्मिनी कहती है ''स्त्री पुरुष दोनों के लिए विवाह के समय सावधानी एवं अत्यंत जागरूकता से निर्णय लेने का समय है। ऊपर से नीचे गिरने पर भी किसी न किसी प्रकार शरीर की रक्षा कर सकते हैं पर भ्रम में अयोग्य वर से विवाह निर्णय हो जाए तो बाद में उससे छुटकारा नहीं मिलेगा। अग्नि-ज्वाला का आलिंगन स्त्री के लिए संभव है लेकिन अयोग्य पति को देखा भी नहीं जाता।''

इस प्रकार वीरेशलिंगम युग के नाटकों में नारी के सुशील तथा सशक्त स्वरूप पर समान रूप से प्रकाश डाला गया है। इस युग के नाटककारों ने नारी जागरण को प्रस्तुत करने के लिए इतिहास का भी सहारा लिया है।

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष

सूर्य के रहस्यों को सुलझाने लगा भारत की बेटी सुश्री अंशु का आविष्कार

रेडियो स्पेक्ट्रम पोलरीमीटर नामक जो यंत्र विकसित किया गया है वह सूर्य के रहस्यों को समझने में सहायक व विवरण जुटाने का कार्य कर रहा है। सूर्य ग्रह पर होने वाले विस्फोटों की जानकारी इसके माध्यम से दर्ज की जा रही है। सूर्य से आने वाली चुम्बकीय तरंगों के अध्ययन पर आधारित यह शोध 'एस्ट्रोफिजिकल जर्नल अमेरिका' और 'सोलर फिजिक्स जर्नल' में प्रकाशित हुआ है। सुश्री अंशु ने बताया है कि सूर्य के रहस्य को समझना कठिन है। दुनिया भर के वैज्ञानिक इसके बारे में जानने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। सूर्य की गतिविधियों और धरती पर पड़ने वाले प्रभावों को जानने के लिए यह यंत्र रेडियो स्पेक्ट्रो पोलरीमीटर को विकसित किया हूँ। इस यंत्र से ही पता चला कि चार साल में सूर्य पर अब तक 50 से अधिक विस्फोट हो चुके हैं।

सुश्री अंशु ने यह भी बताया कि इस यंत्र को जून 2015 में रेडियो एस्ट्रोनोमी फील्ड स्टेशन गौरीबिदानूर, कर्नाटक में स्थापित किया गया है। इससे मिलने वाले परिणामों पर आधारित शोध 2019 में अन्तरराष्ट्रीय जनरल में प्रकाशित हुआ। यह यंत्र सूर्य से आने वाली विद्युत चुम्बकीय तरंगों को रिकार्ड कर इनका आकलन करने में सहायता प्रदान करता है। इससे धरती के तापमान , मौसम, जनजीवन पर प्रभाव और ऐसे अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों में पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। सूर्य के रेडियो वेवलेंथ, कोरोनल मास इजेक्शन और उससे जुड़े पाँच बड़े विस्फोटों का अध्ययन किया। इन विस्फोटों के कारण रेडियो एक्टिव उत्सर्जन और चुम्बकीय तरंगों पर इसके प्रभाव के अलावा सूर्य के कोरोना (सतह) पर मैग्नेटिक फील्ड में आए परिवर्तन को समझने पर इनका शोध केन्द्रित था।

वर्तमान में सुश्री अंशु सूर्य पर होने वाले इन स्थलीय परिवर्तनों का अध्ययन कर रही हैं। उन्होंने पता लगाया कि जब सूर्य की मैग्नेटिक फील्डलाइन टूटती या जुड़ती है तो उसकी सतह पर विस्फोट होता है। कोरेनल मॉडलिंग से डाटा संग्रहण के जरिए वह उन सम्भावनाओं को जानने की कोशिश में हैं जिनसे सूर्य की सतह पर होने वाली इन घटनाओं के कारण और समय की सही जानकारी मिल सके। जंतु विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर चन्द्रमा सिंह की बेटी सुश्री अंशु के द्वारा बताया गया कि उन्हें बचपन से ही सूर्य में रुचि थी। माँ सविता शिक्षा पदाधिकारी थीं, उन्होंने अपनी बेटी को सदा प्रोत्साहन दिया।

जिला-पूर्वी चम्पारण (बिहार) के रक्सौल अनुमंडल निवासी सुश्री अंशु ने 2012 में जयपुर से इंजीनियरिंग के बाद इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ ऐस्ट्रोफिजिक्स बेंग्लुरू से प्रो. आर. रमेश और डॉ. सी. कार्थीरावन के निर्देशन में सोलर रेडियो विकिरण और उसके प्रभाव पर शोध किया व 2019 में पी. एचडी. पूरी की। नीदरलैंड में इन्स्टीट्यूट ऑफ रेडियो एस्ट्रोनामी में वह सूर्य के अध्ययन हेतु प्रकल्प पर कार्य कर चुकी हैं। 2019 में इन्टरनेशनल सेंटर फॉर थ्योरेटिकल फिजिक्स, इटली और इन्स्टीट्यूट फॉर स्पेस अर्थ इन्वायरमेंटल रिसर्च नागोया यूनिवर्सिटी, जापान में आयोजित कार्यशाला में उन्होंने इस अध्ययन को पढ़ा।

वर्तमान में अंशु यूरोपियन शोध परिषद् से मिले अनुदान से फरवरी 2020 से हेलिसिंकी विश्वविद्यालय, फिनलैंड में शोधरत हैं।

– विजय कुमार गिरि, साभार दैनिक जागरण

राष्ट्रीय एकात्मता की ओर एक कदम

सामयिक चिंतन

श्री आशुतोष भटनागर
चिंतक व विचारक
पत्र-पत्रिकाओं में लेखन
परामर्श : जम्मू-कश्मीर
अध्ययन केन्द्र
समसामयिक विषयों पर अनेक
लेख व व्याख्यान विभिन्न पत्र
पत्रिकाओं में प्रकाशित

संपर्क
मो. 9871873686

प्रधानमंत्री जी, आपका हार्दिक अभिनन्दन। ''मैं अपने जीवन में इसी दिन को देखने के लिए प्रतीक्षा कर रही थी।'' पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने अपने असामयिक निधन से ठीक पहले यह ट्वीट किया था। भावुक कर देने वाला यह ट्वीट करोड़ों भारतीयों की भावनाओं को अभिव्यक्त करता है।

पाँच अगस्त को प्रातः भारत के राष्ट्रपति ने संवैधानिक आदेश क्र. 272 जारी किया जिसमें अनुच्छेद 370 के उपबंध 1 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए जम्मू-कश्मीर राज्य सरकार की सहमति से संविधान (जम्मू-कश्मीर में लागू) आदेश 2019 के लागू होने की अधिसूचना जारी की गई।

यह बिलकुल वही संवैधानिक प्रक्रिया थी जिसका पालन करते हुए 1954 का आदेश जारी किया गया था। नए आदेश ने 14 मई 1954 को जारी किए गए आदेश को निरस्त कर दिया। इसी प्रक्रिया का उपयोग करते हुए, अनुच्छेद 367 में उपबंध 4 जोड़ा गया, जिसके अनुसार जम्मू-कश्मीर भी राज्यों की सामान्य सूची में शामिल हो गया। इसका आशय यह है कि संसद द्वारा बनाए जाने वाला कोई भी नियम अथवा संशोधन संघ में शामिल किसी भी अन्य राज्य की भाँति जम्मू-कश्मीर पर भी लागू होंगे। इसके लिए राज्य की विधानसभा की सहमति की आवश्यकता नहीं होगी। जम्मू-कश्मीर राज्यों की सामान्य सूची में शामिल न होने के कारण धारा 35 ए हटने से पहले, भारतीय संविधान में किया गया कोई भी संशोधन अथवा नियम राज्य में स्वतः लागू नहीं होता था। स्थानीय राजनैतिक दलों द्वारा इस व्यवस्था को ही राज्य का विशेष दर्जा बता कर लोगों में अलगाव का भाव पैदा किया जाता था।

इसी के साथ, राज्य की विधान सभा में अब राज्य संविधान सभा की शक्तियाँ विहित होंगी। पहले विधानसभा राज्यपाल को अपनी सिफारिश भेजती थी जिसे राज्यपाल महामहिम राष्ट्रपति को आदेश जारी करने के लिए अग्रेषित करते थे। अब यह कार्य अन्य राज्यों की तरह विधान सभा के स्थान पर राज्य मंत्रिमंडल कर सकेगा।

संसद में सरकार ने दो विषय विचारार्थ प्रस्तुत किए। अनुच्छेद 370 के उपबंध 2 व 3 को समाप्त कर दिया गया, जिसके अनुसार अनुच्छेद 370 की समाप्ति अथवा संशोधन के लिए राज्य संविधान सभा की सिफारिश आवश्यक थी। अनुच्छेद 370 का उपबंध 1 अभी भी लागू है जिसका उपयोग कर राष्ट्रपति ने 2019 का संवैधानिक आदेश जारी किया है।

एक अन्य प्रस्ताव लाकर केन्द्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर राज्य को विभाजित कर दो नए केन्द्र शासित राज्यों का गठन किया। लद्दाख को बिना विधानसभा के केन्द्र शासित राज्य का दर्जा दिया गया। लेह व कारिगल पर्वतीय विकास परिषदें यथावत काम करती रहेंगी। वही जम्मू-कश्मीर केन्द्र शासित प्रदेश में विधान सभा होगी। जिसमें परिसीमन के पश्चात् सीटों की संख्या 114 तक बढ़ाई जा सकेगी। दोनों ही के प्रशासनिक प्रमुख उपराज्यपाल होंगे।

संविधान सभा में हुई इस चर्चा को देखें तो स्पष्ट होता है कि अनुच्छेद 370 को

भारतीय संविधान में जोड़ा गया था ताकि देश के संविधान के प्रावधान राज्य में लागू किए जा सकें किन्तु उसका सहारा लेकर अनेक प्रावधान पीछे के दरवाजे से लागू कर दिए गए। 1954 को जारी किए गए आदेश ने एक ओर देश के नागरिकों के संविधान प्रदत्त अधिकारों का हनन किया वहीं दूसरी ओर राज्य के निवासियों को मुख्य धारा से वंचित रखा। अनुच्छेद 370 के प्रश्न पर न बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर सहमत थे और न ही सरदार वल्लभभाई पटेल। इसके साथ संविधान सभा के अधिकांश लोग भी सहमत नहीं थे। लेकिन उस समय के नेतृत्व की इच्छा के चलते अस्थायी अनुच्छेद के रूप में 370 को संविधान में शामिल करने का निर्णय लिया गया। गोपालास्वामी अयंगार ने अनुच्छेद ड्राफ्ट 306 ए जो बाद में अनुच्छेद 370 बना को संविधान सभा में रखते हुए बड़े ही स्पष्ट शब्दों में बताया था कि ''यह अनुच्छेद अस्थायी है।'' वास्तव में पंडित नेहरू का भी यही भाव था। जिससे तात्कालिक परिस्थिति के कारण यह अस्थायी रखा गया। इसी बीच एक अन्य दुर्भाग्यपूर्ण कदम उठाया गया, शेख के दबाव में महाराजा हरि सिंह को राज्य से बाहर जाने के लिए विवश किया गया। महाराजा ने सरदार वल्लभभाई पटेल को भेजे पत्र में लिखा कि 'मैने ये आपके कहने पर किया था और अब आप मुझे ही जाने को कह रहे हैं।'' उन्होंने यह भी कहा कि ''शेख हर बार धोखा दे रहा है।'' 1952 में महाराजा हरिसिंह ने तत्कालीन राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद को भेजे एक विस्तृत पत्र में कहा कि ''नेहरू और शेख अब्दुल्ला की साजिशों के चलते अब वे केवल नाम के महाराजा रह गए हैं।''

> ◇◇◇
>
> ***पूरे सदन में ही अनुच्छेद ३७० को हटाने के लिए सहमति बन गई थी तब उस समय के गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नंदा ने कहा कि जो भावनाएँ प्रकाशवीर शास्त्री के मन में हैं, वे हमारे मन में भी हैं। हम जल्दी कुछ करना चाहते हैं, पर तरीका ठीक होना चाहिए, ज्यादा अच्छा होना चाहिए। बावजूद इसके कॉंग्रेस ने इस विधेयक के विरोध में व्हिप जारी किया***
>
> ◇

कुल मिलाकर जम्मू-कश्मीर में अन्तरराष्ट्रीय शक्तियाँ षड़यंत्र कर रही थीं जिसमें शेख अब्दुल्ला उनका मोहरा बने थे। यह बात नेहरू जी भी समझ गए थे। इसलिए 1954 में राष्ट्रपति के आदेश के बाद भारतीय संविधान को जम्मू-कश्मीर में लगाने की प्रक्रिया शुरु हुई। इसके बाद ही कैग, निर्वाचन आयोग और उच्च न्यायालय जैसी संस्थाएँ जम्मू-कश्मीर में स्थापित हुईं। लाल बहादुर शास्त्री जी के प्रधानमंत्रित्व काल में गति फिर से तेज हुई। इसके बाद ही लोकसभा का प्रत्यक्ष चुनाव वहाँ होने लगा। 1962 से पहले लोक सभा के सदस्य राज्य सभा की भाँति ही अप्रत्यक्ष रूप से विधानसभा द्वारा चुने जाते थे।

1964 में उत्तर प्रदेश से निर्दलीय सांसद प्रकाशवीर शास्त्री द्वारा प्रस्तुत निजी विधेयक पर संसद में हुई चर्चा देश की भावना को स्पष्ट करती है। जिसमें सदन के सब सदस्यों ने एकमत होकर अनुच्छेद 370 को हटाने की बात कही।

कॉंग्रेस, समाजवादी, कम्युनिस्ट, जनसंघ और निर्दलीय सभी सांसद अनुच्छेद 370 को संविधान से हटाने के पक्ष में थे। इस बिल के समर्थन में श्री एच.एन.मुखर्जी, श्री सरजू पांडेय, श्री मधु लिमये और श्री राम मनोहर लोहिया जैसे दिग्गज सांसदों ने अनुच्छेद 370 हटाने के समर्थन में वक्तव्य दिए।

जम्मू-कश्मीर के श्री अब्दुल गनी गोनी ने तो यह भी कहा कि ''जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन प्रधानमंत्री बख्शी गुलाम मोहम्मद ने अनुच्छेद 370 हटाने के लिए प्रस्ताव भी पारित किया, पर केन्द्र सरकार इसके लिए राजी नहीं हुई। सरकार पश्चमी देशों को या पाकिस्तान को खुश रखना चाहती है। केन्द्र सरकार और कॉंग्रेस ने कश्मीर के लोगों के साथ न्याय नहीं किया। उन्होंने कॉंग्रेस और विपक्ष दोनों ही सांसदों से ३७० को हटाने के लिए इस विधेयक के पक्ष में मत डालने कि प्रार्थना की।

पूरे सदन में ही अनुच्छेद 370 को हटाने के लिए सहमति बन गई थी तब उस समय के गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नंदा ने कहा कि जो भावनाएँ प्रकाशवीर शास्त्री के मन में हैं, वे हमारे मन में भी हैं। हम जल्दी कुछ करना चाहते हैं, पर तरीका ठीक होना चाहिए, ज्यादा अच्छा होना चाहिए। बावजूद इसके कॉंग्रेस ने इस विधेयक के विरोध में व्हिप जारी किया।

श्री शास्त्री ने कॉंग्रेस के ही वरिष्ठ सांसदों के वक्तव्यों का हवाला देते हुए कहा कि कश्मीर के प्रधानमंत्री श्री सादिक भी धारा 370 को हटाने के पक्ष में हैं। भारत सरकार के मंत्रिमण्डल के एक सदस्य श्री छागला ने सुरक्षा परिषद् से लौट आने के बाद पार्लियामेंट में अपना पहला वक्तव्य यह दिया था कि 370 को संविधान से हटा देना चाहिए।

◇◇◇

अब देश का दायित्व है कि जम्मू कश्मीर की भूमि, वहाँ के लोग, वहाँ का लोकजीवन, वहाँ की कला और भाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए तत्पर हो। इस प्रक्रिया में से भारत एक एकात्म राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर उभरे, यही फलश्रुति अपेक्षित है। इस दिन को लाने के लिए जिन लोगों ने कष्ट सहे, अपने जीवन को होम कर दिया, आज उनके योगदान का भी स्मरण करना हम सभी का कर्तव्य है।

◇

7 अगस्त 1952 को संसद में ही चर्चा के दौरान् डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के प्रश्न के उत्तर में पंडित नेहरू द्वारा संविधान को गौण और राज्य की जनता को भारत में रहने अथवा न रहने का निर्णय करने के लिए स्वतंत्र बताया गया। उनके अनुसार राज्य की जनता की इच्छा वही थी जो शेख अब्दुल्ला की थी। इस पर डॉ. मुखर्जी ने कहा कि अब हमारे पास जनता के बीच जाकर जनमत निर्माण के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। प्रज्ञा परिषद् के नेतृत्व में चल रहे आन्दोलन को उनका समर्थन प्राप्त हुआ और वह स्वतंत्र भारत का पहला राष्ट्रीय आन्दोलन बन गया। इसी संकल्प के चलते डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने सत्याग्रह किया, जिसका दुखद परिणाम उनकी मृत्यु के रूप समाज को मिला। स्वतंत्र भारत में यह पहला बलिदान था जो जम्मू कश्मीर के लिए दिया गया।

जम्मू-कश्मीर को भारत के साथ एकात्म करने के प्रयास राज्य के अंदर भी चल रहे थे। प्रजा परिषद् का पूरा आन्दोलन एकात्मता का आन्दोलन था। तिरंगा हाथ में लिए भारत का संविधान राज्य में लागू करने की माँग करने वाले हजारों लोगों पर बर्बर अत्याचार किए गए और दिल्ली की नेहरू सरकार ने उन्हें कुचल देने के निर्देश जारी किए थे। सत्याग्रही देशभक्तों पर अनेक जगहों पर लाठियाँ भाँजी गईं, हजारों लोग देशभर में गिरफ्तार कर जेलों में ठूंसे गए जिनमें बड़ी संख्या में महिलाएँ भी थीं। जम्मू में जगह-जगह तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला के आदेश पर पुलिस ने गोली चलाई जिसमें 17 नागरिकों की मौत हुई। जली हुई लाशें पुलिस की बर्बरता की कहानियाँ कह रही थीं। देशभक्तों के हाथों में थमे तिरंगे दिल्ली में बैठे काँग्रेस नेतृत्व का ध्यान आकर्षित करने विफल रहे। तथ्य बताते हैं कि कश्मीर घाटी की जनता भी भारत से अलग होने के पक्ष में नहीं थी। प्रसिद्ध फिल्मकार ख्वाजा अहमद अब्बास ने पूरी कश्मीर घाटी में भ्रमण करने के बाद कहा की कश्मीरी भारतीय हैं। लेकिन जनता के इच्छा के विरूद्ध निजी राजनैतिक हित के लिए अनुच्छेद 370 की आड़ में ऐसे प्रावधान राज्य में लागू किया गया। जो मुख्य धारा से काटने में सहायक थे। राज्य की जनता को अलग-थलग करने के इस षड्यंत्र का अंतिम परिणाम वही होना था जो हमने ५ अगस्त २०१६ को घटते हुए देखा।

अनुच्छेद 370 का हटना समय की माँग थी । राज्य की जनता के साथ हो रहे अन्याय को आखिर कब तक होने देते। यह कोई विजय का उत्सव नहीं है बल्कि यह राज्य की जनता के लोकतांत्रिक अधिकार और मानवीय गरिमा को सुनिश्चित किए जाने के दायित्व का निर्वहन हैं, जिसे बहुत पहले ही हो जाना चाहिए था।

अब देश का दायित्व है कि जम्मू कश्मीर की भूमि, वहाँ के लोग, वहाँ का लोकजीवन, वहाँ की कला और भाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए तत्पर हो। इस प्रक्रिया में से भारत एक एकात्म राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर उभरे, यही फलश्रुति अपेक्षित है। इस दिन को लाने के लिए जिन लोगों ने कष्ट सहे, अपने जीवन को होम कर दिया, आज उनके योगदान का भी स्मरण करना हम सभी का कर्तव्य है।

एक व्यथित माता के द्वारा प्रथम प्रधान मंत्री को लिखा गया पत्र

मेरे बेटे की मृत्यु रहस्यमय हालतों में हुई है, इससे ज्यादा स्तब्ध करने वाली और हैरानी की बात क्या हो सकती है कि उसे हिरासत में लिए जाने के बाद से कश्मीर सरकार की तरफ से पहली जानकारी बस यही मिली कि मेरा बेटा अब जीवित नहीं है, यह सूचना भी पूरे दो घंटे बाद और यह संदेश भी कितने क्रूर और गुप्त रूप में पहुँचाया गया! हिरासत से अस्पताल ले जाने के बारे में मेरे बेटे ने जो तार भेजा था, वह भी मुझे उसकी मृत्यु के हृदय विदारक समाचार के बाद मिला। यह पक्की जानकारी है कि मेरे बेटे को वहाँ हिरासत में शुरु से ही यातना दिया गया और अच्छे तरह से उसका देखभाल नहीं हुआ। वह वहाँ कई बार लम्बे समय तक बीमार पड़ा। मैं पूछती हूँ कि कश्मीर सरकार या आपकी केन्द्र की सरकार ने उसके बारे में किसी भी तरह की जानकारी मुझे या मेरे परिवार को क्यों नहीं दी?

-डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की माता जी द्वारा लिखे गए हृदय विदारक पत्र का अंश (श्री तथागत राय जी के पुस्तक के अंश)

उसकी माँ

धरोहर

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
प्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता आदि सभी विधाओं में रचना एवं संपादन कार्य

दोपहर को जरा आराम करके उठा था। अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में खड़ा-खड़ा धीरे-धीरे सिगार पी रहा था और बड़ी-बड़ी अलमारियों में सजे पुस्तकालय की ओर निहार रहा था। किसी महान लेखक की कोई कृत्ति उनमें से निकलकर देखने की बात सोच रहा था मगर पुस्तकालय के एक सिरे से लेकर दूसरे तक मुझे महान ही महान नजर आए। कहीं गेटे, कहीं रूसो, कहीं मेजिनी, कही नीत्शे, कहीं शेक्सपीयर, कहीं टॉलस्टाय, कहीं ह्यूगो, कहीं मोपासाँ, कहीं डिकेंस, स्पेंसर, मैकाले मिल्टन, मोलियर. . उफ! इधर से उधर तक एक से एक महान ही तो थे! आखिर मैं किसके साथ चंद मिनट मनबहलाव करूँ, यह निश्चय ही न हो सका, महानों के नाम पढ़ते-पढ़ते परेशान सा हो गया।

इतने में मोटर की पों सुनाई पड़ी। खिड़की से झाँका तो सुरमई रंग की कोई फिएट गाड़ी दिखाई पड़ी। मैं सोचने लगा, शायद कोई मित्र पधारे हैं, अच्छा ही है, महानों से जान बची!

जब नौकर ने सलाम कर आने वाले का कार्ड दिया, तब मैं घबराया। उसपर शहर के पुलिस सुपरिटेंडेंट का नाम छपा था। ऐसे बेवक्त ये कैसे आए?

पुलिस-पति भीतर आए। मैंने हाथ मिलाकर, चक्कर खाने वाली एक गद्दीदार कुर्सी पर उन्हें आसन दिया। वे व्यापारिक मुस्कुराहट से लैस होकर बोले, 'इस अचानक आगमन के लिए, आप मुझे क्षमा करें।'

आज्ञा हो! मैंने भी नम्रता से कहा। उन्होंने पॉकेट से डायरी निकाली, डायरी से एक तस्वीर! बोले, 'देखिए इसे, जरा बताइए तो, आप पहचानते हैं? इसको।

हाँ, पहचानता तो हूँ, जरा सहमते हुए मैंने बताया।

''इसके बारे में मुझे आपसे कुछ पूछना है।''

'पूछिए' । इसका नाम क्या है?

''लाल ! मैं इसी नाम से बचपन से ही इसे पुकारता आ रहा हूँ। मगर यह पुकारने का नाम है। एक नाम कोई और है, सो मुझे स्मरण नहीं।''

''कहाँ रहता है यह?'' सुपरिटेंडेंट ने मेरी और आकर पूछा।

''मेरे बँगले के ठीक सामने एक दो मंजिला, कच्चा-पक्का घर है, उसी में रहता है। वह है और उसकी बूढ़ी माँ।''

''बूढ़ी का नाम क्या है?''

''जानकी।''

और कोई नहीं है क्या उसके परिवार में? दोनों का पालन-पोषण कौन करता है?''

''सात-आठ वर्ष हुए, लाल के पिता का देहांत हो गया। अब उस परिवार में वह और उसकी माता ही बचे हैं। उसका पिता जब तक जीवित रहा, बराबर मेरी जमींदारी का मुख्य मैनेजर रहा। उसका नाम रामनाथ था। वही मेरे पास कुछ हजार रुपये जमा कर गया था, जिससे उसका खर्च चल रहा है। लड़का कॉलेज में पढ़ रहा है। जानकी की आशा है, वह साल-दो साल बाद कमाने और परिवार को

सम्भालने लगेगा। मगर क्षमा कीजिए, क्या मैं यह पूछ सकता हूँ कि आप उसके बारे में इतना क्यों पूछताछ कर रहे हैं?

''यह तो मैं आपको नहीं बता सकता, मगर इतना आप समझ लें कि यह सरकारी काम है। इसलिए आज मैंने आपको तकलीफ दी है।''

''अजी इसमें तकलीफ की क्या बात है! हम तो सात पुश्त से सरकार के फरमादार हैं। और कुछ आज्ञा...।''

''एक बात और...'' पुलिस-पति ने गम्भीरतापूर्वक धीरे से कहा, मैं मित्रता से आपसे निवेदन करता हूँ कि आप इस परिवार से जरा सावधान और दूर रहें। फिलहाल इससे अधिक मुझे कुछ कहना नहीं।''

''लाल की माँ''! एक दिन जानकी को बुलाकर मैंने समझाया, ''तुम्हारा लाल आजकल क्या पाजीपन करता है? तुम उसे केवल प्यार ही करती हो न! हूँ! भोगोगी।''

''क्या है, बाबू?'' उसने कहा।

''लाल क्या करता है?''

''मैं तो उसे कोई भी बुरा काम करते नहीं देखती।''

''बिना किए ही सरकार किसी के पीछे पड़ती नहीं।हाँ लाल की माँ! बड़ी धर्मात्मा, विवेकी और न्यायी सरकार है यह। जरूर तुम्हारा लाल कुछ करता होगा।''

''माँ !, माँ ! पुकारता हुआ उसी समय लाल भी आया। लम्बा, सुडौल, सुन्दर, तेजस्वी।''

''माँ''!! उसने मुझे नमस्कार कर जानकी से कहा, ''तू यहाँ भाग आई है! चल तो! मेरे कई सहपाठी वहाँ खड़े हैं, उन्हें चटपट कुछ जलपान करा दे, फिर घूमने जाएँगें!''

''अरे !'' जानकी के चेहरे की झुर्रियाँ चमकने लगीं, कॉपने लगीं, उसे देखकर, ''तू आ गया लाल! चलती हूँ, भैया! पर, देख तो, तेरे चाचा क्या शिकायत कर रहे हैं? तू क्या पाजीपना करता है बेटा?''

''क्या है, चाचा जी?'' उसने सविनय सुमधुर स्वर में मुझसे पूछा, ''मैंने क्या अपराध किया है?''

''मैं तुमसे नाराज हूँ लाल!'' मैंने गम्भीर स्वर में कहा।

''क्यों, चाचा जी?''

''तुम बहुत बुरे होते जा रहे हो, जो सरकार के विरुद्ध षड्यंत्र करने वाले के साथी हो। हाँ तुम हो! देखो लाल की माँ, इसके चेहरे का रंग उड़ गया, यह सोच कर कि यह खबर मुझे कैसे मिली।''

सचमुच एक बार उसका खिला हुआ रंग जरा मुरझा गया, मेरी बातों से! पर तुरंत ही वह सम्भला।

''आपने गलत सुना, चाचा जी। मैं किसी षड्यंत्र में नहीं। हाँ मेरे विचार स्वतंत्र अवश्य हैं, मैं जरूरत-बेजरूरत जिस-तिस के आगे उबल अवश्य उठता हूँ। देश की दुरवस्था पर उबल उठता हूँ, इस पशु हृदय परतंत्रता पर।''

''तुम्हारी ही बात सही, तुम षड़यंत्र में नहीं, विद्रोह में नहीं, पर यह बक-बक क्यों? इससे फायदा? तुम्हारी इस बक-बक से न तो देश की दुर्दशा दूर होगी और न ही उसकी पराधीनता। तुम्हारा काम है पढ़ना, पढ़ो। इसके बाद कर्म करना होगा, परिवार और देश की मर्यादा बचानी होगी। तुम पहले अपने घर का उद्धार तो कर लो, तब सरकार के सुधार का विचार करना।''

उसने नम्रता से कहा, ''चाचा जी, क्षमा कीजिए। इस विषय में आपसे विवाद नहीं करना चाहता।''

''चाहना होगा, विवाद करना होगा। मैं केवल चाचा जी नहीं, तुम्हारा बहुत कुछ हूँ। तुम्हें देखते ही मेरे आँखों के सामने रामनाथ नाचने लगते हैं, तुम्हारी बूढ़ी माँ घूमने लगती है। भला मैं तुम्हें बेहाथ होने दे सकता हूँ। इस भरोसे मत रहना।''

इस पराधीनता के विवाद में, चाचा जी, मैं और आप दो भिन्न सिरों पर हैं। आप कट्टर राजभक्त, मैं कट्टर राजद्रोही! आप पहली बात को उचित समझते हैं कुछ कारणों, मैं दूसरी बात को उचित समझता हूँ, दूसरी कारणों से। आप अपना पद छोड़ नहीं सकते, अपनी प्यारी कल्पनाओं के लिए, मैं अपना भी नहीं छोड़ सकता।''

''तुम्हारी कल्पनाएँ क्या हैं, सुनूँ तो! जरा मैं भी जान लूँ कि अबके लड़के कॉलेज की गरदन तक पहुँचते-पहुँचते कैसे-कैसे हवाई किले उठाने के सपने देखने लगते हैं। जरा मैं भी तो सुनूँ बेटा।''

''मेरी कल्पना यह है कि जो व्यक्ति समाज या राष्ट्र के नाश पर जीता हो, उसका सर्वनाश हो जाए।''

जानकी उठ कर बाहर चली, ''अरे! तू तो जमकर चाचा से जूझने लगा। वहाँ चार बच्चे बेचारे दरवाजे पर खड़े होंगे। लड़ तू, मैं जाती हूँ।'' उसने मुझसे कहा ''समझा दो बाबू, मैं तो आप ही कुछ नहीं समझती, फिर इसे क्या समझाऊँगी! उसने फिर लाल की ओर देखा, ''चाचा जो कहें,

मान जा बेटा। यह तो तेरे भले की ही कहेंगे। ''

वह बेचारी कमर झुकाए, उस साठ बरस की वय में भी घूंघट सम्भाले, चली गई। उस दिन उसने मेरी और लाल की बातों की गम्भीरता नहीं समझी।

मेरी कल्पना यह है कि ''ऐसे दुष्ट, राष्ट्र के सर्वनाश के लिए कार्य करने वाले व्यक्ति का नाश मेरे हाथों से हो। '' उसने उत्तेजित स्वर में कहा।

''तुम्हारे हाथ दुर्बल हैं, उनसे जिनसे तुम पंगा लेने जा रहे हो, चर्र-मर्र हो उठेंगे, नष्ट हो जाएँगे।'' मैंने कहा।

''चाचा जी, नष्ट होना, यहाँ का नियम है। जो सँवारा गया है वह बिगड़ेगा भी। हमें दुर्बलता के डर से अपना काम नहीं रोकना चाहिए। कर्म के उस समय हमारी भुजाएँ दुर्बल नहीं, भगवान की सहस्र भुजाओं की सखियाँ हैं।''

''तो तुम क्या करना चाहते हो?

जो भी मुझसे हो सकेगा, करूँगा।'' यानि ''षड्यंत्र'' , जरूरत पड़ी तो वो भी।

''विद्रोह? , ''हाँ अवश्य।'', ''हत्या'' , ''हाँ, हाँ, हाँ.. '' परन्तु बेटा तुम्हारा माथा न जाने कौन सी किताब पढ़ते-पढ़ते बिगड़ रहा है। ''सावधान''!

मेरी धर्मपत्नि और लाल की माँ एक दिन बैठी हुई बातें कर रही थीं कि मैं पहुँच गया। कुछ पूछने के लिए कई दिनों से मैं उसकी तालाश में था।

क्यों लाल की माँ, लाल के साथ किसके लड़के आते हैं, तुम्हारे घर में ?

''मैं क्या जानूँ , बाबू''! उसने सरलता से उत्तर दिया। ''मगर वे सब मेरे लाल की ही तरह मुझे प्यारे दिखते हैं।'' सब लापरवाह! वे हँसते, गाते, और हो-हल्ला मचाते हैं कि मैं मुग्ध हो जाती हूँ।'' मैंने एक ठंढी सांस ली। हूँ ठीक कहती हो। वे बातें कैसी करते हैं, कुछ समझ पाती हो?''

''बाबू, वे लाल की बैठक में बैठते हैं। कभी-कभी जब मैं उन्हें कुछ खिलाने-पिलाने जाती हूँ, तब बड़े प्रेम से मुझे ''माँ'' कहते हैं। मेरी छाती फूल उठती है मानो वे सब मेरे ही बच्चे हैं। ''

''हूँ। '' मैंने फिर साँस ली।

एक लड़का उनमें से बहुत ही हँसोड़ है। खूब तगड़ा और बली दिखता है। लाल कहता है कि वह डंडा लड़ने में, दौड़ने में, घूँसेबाजी में, खाने में, छेड़खानी करने में और हो-हो, हा-हा कर हँसने में समूचे कॉलेज में फर्स्ट है। उसी लड़के ने एक दिन, जब मैं उन्हें हलवा परोस रही थी, मेरे मुँह की ओर देखकर कहा, ''माँ''! तू ठीक भारत माता सी लगती है। तू बूढ़ी, वह बूढ़ी! उसका उजला हिमालय हैं तेरे केश के समान! हाँ! नक्शे से साबित करता हूँ, तू भारत माँ है। सिर तेरा हिमालय, माथे की दोनों गहरी बड़ी रेखाएँ गंगा और यमुना नदी, यह नाक विंध्याचल, ठोढ़ी कन्याकुमारी तथा छोटी बड़ी झुर्रियाँ व रेखाएँ भिन्न-भिन्न पहाड़ व नदियाँ हैं। जरा मेरे पास आ, मेरे! तेरे केशों को पीछे से आगे बाएँ कंधे पर लहरा दूँ तो वह बर्मा बन जाएगा। बिना उसके भारत माँ का शृंगार शुद्ध न होगा।''

जानकी उस लड़की की बातें सोच गद्-गद् हो उठी, ''बाबू ऐसा ढीठ लड़का है! सारे बच्चे हँसते रहे और उसने मुझे पकड़, मेरे बालों को बाहर कर अपना बर्मा तैयार कर लिया!''

उसकी सरलता मेरी आँखों में आँसू बनकर छा गई। मैंने पूछा, ''लाल की माँ, और भी वे कुछ बातें करते हैं? लड़ने की, झगड़ने की, गोली या बँदूक की?''।

''अरे, बाबू,'' उसने मुस्कुराकर कहा, ''वे सभी बातें करते हैं। उनकी बातों का कोई मतलब थोड़े ही होता है। सब जवान है, लापरवाह हैं। जो मुँह में आए बक देते हैं। कभी-कभी तो पागलों की सी बातें करते हैं। महीना भर पहले एक दिन लड़के बहुत उत्तेजित थे। न जाने कहाँ, लड़कों को सरकार पकड़ रही है। मालूम नहीं, पकड़ती भी है या वे यों ही गप्पे हाँकते थे। मगर उस दिन वे यही बक रहे थे, पुलिस वाले केवल संदेह पर भले आदमियों के बच्चे को त्रस्त कर देते हैं, मारते हैं, सताते हैं। यह अत्याचारी पुलिस की नीचता है। ऐसी नीच शासन प्रणाली को स्वीकार करना अपने धर्म को, कर्म को, आत्मा को, परमात्मा को भूलाना है। धीरे-धीरे घुलाना-मिलाना है।''

एक ने उत्तेजित भाव से कहा, अजी, ये परदेशी कौन लगते हैं हमारे, जो बरबस राजभक्ति बनाए रखने के लिए हमारी छाती पर तोप का मुँह लगाए अड़े हैं और खड़े हैं। उफ! इस देश के लोगों के हिये की आँखें मुँद गईं हैं। तभी तो इतने जुल्मों पर भी आदमी, आदमी से डरता नहीं है। ये लोग अपनी शरीर की रक्षा के लिए अपनी आत्मा को चिता पर सँवारने के लिए घुमते-फिरते हैं। नाश हो इस परतंत्रवाद का !!

दूसरे ने कहा, ''लोग ज्ञान न पा सकें, इसलिए इस सरकार ने हमारे पढ़ने-लिखने के लिए साधनों को अज्ञान से भर रखा

है। लोग वीर और स्वाधीन न हों सकें, इसलिए अपमानजनक और मनुष्यताहीन नीति-मर्दक कानून गढ़े हैं। गरीब को चूसकर, सेना के नाम पर पले हुए पशुओं को शराब से, कबाब से, मोटा-ताजा रखती है। यह सरकार! धीरे-धीरे जोंक की तरह हमारे धर्म, प्राण और धन चूसती चली जा रही है, यह शासन प्रणाली!

ऐसे अंट-संट ये बातूनी बका करते हैं, बाबू! जभी चार छोकरे जुटे, तभी यही चर्चा।

लाल के साथियों का मिजाज भी उसी-सा अल्हड़-बिल्हड़ मुझे मालूम पड़ता है।

''ये लड़के ज्यों, ज्यों पढ़ते जा रहे हैं, त्यों-त्यों बक-बक में बढ़ते जा रहे हैं। लाल की माँ ने कहा।

''यह बुरा है, लाल की माँ!'' मैंने गहरी साँस ली।

जम्मींदारी के कुछ जरूरी काम से चार-पाँच दिनों के लिए बाहर गया था। लौटने पर बँगले में घूसने से पूर्व लाल के दरवाजे पर नजर पड़ी तो वहाँ एक भयानक सन्नाटा सा नजर आया। जैसे घर उदास हो, रोता हो! भीतर आने पर मेरी धर्मपत्नि मेरे सामने उदास मुख खड़ी हो गई।

''तुमने सुना''

''नहीं तो, कौन सी बात'' ? , लाल की माँ पर भयानकर विपत्ति टूट पड़ी है।''

मैं कुछ-कुछ समझ गया, फिर भी विस्तृत विवरण जानने को उत्सुक हो उठा, क्या हुआ? जरा साफ-साफ बताओ।''

''वही हुआ जिसका तुम्हे भय था। कल पुलिस की एक पलटन ने लाल का घर घेर लिया था। बारह घंटे तक तलाशी हुई। लाल उसके बारह-पन्द्रह साथी, सभी पकड़ लिए गए हैं। सबके घरों से भयानक-भयानक चीजें निकली हैं। ''

''लाल के यहाँ''?

''उसके यहाँ दो पिस्तौल, बहुत से कारतूस और पत्र पाए गए हैं। सुना है उन पर हत्या षड्यंत्र, सरकारी राज्य उलटने की चेष्टा आदि के अपराध लगाए गए हैं?''

''हूँ'' मैंने ठंढी साँस ली, ''मैं तो महीनों से चिल्ला रहा था कि वह लौंडा धोखा देगा। अब बूढ़ी बेचारी मरी। वह कहाँ है? तलाशी के बाद तुम्हारे पास आई थीं?''

''जानकी मेरे पास कहाँ आई! बुलवाने पर भी कल नकार गई। नौकर से कहलाया, परांठे बना रही हूँ, हलवा, तरकारी अभी बनाना है, नहीं तो, वे बिल्हड़ बच्चे हवालात में मुरझा न जाएँगे। जेल वाले और उत्साही बच्चों की दुश्मन यह सरकार उन्हें भूखों मार डालेगी। मगर मेरे जीते-जी यह नहीं होने का।''

''वह पागल है, भोगेगी।'' मैं दुख से टूटकर चारपाई पर गिर पड़ा। मुझे लाल के कर्मों पर घोर खेद हुआ।

इसके बाद प्रायः एक वर्ष तक यह मुकदमा चला। कोई भी अदालत के कागज उलटकर देख सकता है, सी.आई.डी. ने और उनके प्रमुख सरकारी वकील ने उन लड़कों पर बड़े-बड़े दोषारोपण किए। उन्होंने चारों ओर गुप्त समितियाँ कायम की थीं। खर्चे और प्रचार के लिए डाके डाले थे, सरकारी अधिकारियों के यहाँ रात में छापा मारकर शस्त्र एकत्र किए गए। उन्होंने न जाने किस पुलिस के दरोगा को मारा था और जाने किस पुलिस सुपरिटेंडेंट को। ये सभी बातें सरकार की ओर से प्रमाणित की गई।

उधर उन लड़कों के पीठ पर कौन था ? प्रायः कोई नहीं। सरकार के डर के मारे पहले तो कोई वकील ही उन्हें नहीं मिल रहा था, बाद में एक बेचारा मिला भी तो, 'नहीं' का भाई। हाँ उनकी पैरवी में सबसे अधिक परेशान वह बूढ़ी रहा करती। वह लोटा, थाली, जेवर आदि बेंच-बेंच कर सुबह-शाम उन बच्चों को भोजन पहुँचती। फिर वकीलों के यहाँ जाकर दाँत निपोरती, गिड़गिड़ाती, कहती, ''सब झूठ है। न जाने कहाँ से पुलिस वालों ने ऐसी चीजें हमारे घरों से पैदा कर दी हैं। वे लड़के केवल बातूनी हैं। हाँ, मैं भगवान का चरण छूकर कह सकती हूँ, तुम जेल में जाकर देख आओ वकील बाबू। भला, फूल से बच्चे हत्या कैसे कर सकते हैं? उसका तन सूखकर काँटा हो गया, कमर झुक कर धनुष-सी हो गई, आँखे निस्तेज, मगर उन बच्चों के लिए दौड़ना, हाय-हाय करना उसने बंद नहीं किया। कभी-कभी सरकारी नौकर, पुलिस या वार्डन झुंझलाकर उसे झिड़क देते, धकिया देते।

उसको अंत तक यह विश्वास रहा कि सब पुलिस की चाल है। अदालत में जब दूध का दूध और पानी का पानी किया जाएगा, तब वे बच्चे जरूर बेदाग छूट जाएँगे। वे फिर उसके घर में लाल के साथ आएँगे। उसे 'माँ' कहकर पुकारेंगे।

मगर उस दिन उसकी कमर टूट गई, जिस दिन ऊँची अदालत ने भी लाल को, उस बंगड़ लठैत को तथा दो और लड़कों को फाँसी और दस-दस वर्ष की व सात

वर्ष तक की सजाएँ सुनाई गईं।

वह अदालत के बाहर झुकी खड़ी थी। बच्चे बेड़ियाँ बजाते, मस्ती से झूमते बाहर आए सबसे पहले उस बांगड़ की नजर उसपर पड़ी।

''माँ ! वह मुस्कुराया, ''अरे हमें हलवा तो खिला-खिलाकर तूने गधे सा तगड़ा कर दिया है, ऐसा कि फाँसी की रस्सी टूट जाए और हम अमर के अमर बने रहें। मगर तू स्वयं सूख कर काँटा हो गई है। क्यों पगली, तेरे लिए घर में खाना नहीं था क्या?

''माँ! उसके लाल ने कहा, तू भी जल्द वहीं आना जहाँ हम लोग जा रहे हैं। यहाँ से थोड़ी ही देर का रास्ता है, माँ! एक साँस में पहुँचेगी। वही स्वतंत्रता से मिलेंगे। तेरी गोद में खेलेंगे। तुझे कंधे पर उठाकर इधर से उधर दौड़ते फिरेंगे। समझती हैं न वहाँ बड़ा आनन्द है।

''आएगी न माँ?'' बंगड़ ने पूछा।

''आएगी न माँ?'' लाल ने पूछा।

''आएगी न माँ?'' फाँसी दंड प्राप्त दो लड़कों ने भी पूछा।

और वह टुकुर-टुकुर उनका मुँह ताकती रही। ''तुम कहाँ जाओगे पगलों?''

जब से लाल और उसके साथी पकड़े गए, तब से शहर या मुहल्ले का कोई भी आदमी लाल की माँ से मिलने से डरता था। उसे रास्ते में देखकर जाने-पहचाने बंगलें झाँकने लगते। मेरा स्वयं का अपार प्रेम था उस बेचारी बूढ़ी माँ पर, मगर मैं भी बराबर दूर ही रहा। कौन अपनी गरदन मुसीबत में डालता, विद्रोही की माँ से संबंध रखकर?

उस दिन जलपान करने के बाद कुछ देर के लिए पुस्तकालय वाले कमरे में गया। किसी महान लेखक की कोई महान कृति क्षण भर में देखने के लालच से। मैंने मेजिनी की एक जिल्द निकालकर उसे खोला। पहले ही पन्ने पर पेंसिल की लिखावट देखकर चौंका। ध्यान देने पर पता चला, वे लाल के हस्ताक्षर थे। मुझे याद पड़ गई। तीन वर्ष पूर्व उस पुस्तक को मुझसे माँग कर उस लड़के ने पढ़ा था।

एक बार मेरे मन में बड़ा मोह उत्पन्न हुआ उस लड़के के लिए। उसके पिता रामनाथ की दिव्य और स्वर्गीय तस्वीर मेरी आँखों के सामने नाच गई। लाल की माँ पर, उसके सिद्धांतों, विचारों, आचरणों के कारण जो व्रजपात हुआ था, उसकी एक टेस पहुँची मुझे भी, उसके हस्ताक्षर को देखते ही लगी। मेरे मुँह से गम्भीर, लाचार, दुर्बल साँस निकलकर रह गई।

पर दूसरे ही क्षण पुलिस सुपरिटेंडेंट का ध्यान आया। उसकी भूरी, डरावनी, अमानवीय आँखें मेरी ओर ''आप सुखी तो जग सुखी''। आँखों में वैसी ही चमक आ गई जैसे ऊजाड़ गाँव के सिवान में कभी-कभी भुतही चिंगारी चमक जाया करती थी। उसके रूखे फौलादी हाथ, जिनमें लाल तस्वीर थी, मानो गरदन चांपने लगे। मैं मेज पर से रबर(इरेजर) उठाकर उस पुस्तक पर से उसका नाम उधेड़ने लगा। उसी समय मेरी पत्नि लाल के माँ के साथ वहाँ आ गई। उसके हाथ में एक पत्र था। ''अरे ! मैं अपने को रोक न सका। ''लाल की माँ! तुम तो बिलकुल पीली पड़ गई हो। तुम इस तरह मेरी ओर निहारती हो, मानो कुछ देखती ही नहीं। यह हाथ में क्या है?

उसने चुपचाप पत्र मेरे हाथ में दे दिया। मैंने देखा, उस पर जेल की मुहर थी। सजा सुनाने के बाद वहीं भेज दिया गया था, यह मुझे मालूम था। मैं पत्र निकालकर पढ़ने लगा। वह उसकी अंतिम चिट्ठी थी। मैंने कलेजा रूखा कर उसे जोर से पढ़ दिया -

''माँ!

जिस दिन तुम्हें यह पत्र मिलेगा। उसके सवेरे मैं बाल अरुण के किरण-रथ पर चढ़कर उस ओर चला जाऊँगा। मैं चाहता तो अंत समय तुमसे मिल सकता था, मगर इससे क्या फायदा! मुझे विश्वास है कि तुम मेरी जन्म-जन्मांतर की जननी ही रहोगी। मैं तुमसे दूर कहाँ जा सकता हूँ। माँ! जब तक पवन साँस लेता है, सूर्य चमकता है, समुद्र लहराता है, तब तक कौन मुझे तुम्हारी गोद से दूर खींच सकता है?

दिवाकर थमा रहेगा, अरुण रथ लिए जमा रहेगा! मैं बांगड़, वह, यह भी सभी तेरे इंतजार में रहेंगे। हम मिले थे, मिले हैं, मिलेंगे। हाँ, माँ!, तेरा.... लाल।''

क्षणभर बाद हाथ बढ़ाकर मौन भाषा में उसने पत्र माँगा। और फिर, बिना कुछ कहे कमरे के फाटक के बाहर हो गई। डुगुर लाठी टेकती हुई। इसके बाद शून्य सा होकर मैं धम से कुर्सी पर गिर पड़ा। माथा चक्कर खाने लगा। उस पाजी लड़के के लिए नहीं, इस करतूत के लिए भी नहीं, उस बेचारी भोली, बूढ़ी माँ जानकी व लाल की माँ के लिए। आह! वह कैसी स्तब्ध थी। इतनी स्तब्धता किसी दिन प्रकृति को मिलती तो आँधी आ जाती। समुद्र पाता तो बौखला उठता।

जब एक का घंटा बजा, मैं जरा

सुगबुगाया। ऐसा मालूम पड़ने लगा मानो हरारत पैदा हो गई है। माथे में, छाती पर, रग-रग में। पत्नि ने आकर कहा, ''बैठे ही रहोगे! सोओगे नहीं?'' मैंने इशारे से उन्हें जाने का कहा।

फिर मेजिनी की जिल्द पर नजर पड़ गई। उसके ऊपर पड़े रबर पर भी। फिर अपने सुखों की, जमींदारी की, धनिक जीवन की और उस पुलिस-अधिकारी की निर्दय, नीरस, निस्सार आँखों की स्मृति कलेजे में कंपन भर गई। फिर रबर उठाकर मैंने उस पाजी का पेंसिल खचित नाम पुस्तक की छाती पर से मिटा डालना चाहा।

''माँ.... ''

मुझे सुनाई पड़ा। ऐसा लगा, गोया लाल की माँ कराह रही है। मैं रबर हाथ में लिए, दहलते दिल से, खिड़की की ओर बढ़ा। लाल के घर की ओर कान लगाने पर सुनाई न पड़ा। मैं सोचने लगा, भ्रम होगा। वह अगर कराहती होती तो एकाध आवाज और अवश्य सुनाई पड़ती। वह कराहने वाली औरत है भी नहीं । रामनाथ के मरने पर भी आज उस तरह नहीं घिघिआई जैसे साधारण स्त्रियाँ ऐसे अवसरों पर तड़पा करती हैं।

मैं पुनः सोचने लगा। वह उस नालायक के लिए क्या नहीं करती थी! खिलौने की तरह, आराध्य की तरह, उसे दुलारती और सँवारती फिरती थी। पर आह रे छोकरे!

''माँ... ''

फिर वही आवाज। जरूर जानकी रो रही है। जरूर वही विकल, व्यथित, विवश, बिलख रही है। हाय री माँ! अभागिनी वैसे ही पुकार रही है जैसे पाजी गाकर मचलकर, स्वर को खींचकर उसे पुकारता था।

अंधेरा धूमिल हुआ, फीका, पड़ा, मिट चला। उषा पीली हुई, लाल हुई। रवि रथ लेकर वहाँ क्षितिज से उस छोर पर आकर पवित्र मन से खड़ा हो गया। मुझे लाल के पत्र की याद गई।

''माँ...''

मानो लाल पुकार रहा था। मानो जानकी प्रतिध्वनि की तरह उसी पुकार को गा रही थी। मेरी छाती धक्, धक् करने लगी। मैंने नौकर को पुकारकर कहा, देखो तो लाल की माँ क्या कर रही है?

जब वह लौटकर आया, तब मैं एक बार पुनः मेज और मेजिनी के सामने खड़ा था। हाथ में रबर लिए उसी उद्देश्य से। उसने घबराए स्वर से कहा ''हुजुर, उनकी तो अजीब हालात है। घर में ताला पड़ा है और वे दरवाजे पर पाँव पसारे हाथ मे कोई चिट्ठी लिए मुँह खोल कर बैठी, मरी बैठी है। हाँ सरकार, विश्वास मानिए, वे मर गई हैं। साँस बंद है आँखे खुलीं... !

सबमें माँ का रूप समाया

धारणा किया तुम्हीं ने हमको,
पालन किया तुम्हीं ने माँ।
लालन किया, किया ताड़न भी,
मित्र बनी थी तुम ही माँ।
धरती पर तुमने पहुँचाया,
कदम-कदम चलना सिखलाया।
अपने पैरों पर खड़े रहो तुम,
अपना काम करो समझाया।।
सबमें माँ का रूप समाया,
सियाराम मय सब जग पाया।
अनपढ़ का परिचय सुनते थे,
काला अक्षर भैंस बराबर।
माँ ने हर अक्षर देखा,
अक्षर-अक्षर में राम-सियावर।।
इसी 'राम' के साधन बनकर,
हम संतान बढ़े जब आगे।
हर बढ़ने वाले को तुमने,
माँ अपना आशीष लुटाया ।।
सबमें माँ का रूप समाया,
सियाराम मय सब जग पाया।
खुली किताब मिली थी हमको,
माँ के अपने जीवन से।
परहित, कर उपकार न भूल,
यही पाठ कथनी करनी से।।
यौवन और प्रौढ़ता माँ की,
देखी थी हमनें आँखों से।
और बुढ़ापे में हम सबको,
माँ निज बचपन दिखलाया।
सबमें माँ का रूप समाया,
सियाराम मय सब जग पाया।।
भाव यही था माँ के मन में
हर पोथी रामायण है।
दीन-दुःखी हो, धन कुबेर हो,
हर नर में नारायण है।।
इसी भाव से हम सबने
जब देखा अपनी माता को।
गीता, गंगा, गौ, गायत्री, माँ में
भारत माता पाया।

-लक्ष्मीनारायण भाला 'अनिमेष'

मनुष्यता की केन्द्रीय धुरी हैं गुरु नानक के विचार

अध्यात्म

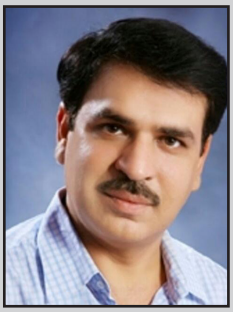

डॉ. हरीश अरोड़ा
युवा आलोचक,
बीस से अधिक पुस्तकों का लेखन-संपादन,अनेक संगोष्ठियों में वक्ता, भारतीय संस्कृति के गहन अध्येता

संपर्क
मो. 8800660646

भारत की यह पवित्रा धरती संतों और महात्माओं की धरती है। उनके विचारों की शुचिता ने ही भारतीय संस्कृति को विश्व में श्रेष्ठतम और औदात्यपूर्ण बनाए रखा है। इनके विचारों के आलोक में ही भारतीय जीवन की सांस्कृतिक विराटता को आध्यात्मिकता का आश्रय मिला। अध्यात्म की इस अद्वितीय-परम्परा ने भारत और भारतीयता को जीवन्त बनाए रखा। इन्हीं महान संतों की शृंखला में सन् 1469 में एक दिव्य आत्मा ने नानक के रूप में भारत में जन्म लिया। उनके जन्म के समय का भारत ऐसा था, जिसमें भारतीय समाज मुगल अताताइयों के अत्याचारों और यातनाओं से पीड़ित था। उस समय एक ओर तो भारतीय समाज में 'अध्यात्म और मनुष्यता' केन्द्रीय धुरी थे, इन्हीं के आलोक में भारतीय जीवन-मूल्यों के संरक्षण का कार्य किया जा रहा था। वहीं दूसरी ओर अध्यात्म की विभिन्न प्रक्रियाओं में कुरीतियों और आडम्बरों के कारण भारत की सांस्कृतिक चेतना में परिवर्तन भी आ रहा था। ऐसे में नानक जैसे संतों ने भारतीय समाज को एक नई दिशा दिखाने का कार्य किया। वे समाज को अपने दृष्टि-बोध से एक ऐसी दार्शनिक चेतना से परिचित कराते दिखाई देते हैं जिसका मूल तो भारतीय दर्शन में ही है किन्तु उसकी नवीन संरचना तात्कालिक समाज की अपनी चैतन्यता में विद्यमान थी।

धार्मिक एवं सामाजिक रूढ़ियों की रुग्णता से मुक्ति के आग्रही संत कवियों ने जैसे भारतीय समाज में नवीन चेतना का संचार किया। इन कवियों ने अपनी रचनाओं में शासक वर्ग की सत्ता के विरुद्ध अपनी लेखनी के स्थान पर परमपिता परमेश्वर की सत्ता के प्रति अपनी अभिव्यक्ति को अधिक प्रश्रय दिया। वैसे भी 'संतन को कहा सीकरी सो काम' की विचारणा पर चलने वाले संत कवियों ने गृहस्थ जीवन जीते हुए भी अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं का विसर्जन कर दिया था। वे यथार्थ जगत में रहते हुए भी मोह-माया के बन्धनों से मुक्त कम संसाधनों में भी संतुष्ट थे। उन्होंने अपनी आत्मा का परमात्मा के प्रति समर्पण कर दिया था।

वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ सम्पूर्ण विश्व में हिंसा और अशांति का आधिपत्य है; व्यक्ति समाज के मध्य भावनात्मक सम्बन्ध क्षीण होते जा रहे हैं ऐसे में भारतीय समाज और विश्व को उन महान संदेशों की आवश्यकता है जिनसे मनुष्यता और नैतिक मूल्यों को बचाया जा सके। तकनीकी और विकास की अंधी दौड़ में मनुष्य का जीवन यांत्रिक होता जा रहा है। तार्किकता ने आस्था और भक्ति पर प्रश्न उठाने आरम्भ कर दिए हैं। बौद्धिक चेतना अपने चरम पर पहुँचकर संवेदनाओं को कटघरे में खड़ा करने का यत्न कर रही है। वहीं दूसरी ओर दलित और वंचित समाज की वर्तमान स्थिति अत्यन्त विकट बनी हुई है। ऐसे में गुरुनानक देव की वाणी और उनके विचार न केवल भारतीय समाज में चेतना का संचार करते दिखाई देती हैं बल्कि आत्मबल भी प्रदान करती है।

गुरु नानक देव के विचारों की आधारभूमि भारतीय जीवन चेतना से निर्मित हुई। भारत की आध्यामिक चेतना की दार्शनिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए गुरु नानक ने भारतीय

जीवन मूल्यों को संरक्षित और प्रचारित करने का महती कार्य किया। गुरबचन सिंह तालिब के अनुसार – 'गुरु नानक उस पंथ का प्रचार कर रहे थे जिसका जन्म और विकास देश की मिट्टी में हुआ, जो मानो चिरन्तन सत्य की दैविक झाँकी के रूप में भारतीय मानस के सामने प्रकट हुआ। इसके समस्त अनिवार्य आधरतत्व तथा विश्वास ऐसे हैं जो सामान्य रूप से उस औसत हिन्दू को मालूम होंगे जिसका विकास अपनी आध्यात्मिक परम्परा को थोड़ा-बहुत समझते हुए हुआ होगा; तथा जिसने अपने ही लोगों के वातावरण से अपने आध्यात्मिक, आत्मिक तथा नैतिक विचारों को प्राप्त किया होगा, न कि आधुनिक शिक्षा से प्राप्त युक्तिपरक (rationalised) धारणाओं से जो विभिन्न स्तरीय बुद्धि वाले लोगों में यथानुसार बंटी रहती है।'[1]

शायद इसी कारण ही भाई गुरुदास जी ने गुरु नानक को अवतारी पुरुष कहा है। जैसे भारतीय पौराणिक गाथाओं में ईश्वर के सगुण रूप की अभिव्यंजना करते हुए कवियों ने उनके अवतारी रूप का वर्णन किया है। उसी तरह भाई गुरुदास ने अपनी 'वार' में नानक को अवतारी प्रभु मानते हुए कहा है –

सुणी पुकार दातार प्रभु,
गुरु नानक जग माँहि पठाया।
चरन धोई रहिरासि करि
चरनामृतु सिक्खा पीलाया।।

x x x x x

कलिजुग बाबे नारिआ,
सतिनाम पढ मंत्रा सुणाया।
कलि तारण गुरु नानक आया।। [2]

वास्तव में गुरु नानक देव केवल

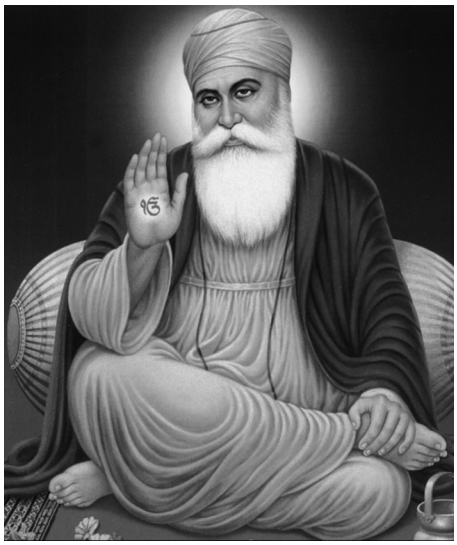

संत कवि नहीं थे। वे अपने समय के समाज की कुरीतियों और रूढ़-परम्पराओं के विरुद्ध संघर्ष भी करते थे। इतना ही नहीं तात्कालिक शासक वर्ग की अनीतियों के विरुद्ध वे स्पष्ट रूप से अपने विचार रखा करते थे। इसीलिए वे अपने समय के क्रांतिकारी कवि कहे जाते थे। उनकी स्पष्टवादी विचारणा के कारण तत्कालीन शासक वर्ग भी उनसे रुष्ट हो गया था। वे तत्कालीन व्यवस्था पर न केवल कटु प्रहार करते वरन् उसका यथार्थ वर्णन भी करते हैं। वे कहते हैं –

कलि काती राजे कासाई
धरम पंख करि उडरिआ
कूडु अमावस सचु, चन्द्रमा
दीसे नाहीं कह चड़िआ। [3]

अर्थात् कलियुग तो एक छुरी के समान है जिसमें राजा कसाई बन चुका है। धर्म पंख लगाकर समाज से उड़कर चला गया है। झूठ और असत्य की काली भयावह अमावस रात चारों ओर है लेकिन सत्य का चन्द्रमा कहीं भी चढ़ता हुआ दिखाई नहीं दे रहा।

वे हिन्दू समाज में संघर्ष की भावना को जागृत करने के लिए तत्पर थे। अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष न करने और पलायनवादी सोच अपनाने के कारण हिन्दुओं पर आक्रमणकारियों के अत्याचार निरन्तर बढ़ रहे थे। अपनी अहिंसावादी नीति के कारण भारतीय संघर्ष करने के स्थान पर जुल्म सहने के आदि हो गए थे –

रत्त पीने राजे सिरे उपरि,
रखी अहि ऐवै जापै भाऊ।
लंबु पापु दुइ राजा महता
कूडु होइआ सिरकार।
कामु नेबु सदि पूछिए वहि
वहि करे बीचारु
अंधी रयति गियान विहूंनी
माहि भरे मुरदास। [4]

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा – 'यह सच है कि जिस समय नानक जी पंजाब में हुए थे, उस समय पंजाब संस्कृत विद्या से सर्वथा रहित, मुसलमानों से पीड़ित था। उस समय उन्होंने लोगों को बचाया।'[5] गुरु नानक ने अपनी वाणी में हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति के मध्य संघर्ष की प्रतिक्रियाओं को अनेक स्थलों पर अभिव्यक्ति दी गई है। मुगल बाबर भारत पर आक्रमण कर भारतीय स्त्रियों और बच्चों पर अत्याचार करने लगा तब वे आक्रोश व्यक्त करते हुए लिखते हैं –

'पाप की जंज लै काबुलहु धाइआ।
जोरी मंगे दान ले लालो।
सरमु धरमु दुइ छय खलोए,
कूडू पिफरे परधनु ए लालो
काजी ब्राह्मण की गल थकी,
अगद पडै सैतानु वै लालो।' [6]

अर्थात् 'हे लालो। वह (बाबर) पाप की बारात लेकर काबुल से दौड़ा आया

है और सबसे बलपूर्वक धन ले रहा है। शर्म और धर्म दोनों छिपकर खड़े हो गये हैं, प्रधानता मिथ्या को प्राप्त हो गई है। काजियों और ब्राह्मणों को कोई नहीं पूछता। विवाह के मंत्र शैतान पढ़ते हैं।'

लेकिन गुरु नानक सामाजिक समरसता और प्रेम के महान उपासक थे। वे संवाद पर बल देते थे। समकालीन समस्याओं के आलोक में गुरु नानक की वाणी को रखा जाए तो उनकी वाणी व विचार मनोवैज्ञानिक रूप से समाज की चिन्ताओं को दूर करता है। वह समय विभिन्न जातियों और सम्प्रदायों का समय था। ऐसे में प्रेम भी स्वतः ही प्राप्त नहीं किया जा सकता था। नानक कहते हैं –

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ।
सिरु धरि तली गली मेरी आउ। [7]

अर्थात् यदि तुम वास्तव में प्रेम का खेल खेलना चाहते हो, तो अपनी हथेली पर अपना सर रखकर आओ, तभी तुम मेरे सत्य के मार्ग पर अपना पैर बढ़ा सकते हो।

गुरु नानक देव ने भी उस परमसत्ता को मूल चेतना स्वीकार किया है। वे इस परमसत्ता को ही 'सत्य' मानते हैं। उनके अनुसार इस मूल चेतना से इतर कुछ भी नहीं है। सब कुछ इसी चेतना का अंश है। यथा –

आपीनै आपु साजिओ
आपीनै रचिओ नाउ।
दुयी कुदरति साजीऐ करि
आसणु डिठो चाउ।
दाता करता आपि तूं
तुसि देवहि करहि पसाउ।
तू जाणोई सभसै दे लैसहि
जिंदु कवाउ करि आसण डिठो चाउ। [8]

उनका मत है कि इस परम चेतना का न तो कोई आरम्भ है और न ही अंत। इसी रचना किसी अन्य ने नहीं की बल्कि यह स्वयं से ही निर्मित है। यह तो स्वयं ही ज्योति-पुंज है, परम देव है। जो अपने जीवन में इस परम-देव को पहचान लेता है वह भी ज्योर्तिमान होकर देव पद को प्राप्त हो जाता है। इस परमसत्ता का कोई रूप नहीं है। यह निराकार, अनुभवातीत परम देव सबको जीवन देता है और सभी इस सत्ता में वास करते हैं।

दीवा बलै अंधेरा जाइ।
वेद पाठ मति पापा खाइ।
उगवै सुरु न जापै चंदु।।
जह गिआन प्रकासु अगिआनु मिटंतु।।
वेद पाठ संसार की कार।
पढ़ि पढ़ि पंडित करहिं वीचार।।
बिनु बूझे सभ होई खुआर।
नानक गुरमुखि उतरसि पार।। [9]

जैसे दीपक के जलने पर अंधकार स्वयं ही नष्ट हो जाता है। वेद पाठ पाप वाली बुद्धि को खा जाता है। सूर्य के उदय होने पर, चन्द्रमा दिखाई नहीं देता, जहाँ ज्ञान का प्रकाश होता है वहाँ अज्ञान स्वतः ही मिट जाता है। अब तो वेद पाठ सांसारिक व्यवहार बन गया है। इन्हें पढ़कर पंडित विचार तो करते हैं किन्तु उसे समझते नहीं। बिना समझे वे अपने ज्ञान को भी व्यर्थ करते हैं। नानक कहते हैं कि गुरु द्वारा ही इसके पार उतरा जा सकता है।

मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ मनुष्य की धर्मिक चेतना समय-समय पर अपने अस्तित्व का आभास कराती है। वर्तमान समय में मनुष्य सत्ता की अंधेरी गलियों में इस तरह खो गया है कि उसे यदि जीवन में शांति और आनन्द का अनुभव चाहिए तो उसे स्वयं को परमसत्ता के प्रति समर्पित करना ही होगा। आधुनिक जीवन में संघर्ष और हिंसा की चुनौतियों पर आध्यात्मिकता द्वारा ही विजय प्राप्त की जा सकती है। इसीलिए वे मनुष्य की आंतरिक शुचिता पर बल देते हैं। आंतरिक पावित्र्य के कारण मनुष्य का मन विभिन्न हिंसात्मक विचारों से दूर होकर स्वयं को जानता है। तभी तो नानक ने कहा कि जो अपने अस्तित्व को जान लें वही ईश्वर रूपी हीरे को भी प्राप्त कर सकता हैं –

आपु वीचारै सु परखे हीरा।
एक दृष्टि तारेगुर पूरा।।
गुरु मानै मन ते मनु धीरा।
ऐसा साहु सरापफी करै।।
साचि नदरि एक लिव तरै रहाऊ।।
पूंजी नामु निरंजन सारु।।
निरमलु साचिरता पैकारु।
सिपफति सहज घरि गुरु करताऊ।।
आसा मनसा सबदि जलाए।
राम नराइणु कहै कहाए।। [10]

वास्तव में आधुनिक जीवन में भी बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक वर्गों के मध्य संघर्ष दिखाई दे रहा है। समाज के लोगों को सुपीरियरिटी और इंटीरियरिज़्म जैसी जटिल मानसिक व्याधियों ने घेर लिया है। इन व्याधियों से गुरु नानक देव ने सुल्तानपुर लोधी के साथ वियाना नदी की घटना के माध्यम से 'न हिन्दू न मुस्लिम' कहकर बहुत पहले पार पाने का संदेश दिया था। इस संदेश में प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकारों का विचार परिलक्षित होता है। गुरु नानक का मत रहा कि मनुष्य या तो गुरुमुखी (भगवान का प्रेमी) होता है फिर

मनमुखी (स्वयं का अभिमानी)। वे मानते थे कि गुरुमुखी व्यक्ति ही भगवान को समर्पित हो पाता है और मानवता के रास्ते पर चल सकता है। आधुनिक युग की आपाधपी में मनुष्य जिस प्रकार मनमुखी होने की ओर अग्रसर है ऐसे में गुरु नानक के आदर्श विचार नानक-दर्शन के रूप में विश्व समाज को गुरमुखी होने के लिए प्रेरित करते हैं।

वर्तमान समाज के लिए आर्थिक सुदृढ़ता मानवीय मूल्यों से बढ़कर हो गई है। बाजार की नीतियों ने आधुनिक मनुष्य को अपनी भुजाओं में कैद कर लिया है। ऐसे में मानवीय मूल्यों के ह्रास और हीन प्रवृत्तियों के प्रति नानक मनुष्य को सचेत करते हुए कहते हैं कि हरि रूपी व्यापारी से बड़ा कौन हो सकता है। उसका नाम जपने से ही इन सारी बाधाओं से मुक्ति मिल सकती है –

वणजु करहु वणजारिहो
वखरु लेहु सभालि।
तैसी वसतु विसाहीऐ, जैसी निबहै नालि।।
अगै साहु सुजाणु है, ऐसी वसतु सभालि।
भाई रे रामु कहहु चितु लाइ।।

x x x x x

खोटे जाति न पति है
खोटि न सीझसि कोइ।
खोटे खोटु कमावणा
आइ गइआ पति खोइ।
नानक मनु समझाईऐ
गुर कै सबदि सालाह।
रामनाम रंगि रतिआ
भारु न भरमु तिनाह।
हरि जपि लाहा अगला
निरभउ हरि मन माह।। [11]

आधुनिक समय में राजनीति और बाज़ार की की वितण्डावादी स्थितियों ने मनुष्य की सांस्कृतिक चेतना को क्षीण कर दिया है। मनुष्य का बाह्य और आंतरिक विचारों में कोई सामंजस्य नहीं है। नानक ऐसे मनुष्य समाज को सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। वे मनुष्य को उत्तम विचारों और कर्मों वाले उत्कृष्ट मार्ग के निर्माण के लिए प्रेरित करते हैं जिससे यह सम्पूर्ण विश्व मनुष्य के रहने योग्य हो सके –

अछल छलाई नह छलै,
नह घाउ कटारा करि सकै।
जिउ साहिबु राखै तिउ रहै,
इसु लोभी का जिउ टलपलै।
बिनु तेल दीवा किउ जलै,
पोथी पुराण कमाईऐ।
भउ वटी इतु तनि पाईऐ,
सचु बूझणु आणि जलाईऐ।।
इहु तेलु दीवा इउ जलै,
करि चानणु साहिबु तउ मिलै।
इतु तनि लागै बाणीआ,
सुखु होवै सेव कमाणीआ।
सब दुनीआ आवण जाणीआ,
बिचि दुनिआ सेव कमाईऐ।
ता दरगह बैसणु पाईऐ,
कहु नानक बांह लुडाईऐ। [12]

वास्तव में गुरु नानक के विचारों के केन्द्रियता में मनुष्य और मनुष्तया विद्यमान हैं। मुगल अताताईयों से संघर्ष की प्रेरणा देने के साथ-साथ हिन्दू और मुसलमानों के बीच प्रेम की विराटता का दृष्टिबोध गुरु नानक के विचारों में सर्वत्र दिखाई देता है। नानक के विचारों के आलोक से ही समस्त विश्व में एक अलौकिक प्रकाश विद्यमान हुआ। भाई गुरुदास जी ने सही ही कहा –

सतिगुर नानक प्रगटिआ,
मिटी धुंध जग चानण होआ।
जिउँ कर सूरज निकलिआ
तारे छपे अंधेर पलीआ।। [13]

संदर्भ

1. गुरुबचन सिंह तालिब, द्वारा 'गुरु नानक और उनका पंथ', 'गुरु नानक जीवनी : युग एवं शिक्षाएँ, प्रधन संपादक गुरमुख निहालसिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृष्ठ 66
2. वारा भाई गुरु दास जी, वार 1, पउडी 23
3. माझ दी वार, पृष्ठ 145
4. असा दी वार 115, पृष्ठ 469
5. स्वामी दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश, आर्य प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 348
6. नानक वाणी, जयराम मिश्र, मित्रा प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 140
7. आदि ग्रंथ, पृष्ठ 1412
8. वार असा, पृष्ठ 1
9. नानक वाणी, जयराम मिश्र, मित्रा प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 471
10. नानक वाणी, जयराम मिश्र, मित्रा प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 284
11. नानक वाणी, जयराम मिश्र, मित्रा प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 123
12. नानक वाणी, जयराम मिश्र, मित्रा प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 130
13. वारा भाई गुरुदास जी, वार 1, पउडी 27

प्रतियोगिता परीक्षा में विद्यार्थियों में बढ़ता तनाव : समस्या और समाधान

परीक्षा

डॉ. अजय
पूर्व प्रोफेसर, भौतिकी
त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल
संस्थापक सदस्य सुपर-30
पूर्व में छत्तीसगढ़
सरकार के साथ कमजोर वर्ग
के विद्यार्थियों
के उत्थान व व्यवसायिक तथा
प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षाओं
की तैयारी हेतु संस्थागत कार्य

संपर्क
मो. 7070896005

विद्यार्थी ही देश के आने वाले भविष्य का निर्माण करता है, इन्हें ही आगे जाकर युवाशक्ति के रूप में उभरना है। एक विद्यार्थी एक देश को अच्छा बना सकता है तो देश को नुकसान भी पहुँचा सकता है।

विद्यार्थी का काम सिर्फ कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना ही नहीं है अपितु उसे सामाजिक जीवन की समझ भी रखना है। एक विद्यार्थी को कर्मठ, ऊर्जावान, जिज्ञासु, सकारात्मक सोच वाला, धैर्यवान और विवेकशील, सच्चा और आज्ञाकारी, नेतृत्व करने वाला, ज्ञानवान, अनुशासन प्रिय और समय का सदुपयोग करने वाला चाहिए।

आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में विद्यार्थियों पर हर समय पढ़ाई का दबाब रहता है। आज की दुनिया का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं हैं, जहाँ गला-काट प्रतियोगिता का माहौल न हो। इस माहौल को बड़े-छोटे सभी झेल रहे हैं। यूँ सफलता का चिराग कठिन मेहनत से ही जलता है। कोयला को हीरा बनने के लिए सैकड़ों साल लाखों टन का दबाव झेलना पड़ता है, उसी प्रकार सफलता प्राप्त करने के लिए भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

साधारण परीक्षा एवं प्रतियोगिता परीक्षा में बहुत अधिक अंतर है। अगर दोनों एक ही होता तो परीक्षा के आगे 'प्रतियोगिता' प्रयोग करने की जरूरत नहीं पड़ती। स्कूल-कॉलेज की परीक्षाएँ पास और फेल होने की नीति पर आधारित है। वहाँ न्यूतम अंक ले आइए, आपका वह साल सार्थक हो जाएगा और आप अगली कक्षा में पहुँच जाएँगे। इस तरह आप एक डिग्री के हकदार हो जाते हैं।

परन्तु प्रतियोगिता परीक्षा में सफल-असफल होने का सिद्धांत कार्य नहीं करता है, यहाँ चयन का सिद्धांत कार्य करता है। इस परीक्षा में पहले से ही चयनित होने वाले छात्रों की संख्या सुनिश्चित रहती है। इसमें परीक्षा का प्ररिणाम सर्वोच्च अंक के आधार पर घोषित किए जाते हैं। इस परीक्षा में अच्छे प्राप्तांक के बाद भी हो सकता है, आप चयनित न हों। इसका मतलब यह हुआ कि चयनित छात्रों का प्राप्तांक आपके प्राप्तांक की तुलना में अधिक है।

अब आपको फिर से परीक्षा में बैठना पड़ेगा। पिछले दिए परीक्षा का कोई भी लाभ आपको नहीं मिलेगी न ही कोई सटिर्फिकेट यानि पूरी मेहनत व्यर्थ। इसलिए इसमें अधिक से अधिक अंक लोने की होड़ लगी रहती है।

यह एक ऐसी परीक्षा है जो मूलतः 'प्रतिस्पर्धा' पर आधारित है। इसमें हर छात्र को एक दूसरे के विरोध में खड़ा होना होता है। यह एक ऐसी परीक्षा है जिसमें आपकी सफलता दूसरे छात्र की असफलता का तो आपकी असफलता का दूसरे छात्र की सफलता का कारण बन सकती है। इसलिए इस हेतु जो क्षमता चाहिए, वह एक प्रकार से खिलाड़ियों वाली प्रतिस्पर्धी, आगे बढ़ने वाली क्षमता होनी चाहिए। जिसे हम अपने से नीचे अंकों वाले प्रतिस्पर्धी को मार कर आगे बढ़ने को 'किलिंग इस्टिक्ट' के नाम से जानते हैं। इस प्रकार

प्रतियोगिता परीक्षा एक प्रकार का खेल है जिसमें हार या जीत सुनिश्चित है। हार उदास करता है पर हताश नहीं करता तथा जीत उत्साह देता है। यदि हार की कोई सम्भावना ना हो तो जीत के अर्थ का भी कोई मूल्य नहीं होता यानि प्रतियोगिता परीक्षा अर्थ विहीन हो जाती। अतः इस परीक्षा को 'स्पोर्ट्स मैन स्पिरीट' की तरह लेना चाहिए। अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग), मेडिकल या अन्य किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में लाखों-लाख छात्र भाग लेते हैं और इस गला-काट प्रतियोगिता में सफलता की ज्योति अपने कठिन परिश्रम से जलाते हैं। अपने को सफल साबित करने की जुनून में प्रतियोगी कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहता है। रात-दिन कठिन मेहनत और इस प्रयास में कुछ तनाव ना हो यह कहना मानो ऐसा लगता है, जैसे कि मजाक कर रहे हैं। अतः प्रतियोगिता परीक्षा में तनाव एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। किसी प्रकार के दबाब को जरूरत से ज्यादा लेना ही तनाव है। ठीक इसी तरह प्रतियोगिता परीक्षा का दबाब भी छात्रों को तनाव दे रहा है। छात्र पढ़ने में कितना भी होशियार हो पर थोड़ा बहुत परीक्षा का तनाव तो रहता ही है। इसमें भी परीक्षार्थी अपनी तैयारी से सफल होने के लिए लगा रहता है। यदि इसमें अधिकता हो तो विपरीत परिणाम देता है। छात्रों को इस तनाव का आभास परीक्षा तिथि की घोषणा से लेकर परिणाम आने तक बना रहता है। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में तनाव परिश्रम पर व स्वास्थ्य पर भारी पड़ सकता है। अध्ययनों से भी यह साबित हो चुका है कि 'हाई-स्ट्रेस' से व्यक्ति की यादाश्त कमजोर हो जाती है। जिसका असर सोचने, समझने व फैसले लेने की क्षमता को प्रभावित कर देती है।

प्रतियोगिता परीक्षा का बहुत दबाब होने के कारण बच्चों में तरह-तरह के लक्षण दिखाई देते हैं। जैसे- लगातार सिरदर्द, बदन दर्द, बेचैनी, कुछ याद ना रहना, पढ़ने में मन नहीं लगना, जिद्दी या चिड़चिड़ापन होना, निराशा, आक्रोश, ईर्ष्या, अकेले रहना या बातचीत ना करना, खाना न खाना, सोने-उठने की आदत में लापारवाही, टी.वी., मोबाइल या अन्य इलेक्ट्रानिक गजेट्स पर ज्यादा समय देना और घबराहट जैसे कई लक्षण दिखने लगते हैं।

प्रतियोगिता परीक्षा में असफलता का डर होना व सबसे बड़ा रोग यह है कि 'लोग क्या कहेंगे'। परन्तु हार या जीत एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। किन्तु लोगों का काम ही है कहना। इंजीनियरिंग, मेडिकल या अन्य प्रतियोगी परीक्षा में डर या तनाव के निम्नलिखित मुख्य कारण हो सकते हैं -

- तैयारी या योजना में कमी।
- साथियों से प्रतियोगिता ।
- उत्साह या प्रेरणा की कमी।
- दूसरों के द्वारा बहुत ज्यादा उम्मीदें।
- इलेक्ट्रॉनिक गजेट्स का नकारात्मक प्रयोग।
- विषय के सही समझ की कमी।
- स्कूल/कॉलेज/कोचिंग की पढ़ाई।
- समझ में नहीं आई इसलिए विश्वास में कमी।
- परीक्षा के दौरान् पढ़ा हुआ सबकुछ भूल जाना।
- याद करते ही भूल जाना।
- मेहनत करने पर भी प्राप्तांक का कम आना।
- सफल न हो पाने का डर इत्यादि।

तनाव के कारणों में समाज व परिवार की भूमिका कम नहीं है। परिवार में माँ ही प्रथम पाठशाला की गुरु है। उसके हाथों में राष्ट्र निर्माण की कुंजी होती है परन्तु आज ऐसी माताओं एवं उन माताओं में अपने बच्चों के बारे में सोच की कमी है साथ ही विद्यार्थियों में भी लगन व मेहनत से विद्या ग्रहण करने की प्रवृत्ति लुप्त होती जा रही है।

''सुखार्थी कुतो विद्या, विद्यार्थी कुतो सुखम्'' का भाव लुप्त होता जा रहा है। वे जीवन के हर क्षेत्र में छोटे राह (शार्टकट) वाले मार्ग ही तलाशते हैं। सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते हैं परन्तु असफल होने पर दुःसाहसिक कदम उठा लेते हैं।

आज के अभिभावक बच्चों को मशीन समझ रहे हैं। छात्रों को स्कूल, कॉलेज, कोचिंग, ट्यूशन इत्यादि के कारण उन्हें खुद पढ़ने-समझने का मौका नहीं मिलता। जबकि प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए स्वयं के द्वारा अध्ययन (सेल्फ-स्टडी) की मुख्य भूमिका है जिसका प्रायः लोप हो चुका है।

अच्छे संस्कारों की कमी से भी तनाव बढ़ रहा है। छात्र उत्तेजक हो रहे हैं, उनमें सहनशक्ति कम होती जा रही है। इसके लिए 'न्यूक्लियर फेमिली' जबाबदेह है। जब से संयुक्त परिवार के प्रचलन में गिरावट आनी शुरू हो गई है वहीं पर परम्पराएँ स्वतः ध्वस्त होने लगी। पारम्परिक मूल्यों की कमी के कारण, छात्र अच्छे या गलत तरीके से हमेशा जीतने की इच्छा रखते हैं पर कभी हार होने पर वे उस सदमा को बर्दाश्त नहीं कर पाते।

अतः परिवार का यह कर्तव्य है कि छात्र को हार स्वीकार करने की कला

सिखाए, उसे प्रशिक्षित करें यानि हार स्वीकार्य करने की शिक्षा भी देनी होगी। परिवार एवं समाज के लिए छात्रों को हमेशा शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ''सुन्दर चरित्र निर्माण'' की तरफ ही प्रेरित करना चाहिए। प्रतियोगिता परीक्षा का तनाव हो या जीवन के किसी भी क्षेत्र का, तनाव का एक मुख्य कारण व्यक्तित्व का असंतुलित विकास भी है। वर्तमान में छात्रों में मानवमूल्य, सत्य, प्रेम, धर्म, अहिंसा एवं शान्ति की कमी हो गई है। अभिभावक भी बच्चों पर पढ़ाई और कैरियर का अनावश्यक दबाव बनाते हैं। यह समझना ही नहीं चाहते कि प्रत्येक बच्चे की बौद्धिक क्षमता भिन्न होती है, जिसके चलते प्रत्येक छात्र की सफलता एक जैसी नहीं हो सकती है। आज की उपभोगतावादी संस्कृति के चलते अभिभावक अपने पाल्य को हर क्षेत्र में अव्वल देखना चाहता है। यही कारण है कि परिवार एवं समाज अपने मौलिक स्वरूप को खो रहा है। भावनाओं एवं संवेदनाओं से शून्य होते पारिवारिक रिश्ते कलुषित समाज की रचना कर रहे हैं। जहाँ निरन्तर पारम्परिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है।

प्रतियोगिता परीक्षा के समय तनाव मुक्त रहने से ही सफलता की संभावनाएँ बनती हैं। प्रतियोगिता परीक्षा को एक खेल के जैसा लें, हार या जीत सुनिश्चित है। अगर असफलता भी मिली तो असफलता ही सफलता की जननी है। श्रद्धेय हरिवंश राय बच्चन जी की पंक्तियों से हम सीख सकते हैं। 'असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो। क्या कमी रह गई है, जब तक सफलता ना मिले तब तक नींद चैन को त्याग कर परीक्षार्थी को संघर्ष का मैदान छोड़कर नहीं भागना चाहिए।' आत्म अवलोकन कर उसमें सुधार की सम्भावना खोजनी होगी।

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी अच्छी योजना के साथ व समय का उचित संतुलन बनाकर करना चाहिए।

मेडिकल एवं इंजीनियरिंग प्रतियोगिता परीक्षा का स्वरूप थोड़ा अलग-अलग है। दोनो ही प्रकार के परीक्षा के परिक्षार्थियों को परीक्षा के लिए 'फंडामेंटल कांसेप्ट' की समझ अति आवश्यक है। सभी विषयों के लिए छात्र निश्चित रूप से 'एनसीईआरटी' के पुस्तकों का व प्रतियोगिता सम्बन्धी पुस्तकों का अध्ययन करें इसके साथ ही साथ एनसीईआरटी के उदाहरणों के सभी प्रश्नों को हल करने का बार-बार अभ्यास करें।

मेडिकल एस्पिरेन्टस बॉयोलॉजी एवं केमिस्ट्री के साथ-साथ फिजिक्स का भी गहन अध्ययन करें।

कब, कितना एवं क्या पढ़ना है उसकी सूची बनावें और हर हाल में अपने समय-सारिणी के साथ तालमेल कर दिनचर्या का पूर्णतः पालन करें। अगर आपने समय का बेहतर सदुपयोग किया तो आपको परीक्षा देने में आसानी होगी और आराम मिलेगा। आप एक सफल समय प्रबंधक बन जाएँगें जिससे आपको जीवन के हर क्षेत्र में लाभ मिलेगा। पढ़ते वक्त रटने के बजाए प्वाइन्टस एवं कान्सेप्ट को अच्छे से समझना चाहिए साथ ही प्रत्येक पाठ के मुख्य बिन्दुओं को नोट करते रहें इससे पुनर्पाठ में आसानी होगी। पहले से तैयारी अच्छी होगी तो परीक्षा के समय टू द प्वाईंट पढ़ने से भी अच्छा परिणाम आ सकता है।

- परीक्षा के समय या उसकी तैयारी के समय ६-७ घंटे की नींद जरूर लेवें, इस समय अधिक पढ़ाई के कारण नींद पूरी नहीं होती। नींद पूरी होने से दिमाग तेज गति से कार्य करता है तथा परीक्षार्थी उर्जावान बना रहता है।
- हल्का भोजन करें। कुछ-कुछ अंतराल पर कुछ लेते रहना चाहिए जिससे शरीर में ऊर्जा का स्तर सम बना रहता है और स्ट्रेस हार्मोन्स भी नियंत्रण रेखा से नीचे रहता है।
- प्रतियोगिता परीक्षा के समय आने वाले डर को मन से निकाल 'डर' की जगह मेहनत को जगह दें। भगवान बुद्ध की इन पंक्तियों के अनुसरण से तनाव मुक्त रह सकते हैं -

  'सभी शक्तियाँ तुम्हारे भीतर है, आप कुछ भी यानि सब कुछ कर सकते हैं।'
- शारीरिक और मानसिक तनाव को दूर करने के लिए ध्यान, योग, व्यायाम करें इससे एकाग्रचित रहेंगे एवं तनाव भी कम होगा।
- अपना टाइम शेड्यूल अपने अनुकूल बनावें, परन्तु सुबह के वक्त वातावरण, शांत एवं सकारात्मक रहता है। वातावरण में आक्सीजन की प्रचुरता रहती है। जिससे याद करने में सुविधा होती है। हो सके तो शुबह के समय का सदुपयोग जरूर करें।
- लगातार लम्बी सिटिंग ना लें। बीच-बीच में ब्रेक करें। पानी पीवें। बॉडी स्ट्रेच करें। बाहर टहल लें, मनोरंजन करें इत्यादि। पुनः तरोताजा होकर अपने काम में लग जाएँ।
- प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी में कोई

परेशानी आती है तो उस विषय के एक्सपर्ट से सलाह लें । अन्य किसी भी परेशानी को अपने माता-पिता, भाई-बहन, दोस्त या निकटतम सम्बंधी से आपस में चर्चा करें। आने वाली समस्या का समाधान निकालें।

- प्रतियोगिता परीक्षा के दौरान अपनी सोंच को आशावादी एवं सकारात्मक रखें। मैं कर सकता हूँ और इसे पूर्ण करुँगा। इससे नई उर्जा एवं स्फूर्ति पैदा होती है। आप हमेशा अच्छे परिणाम के बारे में सोच कर आनंद लेते हुए तैयारी करें।
- पॉजीटिव थिंकिंग या सकारात्मक सोच से आशा का संचार होता है। जिससे तनाव काबू करने में मदद मिलती है।

''जब हौसला बना लिया ऊँची उड़ान का, कद को नापना बेकार है आसमान का।''

- कैरियर ओरिएंटेड लड़कों को दोस्त बनावें, पर इसका चयन करना थोड़ा सा मुश्किल है। तब उन दोस्तों के बीच ग्रुप स्टडी कर कुछ लाभ लिया जा सकता है एवं तनाव को कम करने में भी यह लाभकारी होगा। वरना ग्रुप स्टडी से समय की बर्बादी ही है।
- तनाव कम करने के लिए दवा और मादक पदार्थों का प्रयोग न करें, इससे मानसिक एवं शारीरिक संतुलन बिगड़ जाता है। तनाव और भी बढ़ जाता है।
- इन बातों का ध्यान रख आप तनाव मुक्त रह सकते हैं। आपका पसंदीदा कार्य आपको हमेशा सफलता, शांति और आनंद ही देता है। आप सदैव ''चरैवेति, चरैवेति, चरैवेति'' के सिद्धांत पर कार्य करते रहो, तुम्हारे हाथ में सिर्फ तुम्हारा इमानदार प्रयास होना चाहिए। फल की चिंता नहीं करनी चाहिए।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यही संदेश दिया -

''कर्मन्येवाधिकारस्तु मा फलेषु कदाचनू, प्रतियोगिता परीक्षा के वक्त अभिभावक भी बच्चों पर भावनात्मक या मानसिक दबाब ना बनाएँ। उन्हें प्रोत्साहित करते रहें। बच्चों की क्षमता के अनुरूप ही अपेक्षाएँ रखें। अपनी अधूरी इच्छाओं को उनके ऊपर ना थोपें। घर में शांति का माहौल बनाए रखें। अतिथियों की आवाजाही ना हो इसके लिए अलग व्यवस्था बने।

ध्यान भंग करने वाली सारी वस्तुओं का त्याग करते रहें । परीक्षा को बोझ नहीं खेल जैसा लें । वैसा माहौल सृजन करें उन्हें कुछ-कुछ समय पर हल्की खाने-पीने की वस्तु उनके पढ़ने के स्थान पर ही दे देवें। घर में भी सभी लोग खुशनुमा वातावरण में खाना खाएँ। घर के खराब वातावरण का प्रभाव परीक्षा देने वाले परीक्षार्थी पर पड़ता है। परीक्षार्थी की विफलता पर निराश होकर अपनी उदासी व्यक्त न करें, उल्टा न बोलें व ना ही उनका मजाक बनाएँ। बल्कि उन्हें अगली तैयारी के लिए प्रोत्साहित करें। उनकी समस्या के समाधान का हिस्सा बने। उन्हें बतावें कि एक सपने को टूट कर चकनाचूर हो जाने के बाद दूसरा सपना देखने के हौसले को जिंदगी की उड़ान भरने की कला कहते हैं।

कभी-कभी लगातार असफलता के बाद भी निराशा नहीं होनी चाहिए। क्योंकि कभी-कभी गुच्छे की आखिरी चाबी भी ताला खोल देती है। उन्हें बताएँ कि समस्या का सामना करें, उससे भागें नहीं। तभी उसको सुलझा सकते हैं। हमें हार नहीं माननी चाहिए और समस्याओं को खुद ही हार कर समाप्त होने के लिए संघर्ष करना चाहिए।

महान वैज्ञानिक एवं पूर्व राष्ट्रपति श्रद्धेय अब्दुल कलाम आजाद के शब्दों को दोहराते हुए अपनी लेखनी को विराम देना चाहता हूँ -

''अगर आप किसी प्रयास में असफल हो जाएँ तो कोशिश करना ना छोड़े। क्योंकि असफलता का मतलब होता है First attempt in Learning . तब तक हमें लड़ना नहीं छोड़ना चाहिए जब तक कि अपनी तय की हुई जगह पर ना पहुँच जाएँ क्योंकि अद्वितीय हो तुम। जिंदगी में एक लक्ष्य रखो, लगातार ज्ञान प्राप्त करो, कठिन से कठिन परिश्रम करो और महान जीवन पाने के लिए दृढ़ रहो।''

श्री हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ

लोक शिक्षा समिति, उत्तर बिहार के अन्तर्गत चलने वाले सभी विद्यालयों में दिनांक 26 मई 2020 को पूर्व योजनानुसार श्री हनुमान चालीसा का पाठ हुआ। इसमें सभी विद्यार्थी, शिक्षक बंधु-भगिनी, प्रधानाचार्य बंधु-भगिनी, समिति के सदस्य, पूर्व छात्र, अभिभावक तथा पूर्व आचार्यों ने भाग लिया। इस कोरोना काल में मानसिक दृढ़ता प्राप्ति तथा संकट से उबरने हेतु यह पाठ एक ही समय में अनेक स्थानों व घरों में किया गया। इस सामूहिक पाठ में कुल 1,25,719 संख्या रही व श्री हनुमान चालीसा पाठ की कुल आवृत्ति 4,19,438 रही। इस कार्यक्रम में सबने सपरिवार उत्साह व उमंग के साथ सहभाग किया ।

श्री अजय तिवारी, सह सचिव

MODI TRIUMPH TRUMP

PERSPECTIVE

Ms Ankush Mahajan,
Sr Climate Change analyst & Commentator
on Economy & Policy.
Co-Founder, Council for International
Economic Understanding.

There is one thing common between the US President Donald Trump and Indian Prime Minister Narendra Modi, their ability to think big and many a times even bigger. When Trump –leader from world's most powerful democracy—and Modi –represents the most populous—meet, sheer energy this fusion dazzles the world. This time, on February 24 when they hugged each other it in front of 130,000 people at world's largest cricket stadium in Motera, Ahmadabad at an event broadcast across the world, the two nations presented to the world that the relationship if firmly cemented. The diplomats called this as a Comprehensive Global Strategic Partnership.

This visit was important for India too. The global lobby groups are battling in the alleys of New York and Washington to embarrass Indian establishment, create doubts in the minds of global investors and multi-lateral bodies; especially after India passed the resolution to abrogate the provisions of Article 370 – temporary provision giving special status to the state of Jammu and Kashmir—the amendments in the Citizen Act, allowing the refugees from minorities communities of neighbouring countries to take Indian citizenship quickly and the banning of draconian triple talaq (divorce) of Muslim women. Extension to this propaganda was seen with the orchestration of violence in the streets of sub-urban areas of the capital during the president's visit.

Washington was pushing for a trade deal with New Delhi, but as Trump described PM Modi as good friend, but a tough negotiator –the adjective, which was never used by him to describe any head of the state—the deal didn't get to see the daylight. New Delhi is caught in the crossfire of trade war between Washington and Beijing. Although the trade deficit between India and US is less than $20 billion, whereas, with China it is whooping 20 times; yet Trump was seeking more market access for the American companies and their products. He believes that these trade deficits are actually killing many job opportunities in the US, and in his last four years he broke most of the trade deals with the trans-Atlantic and trans-Pacific world, disobeyed the multilateral trade orders to reorient the trade environment for his country. India continued to be the last frontier, and when he had to face the electorate later his year the deal –or even the limited deal—would have been a political clinch as well for him.

New Delhi was not in a mood to give him this. This is great achievement of PM Modi's diplomacy that they are able to segregate the strategic affairs and commercial interests; and are able to convince Washington to adhere to this plan as well. Not only, on this visit but

also since Trump administration took charge in January 2017 and later when the two leaders met for the first time in the summer of the same year. In fact, President Trump stood by his 'good friend' PM Modi in this testing times. But this didn't jitter New Delhi from their negotiations of the trade deal & safeguarded the interests of the Indian entrepreneur.

Washington values New Delhi's present posturing as a critical element for the geo-political balance. The joint-release after the meeting of the two heads of the state, mentions that the two democracies will work together for defence and strategic needs. New Delhi is buying top class lethal helicopters Chinook and Apache from the US manufactures in a trade deal worth $3.2 billion. And the work for the Quadrilateral with Tokyo and Canberra will accelerate to counter trade infrastructure 'Belt Road Project' pushed by China.

Meanwhile, the trade negotiators were having a tough time. With both Washington and New Delhi staying firm on their stands. And ended with no result. Trump administration believed that Indian corporations sell goods to the America market without tariff hindrances; however, very high import duties are imposed. Recently, Washington removed unilateral Generalised System of Preferences, a provision agreed in the World Trade Organisation (WTO) granting trade concessions to emerging economies like India. This directly impact exports of nearly $ 5.6 billion from Indian shores. Just a few days before Trump's visit to India, the US removed India from the category of developing countries and placed it in the category of developed countries. The effect will be that the trade concessions India receives from US, as a developing country will end.

Washington pushed for market access for the milk and milk products from America, along with lamented that the US companies face 'unfair' marketing opportunity, when India has imposed price controls on health devices, including cardiac stunts, knee implants etc. New Delhi on February 11, classified these implements as essential drugs, reinforcing sovereign right to fix the prices of these commodities. On the other hand, India has imposed various types of curbs on American e-commerce companies for some time. Both Prime Minister Narendra Modi and Commerce Minister Piyush Goyal refused to meet the global management of Amazon and Walmart. And in the budget, finance minister Nirmala Sitharaman made provisions for setting up of the data parks in India. Almost killing the negotiations on the data localisation. Washington lamented India's patent law is contrary to the interests of their companies.

Modi Government was in no mood to give any concessions. On the other hand, New Delhi agreed to lower the tariff for the dairy imports, but put the rider for the American suppliers to certify that the cows are not fed with the animal parts et al. And they cited the religious and cultural sentiments in the domestic market for the same. Obviously, consumption of the milk from the non-vegetarian cows are unimaginable in India. Moreover, dairy provides livelihood to nearly 10 crore subsistence farmers in India. On the other hand, due to the discounting of e-commerce by American e-commerce companies, small shopkeepers in India are rapidly losing their employment. As far as our intellectual property law including patents is concerned, it is very important for our public health, and the protection of farmers. Not only this, control over the prices of essential medical devices is absolutely necessary to provide affordable medical facilities to those living at the bottom of pyramid in our country.

Unlike in the past, this time New Delhi was better prepared to take on the aggressive negotiators from Washington. The negotiators did the homework well, even to make their counterparts from the US to work really hard to get even a limited deal. Before coming to India, Trump had also announced that India was not agreeing on trade deal and it would not be possible. He said, despite that he would come to India because he likes Modi. At the end of the visit; Trump came, Trump saw and Modi Triumphed.

SUSTAINABLE CONSUMPTION IS KEY TO SUSTAINABLE DEVELOPMENT (CONTEXT: GANDHI 150 AND SDGS)

OPINION

Atul Jain
journalist, social worker.
member of the editorial board of Manthan, a premier academic and research journal.
Known Policy maker of Insitution for Rural Area Development
General Secretary of Deendayal Research Institute

Contact
Mob. 9811055166

While we celebrate the 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi and express our gratitude to that pious and noble soul who gave the world the most cherished principles of non-violence and self-reliance, it is also time to have a relook at them in the present context. Gandhiji's philosophy is manifested in many ways. In our thoughts, in our actions, in the principles that govern us - individually and collectively, both. It also underlines those virtuous pursuits, in which a human being should normally engage, called Purushartha in Indian parlance.

Needless to elaborate, Gandhiji's philosophy influenced not only Indians, but many great personalities across the world. Interestingly, it has influenced many a treatise at the international level. While there is no disagreement with any of the principles laid down by him over hundred years ago, there is little that the international community attributes to him while drafting the future of the world.

These days, SDGs is the buzz word, all across the world.Everybody is speaking about Sustainable Development Goals. Sustainable Development has perhaps been the most spoken subject during the past half a century.Yet, what a paradox? While there is general consensus on the subject, it still eludes the world.

Hundred and eleven years ago, in 1908, Gandhiji had shown us the path for sustainable development - through sustainable consumption. In his book "Hind Swaraj" he outlined the threat to common future of humanity caused by our relentless quest for more material goods and services. Four years back, in 2015, when the UN adopted17 SDGs, the 12th of which was about 'ensuring sustainable consumption and production patterns', that was the perhaps most befitting tribute to the enduring greatness of Mahatma Gandhi. But no mention was made of Gandhiji or the Indian values, which always preached us sustainable consumption, in the preamble to this declaration.

Not only the SDG 12, name any SDG, and Gandhji had envisioned it 106 years ago. He had a question on that and an answer for it. If we carefully read the subtext of SDGs, we find that they are the mirror image of Gandhiji's philosophy as enunciated in his Hind Swaraj and later, in other writings, including the later versions of Hind Swaraj. Sometimes, people wonder if the principles enunciated by Mahatma Gandhi are tenable in the modern world?

First, the adoption of his philosophy in the SDGs - though without attributing to him - bear testimony to the fact that these were not flights of fancy, but rather, achievable aims. They reflected the real India. And now, perhaps the real world too.

◇◇◇

Gandhiji asserted many a times that the villagers were the real custodians of the natural resources of the country. Like Gandhiji, Nanaji also felt that since villagers are the trustees of these resources, they love them, they care for them, they don't destroy them indiscriminately, they have an emotional bonding with them, they have stakes in their conservation, and in the growth of natural resources.

◇

Secondly, they are achievable also. That has been amply demonstrated by the development model evolved by Deendayal Research Institute (DRI) and other such institutions. The DRI was set up to perpetuate the memory of Pandit Deendayal Upadhyay, another great statesman belonging to the Gandhian era. He not only carried on Gandhiji's legacy, but also enriched it by giving it a spiritual tinge - through his philosophy of Integral Humanism. After his death in 1968, his contemporary Nanaji Deshmukh undertook to translate this philosophy into action. Practically, in the Gandhian way.

Early this year, Nanaji was posthumously awarded the highest civilian order of the country, Bharat Ratna for his contribution to social transformation in a manner anchored to the roots of the country, yet, in tune with contemporary times. An avowed follower of Gandhiji, Nanaji worked in the most backward districts of the country – with a holistic approach - encompassing all the aspects and dimensions of human life – including education, life sciences, livelihood, technology, social consciousness, practically, every aspect of life. This model can be seen in action in Chitrakoot, Gonda, Beed and Nagpur.

Gandhiji was honest in admitting that some of his thoughts in his previous writing may have become outdated and, therefore, he had no problem in changing his stance. But the basic principles, the fundamentals remained same. For example, both these great men believed that native, indigenous knowledge needs to be respected. Traditional wisdom, cultural practices need to be underlined. All these would shun the very idea of more consumption which is both a cause and consequence of greed.

Gandhiji asserted many a times that the villagers were the real custodians of the natural resources of the country. Like Gandhiji, Nanaji also felt that since villagers are the trustees of these resources, they love them, they care for them, they don't destroy them indiscriminately, they have an emotional bonding with them, they have stakes in their conservation, and in the growth of natural resources. But at the same time, Gandhiji agreed that with technological advancement and changing aspirations of the people, the tools may have to be different. However, he always cautioned against unnecessary consumption.

Nanaji adopted the same approach while evolving his model. He also said that real progress emanates from the villages, with the active participation of the villagers, with their initiative, with their intrinsic talent. But he was not averse to adopting appropriate technological tools to further growth. Both these guru and disciple believed that a harmonious growth can be achieved by employing cultural practices. Because, one can internalise relationship between man and nature without any extra effort. It flows down to him naturally. And when human behaviour manifests naturally, there is no element of sophistication, and thus no over-consumption of goods and services.

Both of them had an unshakable faith in native people's wisdom and intelligence. They strongly believed that this could be achieved only by employing local resources and local talent. Gandhiji's life is an example as to how he subtly taught us the virtues of sustainable consumption. On many occasions, he chided none other than Pandit Jawaharlal Nehru for wasting precious natural resources for his comfort.

He spoke of exploitation of natural resources as an evil, but harnessing them to sustainable levels as a virtue. Harnessing seems to be the closest English translation of the Indian concept of Dohan, which says

that natural resources should be used with respect towards them, carefully, tenderly, to ensure an equitable distribution among all and also to ensure that we leave a better world for future generations. Needless to say, this would also ensure judicious consumption of the resources.

Gandhiji averred that the influences should also be local, not imposed from outside. Mere statistics cannot help formulate plans for the development of an area, leave alone a nation. Every region has distinctive social and geographical characteristics. There are 127 agro-climatic zones in India. And when the policy makers try to formulate policies on the basis of mere statistics, they find that each such zone has scores of eco-climatic zones.

In the last decade, precisely in 2008, the then President of France, Nicholas Sarkozy did not seem satisfied with the present state of statistical information about the economy and the society. He set up a Commission to identify the limits of GDP as an indicator of economic performance and social progress, including the problems with its measurement.

So, he set up the commission to consider what additional information might be required for the production of more relevant indicators of social progress; to assess the feasibility of alternative measurement tools, and to discuss how to present the statistical information in an appropriate way. And the commission found that there were vast diversities that govern the development of a region. Social activists and social-scientists, world over also think on these lines and advocate assimilation of socio-economic milieu of the region.

This is exactly what Mahatma Gandhi had said exactly a hundred years ago before the commission was set up. He had underlined the need for a decentralised system of economics and development. So that local distinctive characteristics can always be factored in while formulating plans on the basis of statistical information. The subtext of Gandhiji's economic philosophy is also the sublime text of India's cultural values also. And which is the subtext of SDG 12 – Sustainable Consumption and Production Patterns. It will be mere rhetoric talking of sustainable development without understanding the true meaning of sustainable consumption. Unless we practice restrained consumption, we cannot avoid exploitation of natural resources, meaning thereby that sustainability in production patterns cannot be achieved and thus talking of sustainable development will be meaningless.

> *He had underlined the need for a decentralised system of economics and development. So that local distinctive characteristics can always be factored in while formulating plans on the basis of statistical information.*

Pandit Deendayal Upadhyay also delved into the Indian ethos of restrained consumption (sanyamitupbhog). Citing various classical scriptures and cultural practices, he always eulogised frugal (maryadit) spending by Indians, in accordance with their dharma. This, he explained, would lead to less exploitation of resources. He was also averse to vulgar display of wealth and ostentatious lifestyle. All these are the subtext of SDG 12. Pandit Deendayal Upadhyay also underlined efficiency of resources so as to achieve more and better with less.

His lifetime friend Nanaji Deshmukh diligently demonstrated this Indian trait in his Chitrakoot model. And through his emphasis on social consciousness in his programmes, he would always plead with people to shun overspending and lead an austere life. Though country's topmost industrialists were his admirers and would relish his company, like Gandhiji, he too never took any personal favours for himself and lived simply all his life.

While all the 17 goals of the SDGs can be explained in the light of age-old Indian values and culture practices articulated by Gandhiji, Pandit Deendayal Upadhyay and validated on ground by Nanaji, the goal 12 has been quite distinct from others in philosophical terms.

'THE RSS ROADMAPS FOR THE 21ST CENTURY': -A Review

BOOK REVIEW

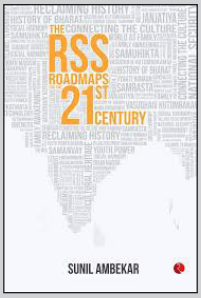

Shri Sunil Ambekar
Akhil Bhartiya Sah Prachar Pramukh
Rastriya Swayamsevak Sangh
(Author)

Review by-
Shashank Tiwary
Published many articals
in various magazines
Areas of interest - Swadeshi,
Political and Social Therory,
International Relations and
Public Policy.

Contact
Mob. 97171 57847

The previous summer, the usual observers of Indian socio-political scenario were taken by surprise when they saw that the six key senior functionaries of RSS, including the Sarsanghchalak Shri Mohan Bhagwat ji, arejoining the social networking site Twitter. This coordinated gesture of RSS top brass gave a definite message that now RSS has gradually reached to a time when it wishes to more openly speak for itself. The phrase '…Speaking of itself…' is noteworthy because ever since its inception, RSS has been the indispensible presence in the India's public discourse; but under hostile and suspecting political regimens RSS was never given the dignified discursive space which it always deserved.

Volumes of hypercritical literature about RSS have floated around us, especially since 1990s. But for all those minds, which could see through the layers of tarnishing contents against the RSS, there was a long awaited need of standard literature, in accordance to new age parlance,coming directly from RSS.

This wait was over on 1st October, when at the Ambedkar International Centre, right in the heart of the Lutyen's Delhi, RSS Sarsanghchalak Mohan Bhagwat ji inaugurated Shri Sunil Ambekar's book 'The RSS roadmaps for the 21st century'. The new book is addressed to the youth of India. It employs a vocabulary which is known to an average college-going youth. The book converses about RSS and its vision for India and its youth in a language enjoyably intelligible to the youth and the enthusiasts.

The place where the inauguration took place has a deep symbolic value. 'Lutyens' Delhi' which became synonymous with the powerful Nehruvian elites known for setting the agendas of public discourse in India, has traditionally been the most unwelcoming locality for the RSS in the country. It won't be surprising if the event of inauguration is treated as an unintentional gesture of challenge to the conventional 'gatekeepers' of the national discourse. It is popularly assumed that the 2014 was a watershed moment, when the influence of RSS was indirectly manifested in form of a decisive win for BJP, even the detractors of RSS were forced to acknowledge that RSS has shown a remarkable resilience. But, there is much more substance in RSS and its functioning than what is acknowledged by the regular political and social commentators which has been very profoundly underlined and explained in 'The Roadmaps…..' . This book has send ripples across the commentariat and has assumed the status of a bestseller.

'The Roadmaps...'is a very comprehensive narration of the RSS's philosophy, it's worldview and most importantly it's futuristic vision. The

book, in its introduction says that it delineates several roadmaps, which are based on the premise of building India's strengths and rectifying her weaknesses. Also, it treats RSS as a 'vehicle of unity for a powerful India', and it holds that the story of India's future and the story of RSS ought to be seen in the same stretch of sight.

The book divides itself into 10 chapters, and deals with diverse subjects- right from the background in which RSS was established to the RSS's efforts for Samrasta i.e. social justice and women's movement. It also deals with the subjects which are not usually associated with the concerns of RSS in the conventional Left and Left-leaning liberaldiscourse. These are the subjects like challenges and opportunities arising out of growing globalization, environmental issues, urbanization, family ties and emerging modern relationships.

This book gives a rare insight into the meaning behind Sakha-system and the structure of RSS. RSS uses the term 'paddati'(पद्धति) to suggest its methodology of practice, and it is central to how the RSS works. The writer, Sunil Ambekar ji is himself a veteran Swayamsewak, he has explained the life and vision of Dr. Keshav Baliram Hedgewar's in detail. He has termed Doctor Saheb's life as the 'seed' which got sown in the soil to give birth to the whole behemoth of Sangh and its branches. The present day, Sangh has undoubtedly germinated out of that seed, and has been ably served and lead by other Sarsanghchalaks including Guruji, Balasaheb Deoras ji till the present-day Sarsanghchalak Mohan Bhagwat ji.

The book fills a void of giving a much needed inner-view into RSS's methods, mission and machinery. It's neither a lesson on RSS's history, nor it is a hyperbolic pronouncement of RSS's future plan. It is a very realistic account of RSS's journey in the realm of ideas. It presents a believable and convincing analysis of the present scenario of life in Indian cities and villages, and explores the potential solutions to the major problems of today and the emerging crises of future.

The book doesn't claim to be the 'tell all account' of RSS. Neither it's some official roadmap or manifesto of RSS for 21st century, nor it is a personal account of the author Shri Sunil Ambekar, who is a very senior Pracharak. It can always be asked that what can be personal for Pracharak? A Prachark, who has spent over three decades in Sangh within utmost commitment, looses everything he owns to Sangh, and in return he internalises the philosophy of Sangh, and express the same through the mode of his words and actions. To all those who have not been a swayamsevak at any stage of life, grasping the locus standi of the author might be slightly challenging. Nevertheless, it doesn't impede the enjoyment of reading and knowing about the RSS and how the RSS approaches the questions waiting for us in the future.

The serious reception received by 'The Roadmaps….' has cleared it by now it has reserved a place among the rank of classics in its genre. The media and the academia, two most important mind-making institutions have been unapologetic in giving uncharitable treatment to an organization like RSS which is rather unsophisticatedly painted by them as a 'right-wing' untouchable. In fact, some of the affluent media groups have always taken pride in maintaining an antagonistic relationship with RSS, irrespective of whether BJP is in office or in opposition. By every measure, the presence of RSS in the productive space of media was negligible; and when compared to the influence of RSS in the socio-political-cultural life of India, the exclusion of RSS from media and academia appears unnatural and unjust. 'The Roadmaps…' is a break-through in the respect that it takes RSS into the productive space of media. It is highly likely that it won't be an aberration and we would get to see more from the functionaries of RSS.

EDUCATION AND ENVIRONMENT

CONCERN

Prof (retd). Rajyalakshmi Nittala
ICSSR Senior Fellow
Department of Commerce &
Management Studies
Andhra University, Visakhapatnam

Contact
Mob. 8639594289

Environmental pollution and Global Warming are the most serious problems faced on the earth today by all life forms. A major consequence of rapid economic growth through industrialization will be ongoing depletion of natural resources. Especially in India, after economic reforms introduced in 1991, the growing production and consumption has increased use of packaged goods in India. For example in 2018 India produced 160000 tons of tooth paste resulting in use of 1600 million tubes. According to the environmentalists toothpaste tubes don't decompose and even hard to recycle. There are numerous examples like this that results in the manufactured, packaged & consumed wastage causing the biggest challenges in India's waste management. Even poor people who cannot afford to buyhuge volume of products depend on fast moving consumer goods which come in small sachets like shampoo, tomato sauce, panmasala etc., as the marketers target these consumers with small quantities.

The land and forest cover also decreased, agricultural farms are converted into residential colonies and made into concrete jungles. When Andhra Pradesh state was formed in 2014, then the government has acquired 33, 000 acres of agricultural land to develop the capital. Fresh water resources are polluted, ground water levels have decreased and air pollution increased leading to a rise in several diseases. As per the projections of the society of Indian Automobile Manufacturers, annual sales of vehicles are 9 million by 2020 and 611 million by 2050 as India is expected to top the world in car volumes. It is expected that technological innovations, such as development of alternative fuels, energy – efficient appliances, and recycling of waste materials can reduce environmental degradation and offer remarkable gains in conserving resources and reducing pollution. But many scientists and environmentalists opined that the environmental problems cannot be solved by technology alone.

Consumers should understand the severity of the problem and change their attitude and behaviour. They need to use public transportation, reduce the use of natural resources, reuse the products as much as possible and recycle the house hold waste. Majority of the sources of pollution are from consumption.

Education is an important demographic variable influencing consumer behavior. The generalperception is that education plays an important role in encouraging change and that educated consumers are more socially responsible. In several studies, a consistent hypothesized relationship was found between education and green (environmental friendly) consumer

behavior. Education is expected to be positively correlatedwith environmental concerns and behavior,but this relationship appears to be weakening.Although the results of studies examining education and environmental issues are somewhatmore consistent than other demographic variables, a definitive relationship between the twovariables has not been established. Indeed, a study on educationand sustained behavior change in adults showed a 0% correlation. There are several studies that found either no relationship or an inverse relationship between education and environmental concern .Thus, conflicting conclusions are there, and theproblem is wide open.

The respondents were selected from the Colleges of Arts and Commerce and Science and Technology of Andhra University, India.The teachers served with the questionnaire were 213 Science faculty and 162 Humanities faculty. Out of the total 375 served with a questionnaire, a total of 160 teachers participated, that is, 43% of the population. This shows their concern for environment.

It is not uncommon to enter a retail outlet with the intention of purchasing a particular brand but to leave with a different brand or additional items. Various factors that supply additional information influence the consumer decision. Teachers ranked quality as a prime factor and price was ranked second in their decision to purchase a product. Environmental concern was ranked fifth. Thirty four percent of the teachers buy the lowest priced products regardless of their impact on the environment. They are aware that the consumer behavior of each one of them can have an impact on the environment and that they should change to a green lifestyle, but unfortunately, they are too busy to do so. They are moderate in their opinion about the twin assertions of using a shopping bag to avoid plastic carry bags and that the plastic carry bags are more convenient and should not be banned. They feel that there must be separate shops to sell environmentally friendly products and moderately agree that changing consumer durables frequently causes damage to the environment. To save energy, they drive their vehicles as little as possible, try to buy energy saving efficient household appliances and purchase products that can be recycled. But they are not sure which products and packing materials are recyclable. University teachers strongly agree that marketers must advertise the environmental aspects of their products, as they trust the eco-claims in the advertisement.They strongly consider that government should make eco- labeling mandatory.

It is revealed that the environmental concern of the teachers is not significantly associated with willingness to purchase green products. Astonishingly, the

◇◇◇

To save energy, they drive their vehicles as little as possible, try to buy energy saving efficient household appliances and purchase products that can be recycled. But they are not sure which products and packing materials are recyclable. University teachers strongly agree that marketers must advertise the environmental aspects of their products, as they trust the eco-claims in the advertisement.They strongly consider that government should make eco- labeling mandatory.

◇

university teachers' high education and environmental concern are not reflected in their willingness to purchase green products. Consumption is expected to make life easier and more comfortable, and it may act as an impediment to green consumption, if it involves sacrificing comfort. They only exhibit lip service and no practical involvement in eco- friendly consumption. Teachers expressed that lack of information leads to non purchase of green products as they need information to evaluate and commit to green purchase. Despite their high education and exalted status in society, teachers expressed skepticism about the true impact of green products and the reusability and

◇◇◇

Teachers believe that frequent change of consumer durables causes environmental pollution. Marketers should convince the teachers to exchange their products for new ones and they should see that the old products can be recycled. The exchange benefit offered should be above the differential threshold level so that the teachers can perceive the benefit of exchange of their old product. This reduces teachers' guilt about causing environmental damage by changing the products and provides demand for the marketers' products.

◇

recyclability of various products.

Eco- labeling was introduced in India, but it is neither preferred by companies nor promoted by the government. There are several quality labels that are issued and promoted by the Indian government such as ISI, Agmark, BIS etc., for different products. Over the years, these labels are preferred by consumers due to quality assurance. But in the case of eco label, the immediate benefit can't be seen by the consumers as there is no economic gain to them. It is a big task to the government to convince them. Making eco labeling mandatory is one measure in the hands of the government and realistic appealing to the consumers on the benefits of green consumption by the companies. More than 20 years since the introduction of the eco labeling scheme by Ministry of Environment and Forests and it needs to be made mandatory. Teachers believe that frequent change of consumer durables causes environmental pollution. Marketers should convince the teachers to exchange their products for new ones and they should see that the old products can be recycled. The exchange benefit offered should be above the differential threshold level so that the teachers can perceive the benefit of exchange of their old product. This reduces teachers' guilt about causing environmental damage by changing the products and provides demand for the marketers' products.

Pro environmental associations, retailers, media and government can play an important role in discouraging usage of plastic bags by the teachers. Even though retailers should encourage customers to bring their shopping bag by charging extra for bags or giving some discount for bringing their own bags. Even though the government has banned the use of plastic bags by retailers, the implementation is not effective. Energy saving behavior is due to the expected savings i.e., reduced power and water bills rather than environmental concern. 34% of the teachers purchase low priced products, regardless of their impact on the environment. Even for this elitist group the members of which realize their responsibility toward the environment. Price constitutes the second major buying criterion right after quality. As price is a barrier to green consumption, lowering the price is bound to increase green consumer behavior.Government should play responsible role by providing incentives and tax cuts to companies that go in for green manufacturing and marketing, which will result in the prices becoming competitive for acceptance by the consumers. Switching products for ecological reasons, preference of ecological quality, and plastic carry bags are more convenient and should not be banned are good discriminators that can be used by marketers to identify the prospective educated green segment.

And they entertain a feeling of self-responsibility to alter their present behavior to one ofenvironmentally friendly green consumption behavior. In this transformation, they need information on availability, reusability, and impact of green products on the environment from marketers. The highest education of the university teachers does not guarantee a green purchase decision over quality and price. The government, companies, consumers, and the organizations working for the protection of the environment should pool their efforts to inculcate green consumer behavior among consumers in general and the educated segment in particular, as they can establish a trend that may be followed by other sections of society.

REORIENTATION IN EDUCATION IN INDIA

APPROACH

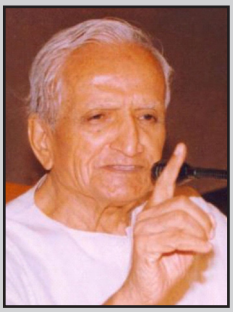

Dr. Dattopant Bapurao Thengari
Eminent Scholar, Thinkar
and Social Workar

Living and learning

Literacy compaign and primary educational programme which includes, incidentally instruction in cleanliness, elementry hygiene and civic sense must be in keeping with the conditations and the requirements of the country. There should be no bifurcation between living & learning. “work experience” should constitute not just an appendage but an integaral part of the educatuional programmes at every level. The campaign for primary education should be linked up with crafts and occuapations that are actually in existence and there should be no stress on furnishing irrelevant academic information at those levels. The evaluation of the Nai Talim systems as introduced and implemented so for may be separate and even controversial subject. Integratation of physical and manual labour into one whole and the use of both as a unit it is a must. Some relevant questions raised by Revered Vinobaji are important, for example, whether we can have teachers who would follow their respective professions or trades during day-time and teach the village students during evening or night; whether we can evolve a system of not only “earning & learning but of earning through learning and learning through earning. So that even as a student, one should be enabled to make one’s contribution to the national production and simultanneously, that production should meet part of the cost of the education; whether it would be advisable to change the timing of holidays in keeping with the requirements of agriculture and allied industries; whether the scheme of ‘The our school’ proposed by him would be practicable and benificail? For furnishing square replies to these questions, further study and investigation would be necessary. But most of his basic principles are certainly in consonace with the indigenious traditions and conditions. ‘It is the task of education to make students self-sufficient in the matter of acquiring knowledge’, Education means the attainment of self-suffiency upto sixteen; ‘education through self-sufficiency after sixteen’. Education ought to be able to claim that it can protect the country by the power of non-voilence. The goal of education for the nation, for the humanity, must be freedom from fear, not only for this country but for the world-wide comminity of man.

The more closely we can live in harmony with nature, the greater our walefare and happiness will be. Work & knowledge must never be separated. Education must be through work. All the faculties of a student should develop as a harmonious itegrated whole. The whole educational philosophy of India can be summed up in the three words- Shruti, Smriti & Kriti. In the Upanishads, King Aswapathi claim that his Kingdom no one is ignorant or unemployed. Every

Vanprastha must be teacher and every wandering Sanyasi a University. There is no obstacles in village life for the development of scientific concepts. The Foundation should be laid in the organisation of the There our school. The only kind of school that can be called a family-school is one that recognises that the foundation of eduction is a home where the pupils live with the teachers and build up its teaching around that. On the one hand the school should enter the home , and one the other, the home must penetrate into the school. The Purpose of integrated method of teaching is to give knowledge through a handicraft. The integrated method takes as the medium of education some many sided craft which is intimately related to life. This craft is not merely a tool of education, it is an indivisible part of it. Through the crafts, three objectives are to be reached – (i) Holestic development of the children's innate faculties should be useful in life. (ii) Teaching of the various kinds of knowledge that are useful in life & (iii) The achievement of a skill by which the children can earn their living.

Education must include Brahma-Vidya & craft. The teacher should grow in learning along with the taught. As decleared in 'Tejaswinavaditamastu' . 'Let our (Joint) learning be briliant. In all the fourteen languages recognised in the Constitution of India, there is no verb 'to teach,' but only a verb to learn'.

It is worth nothing that Shri Vinobaji has further elaborated and systematised the thoughts of Revered Mahatmaji on education. His scheme is not just an Indian version or adaptation in John Dewey's Instrumentalist principle of 'learn by doing' . It is rooted in Indian culture. Ghandhism, which considers school as a field of maral training to produce men and women of deep religious conviction devoted to tolerance, peace and mutual co-operation, lays great stress upon 'agriculture (as the ultimate industry of man), ruralisation of population (against the modern word-wide trend towards rapid and even premature urbanisation), small-scale self-suffieiency with high 'want-get' ratio, maximum disperation of industry in small rural and semi-rural units, co-operation instead of competition, and a de-centerlise instead of state planned economy. Curiously enouth, on the question of learning through doing even Karl Marx is in agreement with Gandhiji when he observes, "The education of the future will in the case of every child over a certain age, combine productive labour with education (unterricht) and atheletics (gymnastic) not merely as one of the methods of raising social production but as the only method of producing fully developed human beings.''

Fromm says that a mentally healthy person has developed a zest of living that includes a desire for activity which is reflected in an attitude of utilising whatever potentialites he possesses, in productive forms of be-haviour''. (Man for himsef)

Bhartiya Technology

Sharing broadly, the spirit behind such thinking, Revered Shri Guruji require our technologists to devise and introduced, for the benefit of artisans, reasonably adaptable changes in the traditional techniques of production, without incurring the risk of increase in un-employment of workers, wastage of small savings and also of available managerial and technical skills and complete decapitalisation of the existing means of production. He also wanted them to evolve or own indigenous technology with great emphasis on decentralisation of the processes of production, with the help of power, with home, instead of factory, as a centre of production. He urged for evolution of the technology that would increase the employment potential of each Rupee of industrial investment without increasing cost per unit of output-the technology capable of reconciling growth in employment with industrial efficiency. Suitable elementry parts of such technology should constitue an integral part of the programme for early as well as adult education, he felt.

Sanskaras

He, however, laid greater emphasis on imprinting appropriate 'sanskaras' on mind in early age or during formative stage. The virtues, the habits, the values of life essential for national reconstruction, must become

part of the earliest education, he insisted. While enumerating national objectives of education, the Kothari commission ought to have given first priority to the cultivation of social, moaral & spiritual values, he thought. Man is the main instrument of change; only 'sanskaras' in early age can equip him mentally, morally and spiritually to play this role effectively.

Re-orientation

Shri Guruji stood for complete re-orientation of the system of education with a view to fuufil total developmental and employement needs of the country and to facilitate simultaneously complete unfoldment of potential talents, faculties & aptitudes of every individual. It is the duty of the society-including the state- to offer fullest scope to every individual for his fullest development according to his nature and aptitudes so as to fully utilised all faculties of all individuals for the cause of nation prosperity. The test of successful planning, according to him, was to equate, as fully as possible, the sum-total of the contribution of all, such fully developed as well as developing individuals with the total requirements of the nation. But this could not be achieved unless and until the level of national consciousness was raised adequately.

With this end in view, the foundations are to be laid-the seed is to be sown in the early part of life. This is the most essential part of early education for the national development.

Pranab Da, Pranam

Shri Pranab Kumar Mukherjee was a senior political leader. He occupied several ministerial portfolios like minister for external affairs, finance minister etc. in the Government of India. He became Honourable President of India in 2012. He was awarded India's highest civilian honour, the **BHARAT RATNA** in 2019.

Foreign Honours :

- Bangladesh Liberation War Honour on 5th March, 2013.
- Grand Cross of National Order of the lvory Coast in June, 2016.
- Grand Colla of the Order of Makarios III on 28th April, 2017.

Academic Honours :

- Hon. Doctor of Letters degree by the University of Wolverhampton, UK in 2011.
- Hon. Doctorate in Political Science by University of Jordan on 11th October, 2015.
- Hon. Doctorate by Hebrew Universit;y of Jerusalem, Israel on 15th October, 2015.

Shri Mukharjee, authour of many books on economy, politics etc. was a spiritual devottee to 'Ma Durga'. He gave immense affection to children having innovative ideas. He was 'Ajatashatru' & had a family relations with leaders in different political parties.

Shri Pranab Mukherjee gave his kind presence in Sangh Shiksha Varg of Rashtriya Swaymsevak Sangha at Nagpur on 7th June 2018 and appreciated the social activities of RSS in all over the country.

We pay our respects to Pranab Mukharji.

Pranab Da, Pranam.........

NATIONAL EDUCATION POLICY 2019 :- 10 BRILLIANT IDEAS……

EDUCATION POLICY

Prof. Milind S. Marathe.
Former National President and present special invitee of National Executve Council of ABVP.

Contact
Mob. 9871873686

Draft of New Education Policy 2019 was open in public domain from 31st May 2019 for comments and assessment. The vision of the policy is " The National Education Policy 2019 envisions an ***India centred*** education system that contributes directly to transforming our nation ***sustainably*** into an ***equitable*** and ***vibrant*** knowledge society, by providing ***high quality*** education to all."

I am very happy about the three things in the vision. First its title is "National Education Policy 2019" and not "New Education Policy 2019". Replacement of word "New" by "National" speaks a lot. Secondly vision mentions very loud and clear that it is "Bharat Centric Education System". As Swami Vivekanand said " Education is not the amount of information that we put in to your brain and runs riot there, undigested , all your life but we must have life-building, man-making, character – building assimilations of ideas. If you have assimilated five ideas and made them your life and character, you are more educated than a man who has got by heart a whole library." Bharatiya ethos of education is development of body, mind, intellect and aatman of an every individual. Synchronized involvement of Head, Heart and Hand is the key of holistic education. Thirdly this education system will be instrumental in transforming Bharat in to a vibrant yet sustainable knowledge society by providing high quality education to all.

I am putting 10 important, innovative ideas in NEP 2019.

1) Early Childhood Care and Education (ECCE) and re-structuring of school curriculum in to 5+3+3+4 design:-

Neuroscience shows that 85% of Child's Cumilative Brain Development occurs from 0 to 6 years and thus learning process for a child starts immediately after birth. Various levels of neglect and deprivation in early childhood is the root cause of deficiencies in development of critical areas of brain and so excellent care, nutrition, physical and emotional hand-holding, nurture is a must for all children. In Bharat almost all poor, rural children don't get this support. NEP 2019 included education of this age group, 3 to 6 years for the first time under Ministry of Education and suggested re-structuring of school curriculum in to 5+3+3+4 design which is a very welcoming step. Foundational stage from age 3 to 8 comprises of pre-primary school of 3 years and grade 1 and 2 . It will have flexible, play-based, activity based, discovery based learning. Preparatory stage from age 8 to 11 is of 3 years and grade 3rd, 4th and 5th will comprise of reading, writing, speaking, language,

◇◇◇

Neuroscience shows that 85% of Child's Cumilative Brain Development occurs from 0 to 6 years and thus learning process for a child starts immediately after birth. Various levels of neglect and deprivation in early childhood is the root cause of deficiencies in development of critical areas of brain and so excellent care, nutrition, physical and emotional hand-holding, nurture is a must for all children.

◇

art, science, mathematics, sports and physical education. Middle stage from age 11 to 14 is of 3 years and grades 6th,7th and 8th will comprise of more formal style of learning with social science, humanities, deeper and experiential learning of subjects. High stage is of age 14 to 18 of 4 years and grades 9th , 10th, 11th and 12th. It will be now multi-disciplinary study, vocational subjects, skill-based courses with great depth, greater critical thinking, more flexibility with student's choice.

It's a complete revamping of school education. Every student in grade 5 and beyond will achieve foundational literacy and numeracy. All stages can heavily incorporate local traditions, ethical reasoning,digital literacy, creative, collaborative and exploratory activities. This will move the school education system towards learning how to learn, increased flexibility in choice of subjects, No hard separation in terms of arts and science, in terms of curricular, extra-curricular and co-curricular. No hard separation of Vocational or skill based streams and academic streams So everything is equally important and equally curricular. RTE is extended up to 18 years.

2) Education in the Local Language or mother tongue:-

Language is not only the medium of instruction but it is the expression of an Individual, of a society and its collective continuity in culture. The science has proved that young children learn best through their local language, which is the language spoken at home and children between ages of 2 to 8 have an excellent capacity to learn multiple languages. NEP 2019 strongly suggests that the medium of instruction preferably till grade 8th or at least till grade 5thwill be the home language/mother tongue/local language. It also suggests continuation of three language formula in its spirit to make students capable in communicating in multiple languages with required flexibility. Learning science bilingually, study of Sanskrit, study of foreign languages, standardization of Indian Sign Language,

3) Special Care of Under-represented groups (URGs) in education:-

URGs in education are categorized by NEP 2019 in to those having given gender identities like women and transgender individuals, given socio-cultural identities like SC, St, OBCs, Muslims, migrant communities, given special needs like learning difficulties and given socio-economic identities like urban poor and rural needy. Enrollment of URGs decline steadily from grade 1 to 12 and even steeper in higher education. Lack of access of good quality schools, poverty, social beliefs and biases and un-familiar, un-relatable curriculum and text books are the obstacles in equitable and inclusive education of URGs.

NEP 2019 is very sensitive towards this issue and has come up with various measures to attain full equity and inclusion. Targeted scholarships and other financial support, bicycle provision for transport, declaring large population regions of certain URGs as Special Education Zones, availability and capacity development of teachers, reducing pupil-teacher ratio to 25:1 and very importantly to change the culture of schools to make them free from discrimination, harassment intimidation and make them sensitize about the needs of URGs.

4) Concept of School Complex:-

Because of strong drive of Sarva Shiksha Abhiyan(SSA) and notable

◇◇◇

Thus NEP 2019 has come up with very good and workable idea of School Complex. Nearby schools will be organized in to School Complexes and will be treated as a basic entity for governance. It will enable to share key physical resources as well as human resources like expert teachers, counselors, music teacher, computer lab instructor. This complex can integrate ECCE, vocational education, needs of special children and so on.

◇

efforts of the States, Bharat now has achieved near 100 % enrollment of children in primary schools. But U-DISE data of 2016-17 shows 28 % of public primary and 14.8 % of upper primary schools have less than 30 students and even less. 119303 single-teacher schools are working. This shows that we have not yet touched to quality aspect of schools. Due to small size of school it's very difficult or next to impossible to allocate good human resources as teachers, physical resources like laboratory equipment, library books, facilities for sports, music and arts activities. Governance and management become difficult with small size and vibrancy is lost. It starts functioning sub-optimally. For optimal learning environment a minimum critical number of students per division is necessary. One option is merging or consolidation of schools, but it hampers access in rural.

Thus NEP 2019 has come up with very good and workable idea of School Complex. Nearby schools will be organized in to School Complexes and will be treated as a basic entity for governance. It will enable to share key physical resources as well as human resources like expert teachers, counselors, music teacher, computer lab instructor. This complex can integrate ECCE, vocational education, needs of special children and so on.

5) Restructuring and Consolidation of Higher Education Institutions (HEI) :-

Higher education must develop good, well-rounded and creative individuals with intellectual curiosity, good research capabilities or problem solving attitude, spirit of service and strong ethical compass of Bharat.

But this aim is far from reach. India's higher education system is facing many challenges.

a. Fragmentation and small size of HEIs ;-India has over 800 Universities and 40000 + colleges over 40% of all these colleges run Only Single Programme. Over 20 % of colleges have enrollment below 100, while only 4 % of colleges have enrollment over 3000 (AISHE 2016-17). This fragmentation leads to sub-optimal performance like schools with small size.

b. Rigid boundaries of disciplines and fields

c. Lack of research at most of the Universities and colleges leading to lack of research culture in HEIs.

d. Lack of access in socio-economically disadvantaged areas

e. Lack of teachers and Institutional Autonomy.

So NEP 2019 has suggested brilliant idea of establishing large multi-disciplinary universities and colleges with teaching programs across the disciplines and fields. Research Universities, Teaching Universities and Colleges will be the 3 types of HEIs in India. It will have autonomy and freedom to move from one type to another type. At least one institute of type 1 to 3 will be established in every disadvantaged district within a span of 5 years. After independence Indian HE system was predominantly affiliating type of system. But in last 70 years we could not get desired results. So let us say good bye to affiliating system and make all our HEIs either Research or Teaching Universities or degree granting autonomous colleges. There will be no affiliating universities or affiliated colleges.

◇◇◇

NEP 2019 has come up with the proposal of establishing NRF to stimulate and expand research in India. NRF will seed, cultivate and grow research culture right from schools to HEIs. IT will monitor, mentor the HEIs by eminent research scholars across the country. NRF will fund competitive, peer-reviewed grant proposals of all types and of all disciplines. It will act as an umbrella organization between researchers, HEIs, funding departments of government, Industries, NRL and policy makers and synchronize the efforts for research.

◇

6) Shifting towards more Liberal Education orSarvsamaveshak Education or more holistic Education :-

Various ancient books in India has referred arts as "Kala" .Banabhatta in his famous book Kadambari mentioned 64 kalas or 64 types of arts which included music, painting, sculpture,dance, languages, literature in addition to kalas like engineering, surgery, medicine,astrology and mathematics, carpentary, foundary, pottery and so on. These kalas were part of syllabus in Universities like Nalanda and Takshashila. This critical Bharatiya concept of Liberal Arts or sarvasamaveshakkalaor Holistic Education is brought back by NEP 2019.

It is marriage between science and humanities, mathematics and arts, medicine and physics, aeronautical engineering and Sanskrit. It develops both sides creative side and analytical side of brain. Curriculum of Sarvasamaveshak Education will be developed with the areas which are left out today because of strong compartmentalization. Innovation and critical thinking, higher order thinking, inter-personal relations , working in a team, communication of all types, problem solving approach, foundation of social work, Internships and research opportunities, developing constitutional values, ethical values, understanding idea of Bharat, training of concentration of mind and detachment of mind and such many topics can be brought in to the curriculum which will be helpful for overall development of personality of students. Students will be prepared for the life and not for mere jobs. A 4 year bachelor program of Sarvasamaveshak education can be started. This approach of preparing student for life will energise under raduate education in India.

7) Establishment of National Research Foundation (NRF) :-

Unfortunately R&I investment in India was 0.8 % of GDP in 2008 and dropped to 0.69 %, in 2014 as compared to 2.8 % in USA, 2.1 % in China, 4.1 % in South Korea and 4.3 % in Israel. This has reflected in low research output in India.The number of researchers per 1 lakh population in India is merely 15, compared to 111 in China, 423 in USA and 825 in Israel (Economic Survey of India 2016-17). According to World Intellectual Property Organisation (WIPO), China made 1338503 patents applications of which only 10 % by non-resident Chinese, USA filed 605571 patents while India filed only 45057 of which over 70 % by NRIs.

Lack of research culture and mindset, lack of funding and lack of research capabilities in most universities and delinking of Universities and National Research Laboratories (NRL) are the root causes of poor research in India.

NEP 2019 has come up with the proposal of establishing NRF to stimulate and expand research in India. NRF will seed, cultivate and grow research culture right from schools to HEIs. IT will monitor, mentor the HEIs by eminent research scholars across the country. NRF will fund competitive, peer-reviewed grant proposals of all types and of all disciplines. It will act as an umbrella organization between researchers, HEIs, funding departments of government, Industries, NRL and policy makers and synchronize the efforts for research.

8) Rashtriya Shiksha Aayog (RSA) or National Education Commission (NEC) :-

Education in India is driven by political masters of the time and so it is facing problem of short sightedness, temporary solutions for temporary benefits, piecemeal approach of the education and disconnect from the ethos of the country. So a long pending need was felt to establish a Rashtriya Shiksha Aayog constituted by act of parliament similar to the Election Commission of India which will work independently with integrated approach from school education to higher education.

NEP 2019 brigs this very important concept in it's draft. RSA with the help of Rajya Shiksha Aayog will monitor education in all respect. Governance and regulation of education right from setting parameters for quality, accreditation of schools and HEIs, funding for development of education, examination conduction and administration of education will be handled by RSA.

9) Say no to Commercialisation of education:-

NEP 2019 clearly proclaims that Education is a not-for-profit activity. It is a charitable activity and commercialization of education is not at all acceptable. This clear direction was very much required because wrong perception is there in the minds of many people that quality education will be the costly education and private education is quality education. Actually affordable quality education is the need of an hour.

Public expenditure on education in India was 2.7 % of GDP in 2017-18 which was around 10 % of total government (center and state) spending. NEP 2019 categorically said that there is a need of significant increase in public investment and not expenditure from current 10 % of overall investment to 20 % in a next few years. In addition to this public investment policy encourage philanthropic private funding in education. This funding is for existing institutes for scholarship, infrastructure development, faculty development and research activities. There is a need of central legislation to control commercialization of education.

10) Teachers :-

Teachers truly shape the future of our children and thus our nation. So we need passionate, motivated, highly qualified, professionally trained, well equipped teachers with mother like heart for their students at all levels of education.

NEP 2019 suggested very good methods to increase quality of teachers. Teacher education must be 4 year integrated B.Ed. program after 12 th standard, 2 years after graduation and one year after post graduation and it will be an integral part of HE system and thus should be conducted by multidisciplinary colleges and universities. Special merit scholarship coupled with guaranteed employment in rural areas for brilliant students is suggested. Harmful practice of excessive teacher transfer is halted. All the vacant posts of teachers must be filled with rigorous, impartial, transparent process. All para-teacher system across the country will be stopped by 2022. Closure of substandard teacher education institutes will be done on top priority.

NEP 2019 is an India centric, Indian education system with primacy of Indian languages. It is forward looking with indigenous wisdom and roots. It is integrated and holistic.. It has a capacity to completely revamp the Indian Education System. This NEP will throw away the colonial education policy lock, stock and barrel. So by and large I wholeheartedly welcome the Draft NationalEducation Policy 2019 and appeal to government to accept it immediately. But I know that any policy document is incomplete if it is not implemented with its letter and spirit. For well-meaning critics this policy may be difficult in implementation but as it seems to be difficult, it is worth doing task. Otherwise simple tasks can be done by any one. I appeal to all the members of education fraternity, including government, to come forward and take maximum efforts for successful implementation of this game changer NEP 2019.

COLLECTIVE FIGHT AGAINST CORONA

CURRENT ISSUE

Shri Dattatrey Hosbale
Sah Sarkaryavah
Post graduate in English literature.
Founder editor of Aseema,
a Kannada monthly.

This is an unprecedented scenario with over 36,80,000 people infected and over 2,54,000 already dead all over the world. Almost the entire humanity is in the lockdown mode, and all countries are fighting the COVID19 crisis in their own way. Bharat is also engaged in this very challenging struggle and Rashtriya Swayamsevak Sangh, being the prominent voluntary organisation, is also playing its role to address the crisis.

Bharat's Collective Fight against Corona

Since the news of possible health emergency first came, there has been a remarkably pro-active response by Bharat. The Union Government started taking the effective steps about screening and quarantine process of the passengers arriving from foreign countries. The State Governments also responded actively to the crisis. The decision of introducing lockdown in a phased manner-first for one day and then 7 days which was extended to 21 days-helped a lot in the psychological preparation of the society. It also provided a window for the administration to prepare the necessary health infrastructure in terms of testing facilities and quarantine zones.

Now we are into Lockdown 3.0.

The way Bharatiya society, in general, has cooperated with the government agencies and risen to occasion is the most remarkable story. Ordinary Bharatiyas have a spiritual bent of mind and cooperative nature which is proved to be a decisive factor in this fight against the Pandemic. People came out voluntarily to help the poor and needy and to provide food and other daily needs, paid their staffs in the support systems - both at a personal and professional level without work, and, by and large, stood solidly by the Corona Frontline Warriors. In our social structure, people voluntarily come forward to help their fellow citizens in need and not depend upon the government agencies for everything. The way Temples, Mathas, Gurudwaras, Deras, etc. started serving the stranded migrant workers and poor in the surrounding areas is the most commendable and inspiring part of this story. Despite a few incidences of unacceptable behaviour by some, a pro-active and decisive Government and a sensitive society together have kept the number of infected under control and number of deaths remarkably low compared to other countries.

RSS and the Service Activities

Rashtriya Swayamsevak Sangh has always taken the lead when it comes to serving the people in any calamity, and Corona crisis is not an exception. When the crisis started looming large, RSS was in the midst of organising its most significant annual event, the Pratinidhi

Sabha (the National Council) at Bengaluru from 15-17 March 2020. But realising the nature of the threat, RSS immediately decided to call off the event and asked the representatives from all over Bharat to return, who had already started or were to start their journey for the meeting. Those who had already reached Bengaluru were sent back with all health protocols. In the next stage, RSS also decided to suspend all its training camps and gatherings till June end, which happened for the first time since 1929.

The swayamsevaks (volunteers of RSS) are accustomed to start different activities to provide relief to people during any natural or man-made crisis. Over 3,42,000 Swayamsevaks are carrying out various Sewa (help and relief) activities at 67,336 places, and till now, about 50,48,088 families and individuals have been benefited by these activities. Over 3,17,12,767 meals have been served by our Swaymsevaks. They have also distributed over 44,54,555 masks. Our Swayamsevaks have started 25 types of sewa activities during the corona crisis from providing helpline numbers to various categories as per the needs to offering meals, shelter and medical help to people who are either stranded or coming from other states. From the urban poor to nomads and scheduled tribes, and even animals who are an integral part of our ecosystem, most marginalised sections are served by the Swayamsevaks on the priority basis. The Swayamsevaks are playing an important role as a support system to the Government agencies in distributing masks, sanitizers, safety equipments, and most importantly, in sensitising the communities about the nature of the virus and explaining preventive measures. Specialised training is also given for the purpose, and the Swayamsevaks are following all directions given by the official health authorities and administration. The 1.3 billion people of Bharat being the children of Bharat Mata (Mother Bharat), are our brothers and sisters - this natural sense of belongingness inculcated in the RSS Shakha, is the fundamental motivator behind all these activities.

Preparing for the Post-Corona World

The Corona Crisis has posed many new challenges, and whatever may be the nature of the future struggle, we will have to carry it till the final victory. In this process, we should not lose sight of opportunities to come together to save the world. Whatever may be our philosophical pursuance, we have to accept the fact that the future world order is not going to be the same.

Hopefully, a detailed inquiry will be carried out to investigate the origin, reason and impact of the Pandemic. The entire world should come together to avoid such an emergency in future and create new regimes to deal with, involving responsible individuals, organisations and countries.

Besides, the limitations of ideologies of both global capitalism and global communism have exposed themselves in dealing with the Pandemic. The materialist world view imposed on the entire world can push us to newer cycles of economic depression and environmental degradation. In such a scenario, it is prudent that we develop a new model based on self-reliance and Swadeshi. In this indigenous model, local resources, workforce and needs would be integrated into the economic activity, taking into account the ecological considerations. RSS believes that such a model is applicable not just for Bharat but for the entire world. Though technologically and at the level of consciousness, Bharatiya thought has always been Global and universal – believed in the concept of 'Vasudhaiva Kutumbakam' meaning the whole world is a family – the economic decentralisation and social cohesion are the way forward to fulfil the objective of sustainable development.

Family is the basic unit of our society. There is a definite increase in the dialogue among family members as they are staying together for an extended period. We hope that the importance of family institution will be realised further in the post-corona world.

It is time to fight the enemy of the humanity successfully and to write bright new chapters of the new world as one people without any

discrimination. However, we have to be cautious against such forces as are inimical and antithetical to this oneness, and expose their intent, without creating any feeling of 'otherisation' and 'exclusion'.

RSS believes that the Pandemic, apart from being an unfortunate and cruel challenge, has also brought an excellent opportunity to review our existing models of so-called development, the life styles and approach to ecology. Here, Bharat is eminently placed to play a significant role that would lead humanity to sustainable development, progress with a humane face, and durable peace based on cooperation and mutual respect. We need to accept this challenge and work patiently and consistently to realise a harmonious and integrated world where every 'local' will be equally important in the 'global'. Therefore, A human centric holistic coalition is the pre requisite for the emergence of a new world order.

KARMYOGEE
SRI KARNATI HANUMANTHA RAO

State Organizing Secretary, Sri Saraswathi Vidya Peetham, Andhra Pradesh, passed away due to SEVERE HEART ATTACK on 17th May, 2020 at 5:30 p.m. at Sangh Karyalaya(RSS) in Vijayawada. He was born in 1971 in Kalakota village near Madhira in Khammam District, in Telangana State. After completion of his graduation in B. Sc, he came out as a Sevavrathi in Bharati Bhawan in Burgampahad in Khammam District in 1995-96.

Turned as Sangh Pracharak, in the year of 2000 and worked as Khanda Pracharak and Zila Pracharak for 2 years, and Vibhag Pracharak in Khammam Vibhag for one year. He extended the Service Activities in Vanavasi Regions in Andhra Pradesh. Later he worked as Ongole Vibhag Pracharak for 4 years.

He contributed his services as Saha Prantha Seva Pramukh for 3 years and Pranth Seva Pramukh for 01 year in Andhra Pradesh.

Since 2014 August, he has been working as Organising Secretary of Vidyabharathi Andhra Pradesh.

He was very interested in Yoga and he was in the Akhil Bharatiya Toly of Yoga of Rashtriya Swayamsevak Sangh.

Vidya Bharti Akhil Bhariya Shiksha Sansthan heartly pay to homage them.

COVID-19, A PANDEMIC CONTAGIOUS DISEASE

CURRENT ISSUE

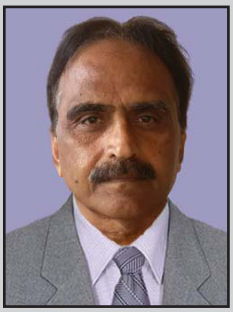

Dr. Rajendra Kumar Avasthi
Associate Professor (Retd.)
M. D. University, Rohtak (Haryana)
published 38 research papers in various journals of National and International repute, Talks on All India Radio, was Fellow of Entomological Society of India and Fellow of Royal Entomological Society, London, presently member of editorial board and subject expert of a scientific journal "Journal of Threatened Taxa."

Contact
Mob. 9416247508

Now-a-days the entire world is facing with a dreaded new contagious disease COVID-19 commonly known as Coronavirus disease. This is caused by one of the members of the Coronaviruses. Globally several countries are facing manychallenges with the infection of this coronavirus, including great threat to the economy and human livesas well. A great majority of the people have lost their lives so far due to this infectious disease.

The new coronavirus first emerged in Wuhan city of China in December 2019 and spread across China to other countries around the world. By the end of January 2020 this new coronavirus has been declared as public health emergency of International concern by WHO.

Coronaviruses are a large family of viruses which may cause illness in animals or humans. These viruses are generally spherical in shape and have spikes of protein on their outer surface. Under electron microscopethis gives an experience of a crown or "corona" over the virus surface. Due to this characteristicthese viruses are collectively known as coronavirus.

In humans, several coronaviruses are known to cause respiratory infections ranging from common cold to more severe disease like Middle East Respiratory Syndrome (MERS) and Severe Acute Respiratory Syndrome (SARS). Most of the people get infected with coronaviruses at some points in their lives. Majority of these infections are harmless and curable,but the new discovered coronavirus causing COVID-19 disease is of a notable exception.

The COVID-19 is infectious disease and its out break began in Wuhan, China in December 2019. It is now a pandemic affecting many countries globally.

The newly discovered coronavirusis named as "Severe Acute Respiratory Syndrome Coronavirus 2 (SARS-CoV-2)" by International Committee on Taxonomy of Viruses (ICTV) on 11 February 2020. This name was chosen because this virus is genetically related to the coronavirus responsible for the SARS outbreak of 2003. However, these two are not similar in nature. On the same day WHO also announced "COVID-19" as the name of this new disease spread by "SARS-CoV-2" virus commonly known as COVID-19 virus.

The viruses are very simple in their structure. They have a genome (genetic material) which may be RNA or DNA (ribonucleic acid and deoxyribonucleic acid respectively). The viruses with RNA genome are said to be RNA viruses. The viral genome is enclosed within a protein coat called capsid. COVID-19 virus issomewhat spherical in shape and is RNA virus having a single stranded

RNA genome with approximately 26-32 kilobase (1 kilobase = 1000 bases) arranged in a linear order. On the surface of the virus are present large number of clubbed spikes of glycoprotein. The virions or virus particles are enclosed within a fatty envelop. The enveloped virus particles are approximately 120 nm(nano meter)in diameter (1nm = 10-9meter).

When COVID-19 virus (SARS-CoV-2) enters in the human body particularly in upper respiratory tract, the glycoproteins of spikes, bind with proteins on the host cell (human body cell) surface and make a passage for the entry of the viral genome into the host cell. Within the host cells the viral genomereplicate with the host cells genome by which theyshow abnormal behavior and develop symptoms of infection. COVID-19 virus has much more affinities with human body cells as compare with the virus that causes SARS in 2003. Thus, coronavirus is more contagious than other viruses.

The studies showthat coronaviruses replicate their RNA genomes using enzymes called RNA-dependent RNA Polymerase, which are prone to errors. Thus, viral genomic analysis suggests that COVID-19 is mutating slowly and reducing the chance of it becoming more deadly.

The most commonly reported symptoms of COVID-19 include a fever, dry cough and tiredness. In mild cases people may get a runny nose or a sore throat. Besides these aches and pains, nasal congestion, headache, conjunctivitis, diarrhea, loss of taste or smell are also seen in COVID-19 infection. In the most severe cases, infected people can develop difficulty in breathing and may lead to organ failure. In some cases, these are fatal. However, in 80% cases people recover from this infection without needing hospital treatment.

The older people and those suffering from high blood pressure, heart and lungs ailment, diabetes or cancer are more prone to the COVID-19 infection. However,it is reported that anyone can catch COVID-19 and become seriously ill including children as well.

In COVID-19, the viral incubation period (period between exposure to virus and the first symptom of the disease) is around five to six days but can range from 1-14 days. Thus, at least 14 days quarantine is required for a suspected person to prevent the spread of the infection.

Most of the coronaviruses have their origin in animals but for COVID-19 virus the possible animal source has yet to be confirmed. This virus spread from person to person by inhaling the small droplets discharged through nose or mouth during coughs, sneezes, or speaks by virus infected person. These droplets are relatively heavy, do not travel far and quickly settle down to the ground. Thus, keeping a safe distance of about one meter from infected person and using a mask to cover the mouth and nose can protect from the infection. Besides this these droplets can infect the objects like tables, door handles and others nearer to the infected person. The people can become infected by touching these objects or surfaces and then touching their eyes, Nose or mouth. Thus, it is very important to wash the hands regularly with soap or clean with any alcohol-basedsanitizer. Soap and alcohol dissolve the fatty envelop of the virus which lead to its death and prevent the infection.

During coronavirus infection the use of terms like quarantine, isolation and self-distancing are more common. Quarantine refers to separatinginfection suspected person and limits their activities, whereas isolation means separating infected person completely from the normal person to prevent the spread of infection. The self-distancing means to keep at least 1-meter distance from each other to keep ourselves safe from the infection of coronavirus.

So far, no vaccine or drug is available for the treatment of this new disease. However, the efforts are in progress. Thus, keeping ourselves safe from the infection and boosting the body immunity by using citrus or equivalent fruits are the bestremedies of this infectious disease. So, keep a distance and remain safe.

DISCIPLINE

DISCIPLINE

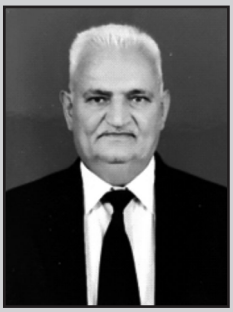

Shri Nar Singh Sehrawat
Ex. Value Edit Tax Officer
(DANICS)
Ex- Metropolitan Magistrate, Delhi
Educationist, Social Worker

Contact
Mob. 9811211107

Discipline is the essence of life or conduct of individual as well as an institution. Though it borders civility, it in no way is easy to define it. Now, in order to understand what exactly it means, one has to go into its roots. The origin of the word is discipulnus, which in Latin means disciple i.e. a follower, like that of either Lord Buddha or Christ, who (follower) carried their messages to far corners of the world. So, discipline, in fact, would be, to have the same tenacity of purpose and dedication that one such disciple would have towards his master.

It can be equated with the discipline related with a crunch. What we expect from the word discipline is to carry out our orders without any hitch, so that there is no disharmony. What all would then constitute the word discipline - orderliness, harmony, control/ restraint (dos and don'ts), guidance, correction and etiquette.

All these, character- attributes must be present in the act of discipline. If you wish to find a simplified version of the said concept, you may say, Good sense, loyalty and decency should constitute an act of discipline.

An employee, private or government, would be expected to be, honest, just, loyal, trustworthy, dignified, impartial, temperate, helpful, courteous and courageous i.e. to be good in fact, is not that easy; one has to be a no nonsense man, or a perfect gentleman.

In contrast, insubordination dooms those involved, whether an individual or an organisation. For a govt. Servant there are both written and unwritten codes. They are supposed to work with integrity, devotion towards the pleasure of the President under "Doctrine of pleasure" defined in article 310 of the constitution.

Interestingly, the concept of "master and servant" was defined clearly in 1935, by a Bombay high court judge, " a Servant is a person, who voluntarily agrees, during the period of service, to obey the lawful orders or directives of his master or his agents;" voluntarily bound by the rigorous codes of conduct. Codified rules are written, but there are many unwritten codes which are absolutely unforgiving. Any transgression or violation invites exemplary punishment.

Disciplinary rules have been enacted to take action against the erring employee on any ungentlemanly or mischievous conduct. Disciplinary proceedings are used, sometimes along with criminal proceedings, to enquire and act accordingly. If there is a vigilance angle, then disciplinary and criminal proceedings may be launched simultaneously. Different CCS or CCA rules are there for disciplinary proceedings, suspension, different penalties, appointing authority,

appointment of enquiry officer, enquiry report, acceptance or non-acceptance of the report and then the appropriate punishment.

What is laudable about CCA+CCS rules 1965 is that it deals with every aspect of proceedings, enquiry, resulting in appropriate punishment in detail. The accused needs to be allowed revisions and reviews. Aggrieved, accused has provisions to appeal and also they explain the difference between revisions and review. CCA rules 1965 are absolutely comprehensive and unequivocal, which, thus, do not admit any interference, even by a court of law except, however, in the form of suggestions with regard to any required corrections.

An important part of the relationship between master and servant is "trust." Once the employee loses the trust of his master, he (master) has a right to dispense with services of the employee, depending upon the severity of the lapse. Vast powers are vested in the appointing authority. The reason behind is that no institution of any kind can function well, if the behaviour of the employee is not disciplined or purposeful.

A disciplinary case, when initiated, has to pass through a number of stages, before an appropriate decision is arrived at. In fact because of abundant indiscipline and indifferent attitude or behaviour in existence, intolerable inefficiency and moral decay pervades the service life today.

Either on receipt of a complaint or noticing anything improper, an enquiry is ordered. Enquiry officer is appointed with one presenting officer to assist him. Charge sheet is issued on the basis of which, the enquiry is conducted. During the proceedings, the accused and his witnesses are heard, he (accused) is given sufficient opportunity to explain his side, else this can be a charge against the enquiry officer. At the end of these proceedings, the enquiry officer submits his report, which, if accepted by the master (appointing authority), is processed further for finality i.e. deciding punishment; a speaking order is issued. The laid out CCA+CCS rules leave no place for anybody, even the court of law, to interfere; court can at the most suggest some corrective measures.

Discipline, in fact, is the key to every happening, involving humans.

Remembering that our ultimate goal is an inner pursuit of perfection within ourselve and not a material and transient one, helps in curbing jealousy and frustration and enables us to function better. Arrogance and ego, often found in successful people, hinder progress. A few rupees do not enhance a person's ultimate value ! Sri Ramakrishna once said that people have so many desires and so much ego, yet after death, all that is left is one pound worth of ashes and a few bones! This will be condition of all- the greatest king, the poorest peasant, our best friend and worst enemy. Remembering this we should control our emotions and advance steadily towards the ultimate goal.

Our lives and our pursuit of material goals need to be designed with the ultimate goal in mind. Sri Ramakrishna remarked, 'The only purpose of life is God realization…if you put fifty zeros after one, you have a large sum. But erase the one and then nothing remains. It is the one that makes many.' God realization alone can give us uninterrupted peace while all the intermediate goals are like the zeroes. In the next chapter, the focus is on the practise of introspection as a tool to better ourselves.

Swami Amartyananda
Effective Life Management

TIBET : A VIEW

SCENARIO

Rajendra Kumar Shastri
Additional Session's Judge (Retd.)
Ex. CBI Judge
Thinker, Writer

Contact
Mob. 9910384740

A TV channel reported on 28th May 2020 about a US Senator, who introduced a bill in U.S. Parliament to get declared 'Tibet' an independent country, separate from China.

Tibetan History is evident that it was never a part of China rather it remained an independent country till was invaded and annexed by China, in 1950. Thomas Laird in his book 'In to Tibet' writes that plan of invasion was drawn up cleverly by the PLA's South-West Military Region, which included Deng xiao peng among its top three commanders. United States of America was occupied in Korea. China suspected that being involved in Korea, US would not want to open a second front in Tibet, particularly when thousands of US Soldiers were being killed in that war every day.

Forty thousand Chinese troops crossed Yangtze River in to Tibet. The Chinese moved with precision and cut off the retreat route of the Tibetan troops back into Central Tibet. A good portion of all of Tibet's forces were encircled without any chance of resupply and radio connect with Lhasa, where the Kashag was busy with a picnic.

By Oct 19, it was over and the Tibetan army in Eastern Tibet surrendered to Chinese at the monastery of Drukha. Tibetan army was dependent upon CIA operation to get modern weapons, which arrived too little & too late. They could not stand to Chinese army equipped with modern armoury, purchased from US . The news of the Chinese attack reached Lhasa only on the fifteenth and was withheld from the public for fear of chaos. Distorted reports of the attack on Tibet were reported in Indian newspapers on Oct. 12 but they were denounced by the then govt. for days as false rumors. The New York Times reported Chinese invasion only on Oct. 14.

Thomas Laird writes further that the invasion revealed lack of support from India, Great Britain and even United States. China had warned the Tibetans during 1950, not to listen to the imperialists. China offered a grand post colonial alliance, if Indian do not help Tibetans. Britain worried that by helping Tibet, China would challenge its colonial claims to Hong Kong. Chiang kai shek neutrilized America, giving the Chinese a free hand with which to invade Tibet without paying any price. A faction within CIA, that opposed America's covert involvement in Tibet between 1949 and 1972 believed that stable Sino-American relationship was worth any price like Tibet. India was considered to be not so friendly country having inclination towards USSR.

Nations of world hoped that Tibet and China could negotiate a respectfull settlement. India assured all that this

will happen. By 1952, 90 percent of the food that Chinese army needed to remain in Tibet was shipped through India. Once established in Tibet, China invaded India in 1962, leaving the latter surprised.

Dalai Lama had no choice but to send a team to negotiate with China. The Chinese promptly told Tibetans that they must accept all Chinese terms, otherwise invasion would resume. Under duress, Tibetans allowed Chinese to forge Govt. seals that Dalai Lama had used. Tibet did not remain interest of anyone. It was prevented from joining United Nations when Tiny El. Salvador brought question of Tibet to UN in 1951, the United States joined USSR in voting to postpone any debate.

In 1950, there was no Chinese in Tibet. Today Chinese are in majority even in small Tibetan towns. Communist Party General Secretary Jiang Zemin told President Clinton in 1998 that very few Chinese, who were in Tibet were there only to help the Tibetans and would of course all eventually return to China. A 17 point agreement was signed between Tibetans and Chinese Govt. PLA entered Tibet. As per agreement they were obliged to protect the lives and property of all religious bodies and people of Tibet. China vioated everyone of those promises. 90-95 percent of Tibetan temples were razed during cultural revolution.

Whatever may be the compulsion or illusion, our leaders of that time did a blunder mistake in not objecting this demon to settle in our neighbourhood and that permanently. Not only this one, they kept on surrendering before this cunning neighbour. Perhaps one blow was not enough for us to learn a lesson. Our Govt. declared easily that Tibet is an integral part of China. They advocated for permanent seat in UN Security Council for China, while US was interested to offer that privillege to a democratic India and not to a communist China. India helped China in becoming member of W.T.O., particularly when several strong countries were not in that favour. On the other hand, China left no occasion to stab India in its back. May it be a matter related to dispute between India & Pakistan about J & K or related to declaring a dreaded terrorist Mohd. Azhar as an international criminal, China not only opposed India but remained in forefront to humiliate it. China refused to recognise international boundary between India and Tibet and intrudes in our territory very often. It has developed a habit to keep us under threat unless we toe to it's line in world forums. China's tricks to get support by threat yielded desired result in past. Perhaps pursuing same modus operandi, it intrudes and claims ownership on our territory, taking benefit of uncertainty over border at several places.

India gave shelter to millions of Tibetan refugees. Instead of supporting their cause Indian Govt. suppressed their efforts in reclaiming their independence from China. During this span of more than 60 years, their population would have increased manyfold. Majority of them are born in India, may be peace-loving by nature. It is high time that we should claim their rights from China.

The mind keeps well when engaged in work. And yet japa, meditation, prayer also are specially needed. You must at least sit down once in the morning and again in the evening. That acts as a rudder to a boat. When one sits in meditation in the evening, one gets a chance to think of what one has done-good or bad-during the whole day. Next, one should compare the state of one’s mind on the previous day with the present. Unless you meditate in the mornings and evenings along with work, how can you know what you are actually doing?

Swami Amartyananda
Effective Life Management

सरस्वती विद्यापीठ शिवपुरी म.प्र. मे देश-विदेश मे कार्यरत अपने पूर्वछात्र भैया-बहनों का एक दिवसीय सम्मेलन

विद्या भारती राजस्थान क्षेत्र के शैक्षिक सम्मेलन में मंचासिन पदाधिकारी वृन्द

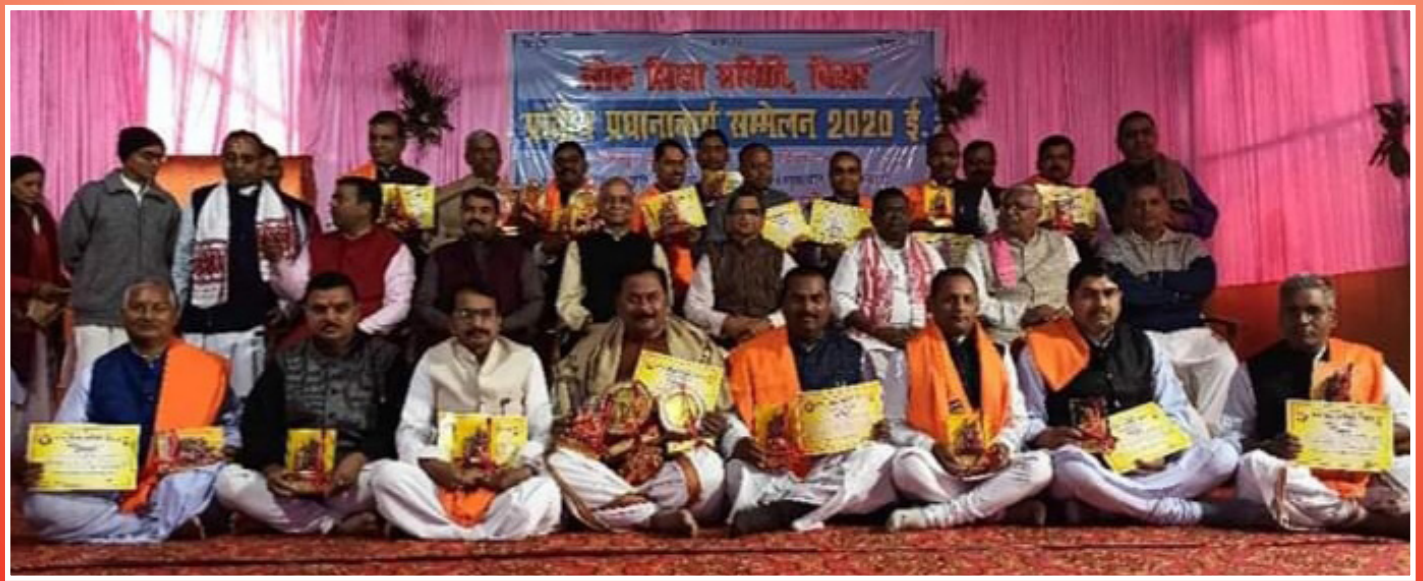

विद्या भारती उत्तरपूर्व क्षेत्र लोकशिक्षा समिति बिहार का प्रांतीय प्रधानाचार्य सम्मेलन, पूर्णिया में सम्मानित प्रधानाचार्य वृन्द

ISSN 2395 - 6267 d|y i|dkf'kr i"B 76 RNI NO. 37111/1981

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

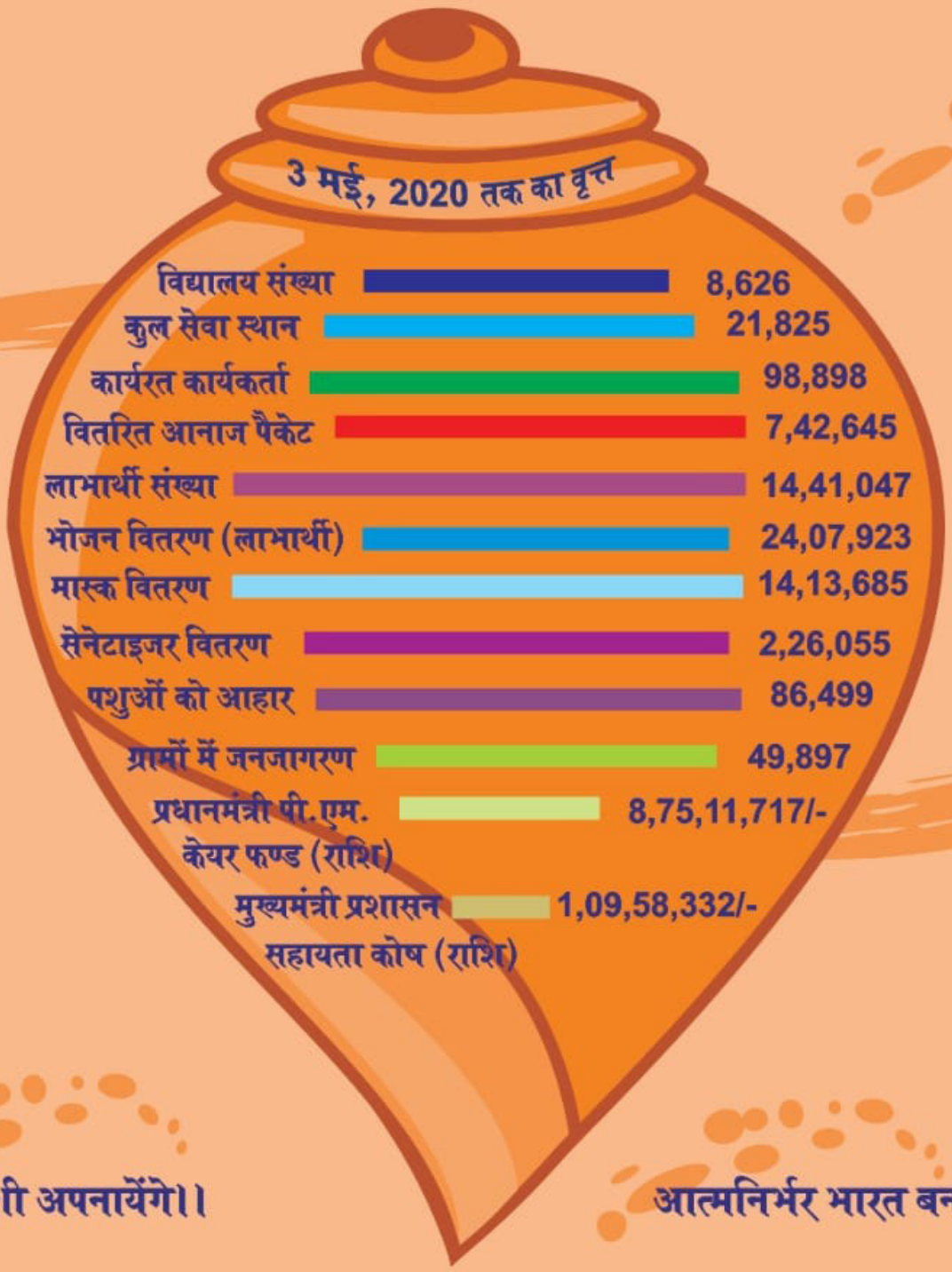

लॉक-डाउन के अन्तर्गत विद्यालयों एवं पूर्वछात्रों के माध्यम से किये गये सेवा कार्यों का वृत्त

i|dk'kd ,o| en|d % श्रीराम आरावकर के द्वारा विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान (स्वामी) के लिए जेनिसिस प्रिंटर, सी 74, ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली–110020 (प्रेस) से मुद्रित एवं प्रज्ञा सदन, जी. एल. टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065 (प्रकाशन स्थल) से प्रकाशित।
lEiknd–डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी